मोरिसाकी बुकशॉप
में और दिन
सातोशी यागीसावा
उपन्यास
एरिक ओज़ावा द्वारा
अनुवादित
निटोमैटो

Table of Contents

शीर्षक पेज
अंतर्वस्तु
अध्याय 1
अध्याय दो
अध्याय 3
अध्याय 4
अध्याय 5
अध्याय 6
अध्याय 7
अध्याय 8
अध्याय 9
अध्याय 10
अध्याय 11
अध्याय 12
अध्याय 13
अध्याय 14
अध्याय 15
अध्याय 16
अनुवादक का नोट
सातोशी यागिसावा द्वारा भी।
कॉपीराइट
प्रकाशक के बारे में

More Days at the Morisaki Bookshop

A Novel

Satoshi Yagisawa

Translated from the Japanese by Eric Ozawa

HARPER PERENNIAL

NEW YORK • LONDON • TORONTO • SYDNEY • NEW DELHI • AUCKLAND

अंतर्वस्तु

ढकना
शीर्षक पेज
अध्याय 1
अध्याय दो
अध्याय 3
अध्याय 4
अध्याय 5
अध्याय 6
अध्याय 7
अध्याय 8
अध्याय 9
अध्याय 10
अध्याय 11
अध्याय 12
अध्याय 13
अध्याय 14
अध्याय 15
अध्याय 16
अनुवादक का नोट
सातोशी यागिसावा द्वारा भी।
कॉपीराइट
प्रकाशक के बारे में

आज मेरी छुट्टी है और मैं उसी जानी-पहचानी सड़क पर चल रही हूँ। हवा में एक शांति का एहसास है, मानो अक्टूबर की इस गर्म दोपहर में सब कुछ शांत है। गले में एक पतला सा स्कार्फ ढीला-ढाला लपेटे हुए, मुझे हल्का-हल्का पसीना आने लगा है।

यहां तक कि सप्ताह के किसी भी दिन दोपहर के समय भी, सड़क पर मुझे जो लोग मिलते हैं वे इत्मीनान से चलते हैं और मैं भी। और कभी-कभी, हम रुक जाते हैं और चुपचाप रास्ते में मौजूद कई किताबों की दुकानों में से किसी एक में गायब हो जाते हैं, मानो हम उनमें समा गए हों।

टोक्यो का जिम्बोचो इलाका थोड़ा अनोखा है क्योंकि यहाँ की ज़्यादातर दुकानें किताबों की हैं। हर पुरानी किताबों की दुकान की अपनी एक खासियत है: कुछ में कला की किताबें, नाटकों की स्क्रिप्ट या दर्शनशास्त्र की किताबें मिलती हैं; वहीं कुछ में पुराने नक्शे और पारंपरिक जापानी जिल्द वाली किताबों जैसी दुर्लभ वस्तुएं मिलती हैं। कुल मिलाकर यहाँ एक सौ सत्तर से ज़्यादा दुकानें हैं। सड़क पर एक के बाद एक इतनी सारी किताबों की दुकानों को देखना वाकई अद्भुत है।

अगर आप सड़क पार करेंगे, तो आप दफ्तरों वाले इलाके में पहुँच जाएँगे, जो ऊँची-ऊँची इमारतों से घिरा हुआ है, लेकिन अपनी सीमाओं के भीतर यह इलाका शहर के बाकी हिस्सों से खुद को अलग-थलग रखने में कामयाब रहा है। सिर्फ यहीं आपको खूबसूरत इमारतों की कतारें दिखाई देंगी। ऐसा लगता है मानो यह इलाका किसी दूसरे युग में जी रहा हो, अपनी ही शांत दुनिया में डूबा हुआ। शायद इसीलिए जब आप यहाँ घूमते-फिरते, जहाँ भी आपका मन करे, अचानक ऊपर देखते हैं और आपको एहसास होता है कि कितना समय बीत चुका है।

मैं जिस जगह जा रहा हूँ, वह इस कोने पर है। अगर आप पुरानी किताबों की दुकानों की कतार वाली गली से आगे निकलकर थोड़ा आगे वाली गली में मुड़ेंगे, तो आपको वह जगह दिख जाएगी।

यह मोरिसाकी बुकशॉप नाम की एक पुरानी किताबों की दुकान है और यह आधुनिक जापानी साहित्य में विशेषज्ञता रखती है।

जैसे ही मैं मोड़ मुड़ा, मुझे किसी के द्वारा मेरा नाम पुकारने की तीव्र आवाज सुनाई दी।

"अरे, ताकाको, इधर आओ!"

मैंने उधर देखा तो एक छोटा कद का अधेड़ उम्र का आदमी मेरी तरफ देख रहा था और उत्साह से मुझे अपने पास आने का इशारा कर रहा था।

मैं जल्दी से उसके पास गई और फुसफुसाते हुए अपनी आपत्ति जताई। "क्या मैंने तुम्हें फोन पर नहीं कहा था कि तुम्हें मेरा इंतजार करने की जरूरत नहीं है? मैं कोई बच्ची नहीं हूँ।"

वह हमेशा ऐसा ही करता है, मुझसे बच्चे जैसा बर्ताव करता है जबकि मैं अट्ठाईस साल की महिला हूँ। जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, सड़क के बीचोंबीच किसी का इस तरह मेरा नाम पुकारना वाकई शर्मनाक है।

"अच्छा, तुम्हें यहाँ आने में बहुत देर लग रही थी। मुझे चिंता होने लगी कि कहीं तुम रास्ता न भटक गए हो।"

“इसीलिए मैंने तुमसे कहा था कि तुम्हें दुकान के सामने मेरा इंतज़ार करने की ज़रूरत नहीं है। मैं यहाँ दर्जनों बार आ चुका हूँ। भला मैं कैसे रास्ता भटक सकता हूँ?”

"हाँ, मुझे लगता है, लेकिन आप जानते हैं कि आप कभी-कभी थोड़े भुलक्कड़ हो सकते हैं।"

“तुम्हारा मतलब है कि तुम कर सकते हो, है ना? कभी आईने में खुद को ध्यान से देखो। तुम्हें एक बेहद भुलक्कड़ आदमी अपनी ओर घूरता हुआ दिखाई देगा।”

ये हैं सटोरू मोरिसाकी, मेरी मां की तरफ से मेरे चाचा और मोरिसाकी बुकशॉप के तीसरी पीढ़ी के मालिक। मूल दुकान, जिसे मेरे परदादा ने ताइशो काल में शुरू किया था, अब मौजूद नहीं है। वर्तमान दुकान लगभग चालीस साल पहले बनाई गई थी।

पहली नज़र में, मेरे चाचा सटोरू थोड़े रहस्यमय लग सकते हैं। वो हमेशा फटे-पुराने कपड़े पहने रहते हैं, पैरों में चप्पलें रखते हैं, और उनके बिखरे बाल देखकर लगता है कि उन्होंने कभी बाल कटवाए भी नहीं। और इन सबके अलावा, वो हमेशा अटपटी बातें करते रहते हैं, और बच्चों की तरह जो मन में आता है, बोल देते हैं। संक्षेप में, उन्हें समझना बहुत मुश्किल है।

फिर भी, इस विचित्र मोहल्ले में, उनका अनोखा व्यक्तित्व और असामान्य रूप-रंग अजीब तरह से उनके पक्ष में काम करता प्रतीत होता है: वे आश्चर्यजनक रूप से सभी को पसंद हैं। यहाँ आसपास ऐसा कोई व्यक्ति मिलना मुश्किल होगा जो मेरे चाचा को न जानता हो।

उनकी मोरिसाकी बुकशॉप एक पुराने ज़माने की दुकान है, जो दो मंज़िला लकड़ी की इमारत में है और समय के साथ बिल्कुल अछूती है, एक पुरानी किताबों की दुकान की छवि को पूरी तरह से दर्शाती है। अंदर काफ़ी तंग जगह है। वहाँ पाँच लोग समा सकते हैं, लेकिन बड़ी मुश्किल से। अलमारियों पर कभी भी पर्याप्त जगह नहीं होती; किताबें एक के ऊपर एक, दीवारों के किनारे और यहाँ तक कि कैश रजिस्टर के पीछे भी ढेर लगी रहती हैं। और पुरानी किताबों की दुकानों की खास, तेज़, सीलन भरी गंध हर जगह फैली रहती है। ज़्यादातर किताबें सस्ती हैं, जिनकी कीमत लगभग सौ से पाँच सौ येन के बीच है, लेकिन दुकान में मशहूर लेखकों के पहले संस्करण जैसी दुर्लभ चीज़ें भी मिलती हैं।

मेरे दादाजी की पीढ़ी के बाद से इस तरह की पुरानी किताबें खरीदने वालों की संख्या में काफी कमी आई है। मैंने सुना है कि उस समय बहुत मुश्किल दौर भी आया था। यह दुकान आज भी चल रही है, इसका श्रेय उन ग्राहकों को जाता है जो इसे पसंद करते हैं और वर्षों से लगातार आते रहे हैं।

मैं पहली बार इस दुकान पर तीन साल से भी अधिक समय पहले आया था।

उस समय मेरे चाचा ने मुझे दूसरी मंजिल पर रहने की अनुमति दी और मुझसे कहा कि मैं जब तक चाहूं तब तक रह सकता हूं।

मुझे आज भी वो दिन अच्छी तरह याद हैं जब मैं यहाँ रहती थी। उस समय मैं बहुत हताश थी, हालाँकि अब पीछे मुड़कर देखने पर वो कारण तुच्छ लगता है। शुरुआत में मैं अक्सर अपने चाचा पर गुस्सा निकालती थी और किसी दुखद नायिका की तरह अपने कमरे में बंद होकर अकेले रोती रहती थी। फिर भी उन्होंने धैर्यपूर्वक सब कुछ सहा और मुझे प्यार भरे शब्द और स्नेह दिया। समय बीतने के साथ, उन्होंने मुझे सिखाया कि पढ़ना कितना रोमांचक हो सकता है और जीवन में अपनी भावनाओं को छिपाना नहीं, बल्कि उनका सामना करना कितना महत्वपूर्ण है।

स्वाभाविक रूप से, मेरे चाचा ने ही मुझे जिम्बोचो से परिचित कराया था। पहले तो मैं सड़क पर एक के बाद एक किताबों की दुकानें देखकर भ्रमित हो गया था।

“महान लेखकों को भी यह जगह हमेशा से बहुत पसंद रही है,” मेरे चाचा ने कहा, मानो वे अपनी बड़ाई कर रहे हों। “यह दुनिया भर में किताबों की दुकानों का सबसे बेहतरीन इलाका है।” सच कहूँ तो, मुझे उनकी बात समझ नहीं आई। मुझे इसमें गर्व करने जैसी कोई बात नहीं दिखी।

लेकिन समय बीतने के साथ-साथ मुझे उसकी बात समझ में आने लगी।

जिम्बोचो आकर्षण और रोमांच से भरपूर है। दुनिया में इसके जैसा कोई दूसरा स्थान नहीं है।

मैं और मेरे चाचा दुकान के सामने अभी भी आपस में बहस कर रहे थे कि तभी मुझे अंदर से एक तेज़ आवाज़ सुनाई दी, “अरे, तुम दोनों क्या कर रहे हो?” मैंने अंदर झाँका तो देखा कि छोटे, स्टाइलिश बालों वाली एक महिला काउंटर पर बैठी हम दोनों को घूर रही थी, उसके चेहरे पर चिड़चिड़ाहट साफ झलक रही थी। वो मोमोको थी।

"बाहर यूं ही समय बर्बाद करना बंद करो और अंदर आ जाओ, प्लीज़?"

उसने अधीरता से हमें अंदर आने का इशारा किया। ऐसा लग रहा था कि उसे अकेले दुकान में हमारा इंतजार करना अच्छा नहीं लग रहा था।

मोमोको अंकल सटोरू की पत्नी हैं। आपको लगेगा कि उम्र और शक्ल-सूरत में वो मेरे अंकल से ज़्यादा अलग नहीं होंगी, लेकिन उनका सीधा-सादा और बेबाक स्वभाव उन्हें काफ़ी छोटा दिखाता है। मेरे अंकल उनके सामने कुछ भी नहीं हैं। जब भी वो आस-पास होती हैं, वो हमेशा एक लाड़ले कुत्ते की तरह सजग रहते हैं। उनका ये रूप तभी दिखता है जब वो मौजूद होती हैं।

दरअसल, कुछ दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों के कारण मोमोको लगभग पाँच वर्षों तक मेरे चाचा से अलग रही, लेकिन लगभग एक महीने पहले वह सुरक्षित घर लौट आई। तब से वह और मेरे चाचा मिलकर दुकान चला रहे हैं।

“तो, ताकाको, क्या हालचाल है?” मोमोको मुस्कुराते हुए पूछती है। उसका शरीर इतना सुडौल और सीधा है कि वह सिर्फ स्वेटर और लंबी स्कर्ट पहने भी बेहद खूबसूरत लगती है। मुझे नहीं लगता कि मैं कभी उसकी तरह किसी कमरे में अपनी मौजूदगी से रौनक बढ़ा सकूँगी, लेकिन काश मुझमें भी उसकी थोड़ी सी अदा होती।

सब ठीक है। शांति और सुकून है। काम भी बढ़िया चल रहा है। आप कैसे हैं?

"मैं बहुत बढ़िया हूँ," वह कहती है, और अपनी बाहों को मोड़कर अपने बाइसेप्स दिखाती है, जैसे कि वह पोपाय की नकल कर रही हो।

“यह सुनकर अच्छा लगा,” मैंने राहत की सांस लेते हुए कहा। कई साल पहले मोमोको एक गंभीर बीमारी से पीड़ित थी, और हम अभी भी उसकी सेहत पर नज़र रख रहे हैं। मेरे चाचा हमेशा मोमोको की सेहत को लेकर बहुत सतर्क रहते हैं, लेकिन लगता है कि उनकी लगातार चिंता उसे परेशान कर देती है।

मेरे पास कुछ स्वादिष्ट दाइफुकु मोची हैं। क्या हम कुछ खाएँ?

"ओह, शायद हमें ऐसा करना चाहिए।"

मेरे चाचा ने यह सुनिश्चित किया कि मोमोको पीछे चली गई है और फिर फुसफुसाते हुए मुझसे शिकायत की, "मोमोको के साथ दुकान में बहुत तंग जगह है, लेकिन लगता है ऐसा ही होता है। अकेले काम करना ज़्यादा आसान है।"

"लेकिन जब तुम सचमुच अकेले रह गए थे, तो क्या तुम्हें अकेलापन महसूस नहीं हुआ था?" मैं तो बस उसे चिढ़ाने की कोशिश कर रही थी, लेकिन वह उत्तेजित हो गया और एक छोटे बच्चे की तरह मुझसे बहस करने लगा।

“ये तो सरासर बकवास है! मतलब, जब वो काउंटर के पीछे वापस चली जाती है, तो मैं कहाँ जाऊँ? आजकल तो मैं किसी रखवाले कुत्ते की तरह प्रवेश द्वार के पास इधर-उधर चक्कर लगाता रहता हूँ।”

"क्या इसी वजह से आप आज सबसे आगे खड़े थे?"

“अंदाज़ा लगाओ।” वह इस दयनीय सच्चाई को बिना किसी भाव के स्वीकार करता है, फिर आगे झुकता है जैसे मेरे कान में कुछ फुसफुसाने वाला हो। “लेकिन मुझे तुम्हें इससे भी ज़्यादा ज़रूरी बातें बतानी हैं, ताकाको,” वह कहता है।

"कैसा?"

“पिछले दिनों मुझे नीलामी में कुछ बहुत अच्छी चीजें मिलीं। मैंने उन्हें अभी तक दुकान में बिक्री के लिए नहीं रखा है, लेकिन आपके लिए मैं एक अपवाद बना रहा हूं और आपको उन्हें थोड़ा देखने दूंगा।”

उसने भले ही अनिच्छा दिखाने की कोशिश की हो, पर मुझे पता है कि वो मुझे वो किताबें दिखाए बिना नहीं रह सकता। फिर भी, किताबों के प्रति मेरा इतना गहरा लगाव हो चुका है कि मैं उन्हें देखने के लिए बेताब हूँ। मुझे तो लगभग ऐसा लगता है जैसे किताबों के प्रति ये प्रेम खानदानी है। कभी-कभी मुझे लगता है कि शायद यही वजह है कि मैं छुट्टी के दिनों में भी अक्सर दुकान पर आती हूँ।

“मुझे दिखाओ!” मैं अनजाने में चिल्ला उठा। “मुझे उन्हें देखना ही होगा!”

“अरे, मैंने तुम दोनों के लिए चाय बनाई है।” मोमोको चायदानी हाथ में लिए हुए अचंभित होकर हमारी ओर देखती है।

“यह एक किताबों की दुकान है,” मेरे चाचा ने सीधे-सीधे कहा। “हम किताबें देखे बिना कैसे रह सकते हैं? है ना, ताकाको?”

“बिल्कुल,” मैं हंसते हुए सहमत हुआ।

मेरी चाची हमें गुस्से भरी नजरों से देखती हैं और बड़बड़ाती हैं, "तुम दोनों सबसे बुरे हो।"

यह मेरी प्यारी मोरिसाकी बुकशॉप है। जब से मैं यहाँ रहती हूँ, यह मेरे जीवन का एक अभिन्न अंग रही है।

अपनी सादगी में ही सही, यह एक ऐसी जगह है जिसके भीतर कई छोटी-छोटी कहानियाँ छिपी हैं। शायद यही वजह है कि मैं बार-बार यहाँ आता हूँ।

2

मोरिसाकी बुकशॉप खुद को आधुनिक जापानी साहित्य में विशेषज्ञता रखने वाली दुकान बताती है। दुकान में कुछ समकालीन उपन्यास तो हैं, लेकिन वे प्रवेश द्वार पर रखी सौ येन की ट्रॉली पर रखे हैं। दुकान के अंदर, मुख्य रूप से मेइजी काल से लेकर प्रारंभिक शोवा काल तक के उपन्यास ही मिलते हैं। (इसीलिए दुकान के अंदर इतनी सीलन और दुर्गंध फैली रहती है, लेकिन यह तो आम बात है।)

शायद इसका कारण यह है कि यह दुकान एक विशेष प्रकार की किताबों का कारोबार करती है, इसलिए यह उन ग्राहकों को आकर्षित करती है जो थोड़े सनकी होते हैं।

अब तो मुझे इनकी आदत हो गई है, लेकिन पहले तो ये मुझे चौंका देते थे। ऐसा नहीं है कि इनसे निपटना मुश्किल है। असल में, ज्यादातर तो ये बिल्कुल हानिरहित होते हैं। बस थोड़े से अजीब हैं, बस इतना ही। ये कभी-कभार आते हैं, मुश्किल से कुछ बोलते हैं, अपनी किताब की तलाश में मग्न रहते हैं। ये ग्राहक, जो ज्यादातर बुजुर्ग पुरुष होते हैं, हमेशा अकेले ही रहते हैं। इनमें कुछ ऐसा है कि इनके रोजमर्रा के जीवन की कल्पना करना नामुमकिन है—इतना कि अगर कोई मुझसे कहे कि ये हानिरहित भूत हैं, या किसी दूसरी दुनिया के प्राणी हैं, तो शायद मैं इस बात पर यकीन भी कर लूँ।

जब भी मैं दुकान पर जाता हूँ, तो मुझे अजीब सी चिंता सताने लगती है कि क्या वे अभी भी अंदर आने के लिए स्वस्थ हैं। मैं उनसे कभी बहुत करीब नहीं रहा, लेकिन फिर भी मैं उनके अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता हूँ। मुझे उनके लिए एक तरह की सहानुभूति महसूस होती है क्योंकि हम सभी एक ही दुकान को पसंद करते हैं। और

इन ग्राहकों में से अधिकांश की अधिक उम्र को देखते हुए, मुझे उनकी चिंता भी होती है।

इसलिए, अगर वे कभी-कभार उस समय दुकान पर आ जाते हैं जब मैं वहां मदद कर रहा होता हूं, तो उन्हें ठीक-ठाक देखकर मुझे मन ही मन राहत मिलती है।

जब मैं दूसरी मंज़िल पर रहता था और रोज़ दुकान पर काम करता था, तब मुझे सबसे ज़्यादा चिंता उस "कागज़ की थैली वाले आदमी" की होती थी। जैसा कि उसके नाम से पता चलता है, वह हमेशा दोनों हाथों में फटी हुई कागज़ की थैलियाँ लिए आता था। कभी-कभी वह किसी डिपार्टमेंट स्टोर की थैली होती थी, तो कभी-कभी किसी बड़ी किताबों की दुकान, जैसे सैनसेइडो, की थैली होती थी। हमारे पास आने से पहले वह ज़रूर कई दुकानों पर घूमता रहा होगा, क्योंकि अक्सर उसके आने पर थैली पहले से ही भरी होती थी। उसकी पतली-दुबली बाहों के लिए थैली काफ़ी भारी लगती थी। वह हमेशा भूरे रंग के स्वेटर के नीचे एक फॉर्मल शर्ट पहनता था।

अगर बस इतना ही होता, तो उसमें कुछ भी अजीब नहीं होता। समस्या तो उस चूहे जैसे रंग के स्वेटर की थी। वह सिर्फ़ फटा हुआ नहीं था, बल्कि उससे कहीं ज़्यादा फटा हुआ था, इतना कि उसे पहनना किसी चमत्कार से कम नहीं था। वैसे, उस बूढ़े आदमी में कुछ भी ऐसा नहीं था जो अस्वच्छ लगे। दरअसल, वह साफ़-सुथरा दिखता था, सिवाय उसके स्वेटर की अजीब हालत के, जो किसी पुरातात्विक स्थल से खोदा हुआ सा लगता था।

जब मैंने उसे पहली बार देखा तो मैं काफी हैरान रह गया। मैंने चुपके से उसे देखा जब वह चुपचाप अपनी किताबें चुन रहा था, और कई बार मेरा मन हुआ कि मैं चिल्लाकर कहूँ, "महोदय, आपको कपड़े खरीदने चाहिए, किताबें नहीं!" लेकिन उसने मानो इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया। उसने दस किताबें खरीदीं, उन्हें अपने कागज़ के थैले में भरा और बिना कुछ कहे दुकान से निकल गया।

उस दिन के बाद से, जब भी वह आता है, मैं उससे नज़रें नहीं हटा पाती। कुछ हफ़्तों में वह कई बार आता है, लेकिन कभी-कभी एक महीना बिना आए भी बीत जाता है। वह हर बार एक ही कपड़े पहनता है। हमेशा दोनों हाथों में किताबों से भरा अपना थैला पकड़े रहता है। अकेले मोरिसाकी बुकशॉप में ही, कभी-कभी वह दस हज़ार येन प्रति किताब की कीमत वाली किताबें खरीद लेता है। फिर भी उसका स्वेटर और भी ज़्यादा फटा हुआ होता जा रहा है। मैं यह सोचे बिना नहीं रह सकी कि आखिर यह बूढ़ा

आदमी कौन है। मुझमें उससे बात करने की हिम्मत नहीं हुई, इसलिए जब वह बाहर चला जाता था तो मैं हमेशा चुपचाप उसकी पीठ को देखती रह जाती थी।

मैंने एक बार अपने चाचा से उसके बारे में पूछने की कोशिश की। "वह इतनी सारी किताबें खरीद रहा है—क्या पता वह किसी दूसरे मोहल्ले में अपनी खुद की पुरानी किताबों की दुकान खोल ले?"

“नहीं। वह उन्हें खुद पढ़ने के लिए खरीद रहा है,” उसने निश्चितता से उत्तर दिया।

“सच में? मुझे लगता है कि आप अंतर बता सकते हैं।”

"इतना तो मैं बता सकता हूँ, चाहे मैं चाहूँ या न चाहूँ।"

मुझे लगता है कि ऐसा ही होता है। मैं ग्राहकों में फर्क करना मुश्किल से ही जानता था। लेकिन जब कोई नया ग्राहक दुकान में आता, तो मेरे चाचा एक नज़र में ही बता देते थे कि वे किताब खरीदने आए हैं या यूं ही टहलते-घूमते आ गए हैं। उनका कहना था कि उनका यह सहज ज्ञान वर्षों के अनुभव का नतीजा है।

“तो,” मैंने अपनी जिज्ञासा को हावी होने देते हुए कहा। “वह बूढ़ा आदमी क्या काम करता है? क्या आप उसे देखकर यह भी बता सकते हैं? ऐसा तो नहीं है कि वह अपना सारा पैसा किताबों पर खर्च कर देता है और नए कपड़े नहीं खरीद सकता, है ना?”

“अरे।” उन्होंने बच्चे को डांटने वाले लहजे में कहा। “तुम्हारा काम ग्राहकों के बारे में इतनी तांक-झांक करना नहीं है। किताबों की दुकान का मकसद जरूरतमंदों को किताबें बेचना होता है। लोगों के काम या जीवन के बारे में जानने की कोशिश करना ठीक नहीं है। अगर इन बुजुर्ग ग्राहकों को पता चलेगा कि हम उनकी जिंदगी में तांक-झांक कर रहे हैं, तो उन्हें अच्छा नहीं लगेगा।”

जब मैंने इस बारे में सोचा, तो मुझे लगा कि ग्राहकों की ज़रूरतों को पूरा करने वाले व्यवसाय के बारे में मेरे चाचा का नज़रिया बिल्कुल जायज़ था। हालाँकि वे अक्सर हल्के-फुल्के मज़ाक करते और खुद ही हँसते रहते थे, लेकिन इतने सालों तक पुरानी किताबों की दुकान चलाने के बाद, जब कुछ कहना ज़रूरी होता था, तो वे सीधे-सीधे कह देते थे। ऐसे पलों में वे वाकई बहुत अच्छे लगते थे।

खैर, यही कारण है कि पेपर बैग मैन की उत्पत्ति हमारे लिए एक रहस्य बनी हुई है। इन विलक्षण ग्राहकों के पास किताबें खोजने के अपने-अपने विशिष्ट कारण हैं। यह वाकई दिलचस्प है। लोगों को पुरानी किताबें खरीदने के लिए प्रेरित करने वाली परिस्थितियों की विविधता मुझे हमेशा प्रभावित करती है।

उदाहरण के तौर पर, उन लोगों को लीजिए जो किसी भी शैली, युग या क्षेत्र की परवाह किए बिना दुर्लभ पुस्तकों का संग्रह करने निकल पड़ते हैं। वे बस अनोखी किताबें जमा करते रहते हैं। जब एक जाने-माने संग्रहकर्ता दुकान में आए, तो वे हमारे पास मौजूद संग्रह से असंतुष्ट दिखे। दुकान से निकलते समय उन्होंने कुछ ऐसा कहा जिससे मैं दंग रह गया। "इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह कितनी उत्कृष्ट कृति है। अगर वह दुर्लभ नहीं है, तो मेरे लिए उसका कोई मूल्य नहीं है।"

और फिर आते हैं वो लोग जिन्हें हम दलाल कहते हैं। ये लोग कीमती किताबें बहुत कम कीमत पर खरीदते हैं और फिर उन्हें किसी दूसरे किताब की दुकान को बेचकर मुनाफा कमा लेते हैं। असल में, इनका धंधा किताबें खरीदना है। इन ग्राहकों के लिए किताब की गुणवत्ता मायने नहीं रखती। शायद वे उन्हें कभी पढ़ते भी नहीं। कुछ और लोग भी हैं, जिन्हें उपन्यासों में दिलचस्पी नहीं होती, बल्कि वे उन गुमनाम कलाकारों की कृतियों की खोज करते हैं जिनके चित्र किसी पाठ के साथ छपे होते हैं। इनमें से कुछ संग्राहक उन चित्रों को पाने के लिए मामूली सुरागों पर भी निर्भर रहते हैं। और फिर वो लोग भी हैं जो अपनी किताबों की अलमारी में पहली प्रति के अलावा कोई और किताब नहीं रखते। अगर उन्हें कोई किताब चाहिए भी, तो वे उसे तब तक नहीं खरीदते जब तक उन्हें उसकी पहली प्रति न मिल जाए।

सबसे अजीब तो वो बूढ़ा आदमी है जो उस दौरान सिर्फ एक बार ही दिखाई दिया जब मैं दुकान के ऊपर रहता था।

वह शाम ढलते ही अंदर आया और सीधे पीछे वाले शेल्फ पर चला गया जहाँ हम सबसे महंगी किताबें रखते हैं। जैसे ही वह शेल्फ से हर किताब निकालता, वह केवल उसके अंतिम पृष्ठ (कोलोफ़ोन) को देखता और फिर उसे वापस शेल्फ पर रख देता। उसने यही क्रिया बार-बार दोहराई। कभी-कभी उसका हाथ रुक जाता, और वह कोलोफ़ोन के किसी एक हिस्से को ध्यान से देखता, कुछ बार सिर हिलाता और फिर एक शैतानी मुस्कान के साथ मन ही मन हंसता। सच कहूँ तो, मुझे यह बहुत डरावना लगा।

जब बूढ़े आदमी ने अलमारी में रखी हर किताब का निरीक्षण कर लिया, तो वह अचानक बाहर चला गया। मैं अपने चाचा की ओर मुड़ा, जो मेरे बगल में बैठे थे, मैंने उनकी आस्तीन पकड़ी और उनसे पूछा कि आखिर वह आदमी क्या कर रहा है।

"ओह, वह लेखक की मुहर ढूंढ रहा है," उसने हिसाब-किताब की किताबों से नज़रें उठाए बिना कहा, मानो इसमें कुछ भी असामान्य न हो।

“वह सील इकट्ठा करने वाला है। वे दुकान पर बहुत कम आते हैं, लेकिन यहाँ आसपास कुछ काफी मशहूर सील हैं। मुझे यकीन है कि मैंने आपको नोसाकी के बारे में बताया था, है ना?”

“सील संग्राहक?” मैं इस अपरिचित शब्द से चकित था।

"हां, मुहरें कोलोफ़ोन पर अंकित हैं।"

मेरे चाचा ने शेल्फ से एक पुरानी सी दिखने वाली जिल्द वाली किताब निकाली और मुझे उसका आखिरी पन्ना दिखाया। यह ओसामु दाज़ाई की 'नो लॉन्गर ह्यूमन' थी। पृष्ठ के अंत में बाईं ओर लाल रंग से 'दाज़ाई' लिखा हुआ दिखाई दिया। मेरे चाचा ने समझाया कि जब किताबों की जिल्द आमतौर पर हाथ से बनाई जाती थी, तब लेखक प्रतियों की संख्या की पुष्टि करते थे और अपनी मुहर लगाकर छपाई को मंजूरी देते थे। उन्होंने बताया कि आम तौर पर उन पर सिर्फ लेखक का नाम ही लिखा होता था, लेकिन कुछ किताबों पर जटिल और सुंदर डिज़ाइन भी बने होते थे।

कहने का तात्पर्य यह है कि वह बूढ़ा व्यक्ति मुहरों के पीछे पड़ा था। मुझे इन मुहरों के अस्तित्व के बारे में तब तक पता नहीं था जब तक मेरे चाचा ने मुझे सब कुछ नहीं समझाया। लेकिन फिर भी, इसका क्या मतलब था? क्या वह इन सभी मुहरों को काटकर स्टाम्प की तरह एक एल्बम में चिपकाने वाला था ताकि हर रात वह उन्हें देखकर मुस्कुरा सके?

“हाँ, कुछ इसी तरह की बात है,” मेरे चाचा ने बेपरवाही से कहा। “खैर, मुझे लगता है कि उनमें से कुछ लोग उन्हें किताबों से काटकर निकालना पसंद नहीं करेंगे, इसलिए वे बस पूरी किताबें ही इकट्ठा करते हैं।”

"यह तो सरासर पागलपन है।"

इस दुनिया में ऐसे लोग भी हैं जिनका शौक खगोल विज्ञान है और जो ब्रह्मांड की विशालता को रोमांचित पाते हैं। वहीं दूसरी ओर, ऐसे लोग भी हैं जिनका शौक उन्हें इन नन्हे-मुन्ने सीलों को इकट्ठा करने के लिए हद से ज्यादा मेहनत करने पर मजबूर करता है। यह समझना थोड़ा मुश्किल है।

“अरे बाप रे, ताकाको। तुम शायद कुछ ज़्यादा ही परेशान हो रही हो,” मेरे चाचा ने आखिर में मुझे तिरछी नज़र से देखते हुए कहा। जब उन्होंने मेरे चेहरे पर उलझन भरा

भाव देखा, तो वे ज़ोर से हंस पड़े।
“अरे, मैं वापस आ गया।” और इस हंसमुख अभिवादन के साथ साबू प्रकट हुआ। उसने ज़ोर से दरवाज़ा बंद किया और कुछ ऐसा कहा जो मुझे पूरी तरह समझ नहीं आया। “वाह, आज मौसम कितना बढ़िया है! इसे देखकर मेरा मन कोसाकु ताकि पढ़ने का कर रहा है।” फिर वह काउंटर के सामने वाली कुर्सी पर ऐसे बैठ गया जैसे वह उसकी ही हो। मेरे चाचा, जिन्हें इसकी आदत थी, बोले, “मैं केतली चढ़ा देता हूँ,” और चाय बनाने लगे।

मोरिसाकी बुकशॉप के सभी नियमित ग्राहकों में से, साबू शायद सबसे नियमित ग्राहक थे। हालाँकि इसका यह मतलब नहीं था कि वे हमारी बिक्री में कोई खास योगदान दे रहे थे। बस इतना था कि वे बाकी सब लोगों से ज़्यादा आते थे। मानो नियमित रूप से किताबें देखने आते हों। कद में छोटे और मोटे, मिलनसार चेहरे वाले, बातूनी आदमी। मुझे उनकी सही उम्र तो नहीं पता थी, लेकिन मेरा अंदाज़ा है कि वे पचास के आस-पास होंगे। कानों के आसपास के हिस्से को छोड़कर, उनके सिर पर बाल बिल्कुल नहीं थे। वे कभी-कभी खुद भी इस बारे में मज़ाक करते थे।

“ओह, मोमोको आज कहाँ है?” उसने मेरे चाचा से पूछा, और उसे पूरी दुकान में ढूंढने लगा। ज़ाहिर है, मोमोको हमारे नियमित ग्राहकों में बेहद लोकप्रिय थी। वह इतनी अच्छी श्रोता और सीधी बात करने वाली थी कि मानो उसने उनका दिल जीत लिया हो। इसका नतीजा एक अजीब घटना के रूप में सामने आया: उसके पास आने वाले ग्राहकों की संख्या में अचानक वृद्धि हुई। साबू भी, ज़ाहिर है, उन कई लोगों में से एक है जिन पर उसका पूरा भरोसा है।

“अगर तुम उसे ढूंढ रहे हो, तो वो दूसरी जगह है,” मेरे चाचा ने दरवाजे की ओर इशारा करते हुए कहा। साबू तुरंत निराश हो गया।

“क्या? यह तो बहुत बुरा हुआ।”

मोमोको ने हाल ही में दुकान से दस कदम से भी कम दूरी पर स्थित छोटे से रेस्तरां में शाम के समय मदद करना शुरू किया है। मुख्य शेफ के अचानक नौकरी छोड़ने के बाद, मालिक ने मोमोको से संपर्क किया, जो न केवल एक अच्छी रसोइया थी, बल्कि ग्राहकों को संभालने में भी माहिर थी। मुझे नहीं पता यह सच है या नहीं, लेकिन मैंने सुना है कि रेस्तरां पहले से कहीं बेहतर चल रहा है। जब हमने कहा कि हमें चिंता है कि इस तरह की व्यस्त नौकरी उसके स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक हो सकती है,

तो उसने कहा, "मैं इसे संभाल सकती हूँ। यह मेरी मर्ज़ी है। आप और सटोरू बहुत ज़्यादा चिंता करते हैं।"

साबू मेरी तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहा था, इसलिए मेरे पास उसे नमस्ते कहने के अलावा कोई चारा नहीं था।

"अरे, ताकाको, तुम यहाँ हो।"

हालांकि मैं उसकी नज़र के ठीक बीचोंबीच थी, फिर भी ऐसा लग रहा था कि उसने अभी-अभी मुझे वहाँ देखा है। मोमोको के लौटने के बाद से उसका मेरे साथ बर्ताव खुलेआम खराब हो गया था। उससे पहले तो वह मुझे इतना पसंद करने लगा था कि यह बात थोड़ी चिंताजनक होती जा रही थी। वह तो यहाँ तक कह रहा था कि मुझे उसके बेटे से शादी करनी ही होगी।

मैंने कहा, "मैं आज मदद कर रहा हूँ।"

“मदद कर रहे हो? तुम्हारे जैसे नौजवान को दोपहर का समय यूं ही क्यों बर्बाद करना है? क्या तुम्हारे पास कोई असली नौकरी नहीं है?”

“ये तो बदतमीज़ी है! मेरे ऑफिस में छुट्टी लेना बहुत आसान है।”

जब मुझे बुरा लगा तो वह हंस पड़ा। साबू का स्वभाव ही ऐसा था। वह अच्छा था, लेकिन उसकी जुबान बहुत तीखी थी।

हालांकि, इस मोहल्ले में उनकी यह प्रतिष्ठा थी कि उन्हें हर बात की जानकारी रहती थी। उन्हें इस बात पर गर्व था। इसलिए जब भी वे दुकान पर आते, तो हमेशा सबसे पहले मेरे चाचा से दूसरे नियमित ग्राहकों के बारे में पूछते थे।

"आजकल ताकिगावा कैसा है?"

“वह हाल ही में नहीं आया है। पहले वह हर दो सप्ताह में एक बार आता था।”

मुझे उम्मीद है कि वह बीमार नहीं है।

"अगर वह कभी आ जाए तो राहत मिलेगी।"

“प्रोफेसर कुरुसु के बारे में क्या ख्याल है? उस आदमी ने अपने शोध बजट से अपनी किताबों के भत्ते में कटौती करने का तरीका ढूंढ लिया है। बड़ी चालाकी है।”

“प्रोफेसर दो दिन पहले यहां आए थे।”

“तो यामामोटो के बारे में क्या कहेंगे? उस दिन वह अपने पुस्तक संग्रह में पचास हजार किताबें होने पर इतना गर्व कर रहा था कि मुझे थोड़ी झुंझलाहट हुई। वह निश्चित रूप से शेखी बघार रहा था।”

और इसी तरह... अंततः बातचीत इस बिंदु पर आकर समाप्त हुई:

“सब लोग बूढ़े हो रहे हैं, है ना? अगर इस दुकान को कुछ नए ग्राहक नहीं मिले तो इसका तो बुरा हाल हो जाएगा।”

"आप यह कहा।"

फिर साबू और मेरे चाचा एक साथ हंसते थे, मानो उन्होंने कोई मजेदार बात कह दी हो। वे दोनों हर बार यही करते थे। मुझे यह अजीब लगता था कि वे इससे कभी नहीं थकते थे।

मुझे लंबे समय से साबू पर संदेह था।

मतलब, साबू आखिर कौन था?

उनके पास हमेशा खाली समय रहता था। मैंने उन्हें कभी व्यस्त नहीं देखा था। और भले ही उनकी खरीदी किताबें महंगी न हों, लेकिन वे काफी लंबे समय से किताबें खरीद रहे थे। अगर उनका घर बहुत बड़ा न हो, तो आखिर वे इतनी सारी किताबें कहाँ रखते होंगे? उनकी खूबसूरत पत्नी का होना, जो हमेशा किमोनो में अच्छी लगती थीं, एक और रहस्य था।

जिससे स्वाभाविक रूप से एक और सवाल खड़ा हो गया। साबू क्या काम करता था?

जितना ज्यादा मैंने इसके बारे में सोचा, उतना ही मुझे लगने लगा कि साबू ही सबसे रहस्यमय किरदार है।

दुकान पर साबू के साथ अब ग्राहक जैसा व्यवहार नहीं किया जाता था। अगर मैं इस बारे में अपने चाचा से पूछने की कोशिश करता, तो शायद उन्हें बुरा नहीं लगता।

तो, जब वे दोनों अपनी चाय की चुस्कियां लेते हुए इधर-उधर की बातें कर रहे थे, तभी मैंने बीच में दखल दिया।

“साबु, क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूँ?”

"अचानक इतने विनम्र क्यों हो गए?"

“आप काम क्या करते हैं? आप लोगों के बारे में बहुत बातें करते हैं जो अपना दिन यूं ही बेकार में बिता देते हैं, लेकिन क्या आप खुद उनमें सबसे आलसी नहीं हैं?”

ऐसा लग रहा था मानो साबू मेरे इस सवाल को पूछने का ही इंतजार कर रहा था।

उसने धीरे से अपने होंठों के कोने ऊपर उठाए और एक रहस्यमयी उपन्यास के जासूस की तरह मेरी तरफ देखकर मुस्कुराया। यह बेहद परेशान करने वाला था।

"तुम जानना चाहते हो?" उसने मेरे सामने वाली कुर्सी पर आगे झुकते हुए कहा, और अपना चेहरा मेरे चेहरे के करीब ले आया।

"मैं करता हूं।"

हालांकि मुझे इस विषय को उठाने पर पहले ही पछतावा हो रहा था, फिर भी मैंने उसकी इच्छा के अनुसार सिर हिला दिया। साबू के साथ बातचीत अक्सर ऐसी बेहद परेशान करने वाली स्थितियों को जन्म देती थी।

"आप क्यों जानना चाहते हैं?"

"सच कहूं तो, मुझे इसकी परवाह नहीं है।"

"तुम मुझे इस तरह से अपने जाल में नहीं फंसा पाओगे।"

अरे, बस करो। ठीक है, मुझे जानना ही है। मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता। अगर तुम मुझे नहीं बताओगे, तो मैं आज रात सो नहीं पाऊंगा। लो, संतुष्ट हो गए?

"वास्तव में?"

“ज़रूर। मैं सचमुच जानना चाहता हूँ। आप रोज़ी-रोटी के लिए क्या करते हैं?”

मैं बार-बार पूछने से थक रहा था, तभी साबू ने संतुष्टि भरी मुस्कान के साथ सिर हिलाया, मेरे करीब आया और फुसफुसाते हुए बोला, "मैं... नहीं... बता रहा।"

मैं वहाँ एक सुनहरी मछली की तरह मुँह खोल-बंद करता खड़ा रहा। जब साबू ने मेरी प्रतिक्रिया देखी, तो वह हँसते-हँसते लोटपोट हो गया, म्हाहाहाहा। "रुको..." वह सचमुच एक चिढ़ाने वाला बूढ़ा आदमी था। वह पूरी तरह से मेरा मज़ाक उड़ा रहा था।

नहीं, यह बहुत ही उत्तम था। एक उत्कृष्ट कृति।

"अरे, अंकल सटोरू को तो पता ही होगा, है ना?"

“अह, उम, मैं करता हूँ, ज़रूर...”

“अरे, सटोरू! तुम उसे मत बताना!” साबू ने घबराते हुए अपना सिर अगल-बगल हिलाया और मेरे चाचा को मुझे न बताने का आदेश देने की कोशिश की। “ताकाको को बताने का अभी बहुत जल्दी है।”

"ओह, मेरी गलती।"

"तुम किस बारे में बात कर रहे हो?"

“जिस पुरुष में थोड़ा रहस्य छिपा होता है, वह अधिक आकर्षक लगता है, है ना? इसीलिए मैं आपको नहीं बताऊंगी। आपकी जिज्ञासा बढ़ती जाएगी, जब तक कि वह जुनून न बन जाए, और अंत में आप मेरे बारे में सपने देखने लगेंगे।”

"बिल्कुल नहीं। मेरे लिए इसका अब कोई मतलब नहीं रह गया है।"

"कितनी जिद्दी महिला है!"

“नहीं, मुझे बिल्कुल परवाह नहीं है। मैं तुमसे फिर कभी नहीं पूछूंगा,” मैंने गुस्से से कहा।

“अच्छा, मुझे लगता है अब मुझे जाना चाहिए। ताकाको, तुम्हें चिढ़ाने से मेरा मन भर गया,” साबू ने कहा। फिर उसने अपनी बची हुई चाय पी और दुकान से बाहर निकल गया, जाते हुए वह मन ही मन हंस रहा था।

"हे भगवान, वो आदमी!" मैंने अचंभित होकर कहा।

मेरे चाचा भी सहमत दिखे। "खैर, वह एक अजीब आदमी है।"

यह दुकान वाकई में एक के बाद एक अजीबोगरीब लोगों को आकर्षित करती है।

3

शाम ढलते ही मेरे चाचा अचानक बेचैन होने लगे। “रॉय कहाँ है?” वे चिल्लाए, उनकी बेतहाशा तेज़ आवाज़ हमारी छोटी सी दुकान में गूँज उठी। “जब से मैं डिलीवरी से लौटा हूँ, तब से वो मुझे मिल ही नहीं रहा!”

रजिस्टर पर काम करते हुए किताब पढ़ने का मेरा सुकून भरा पल अब बर्बाद हो गया। "मुझे कैसे पता चलेगा कि वह कहाँ है?" मैंने उदास होकर कहा।

मेरे चाचा के लिए, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि कोई पढ़ने की कोशिश कर रहा है या नहीं, उन्हें उनसे बातचीत शुरू करने में कोई परेशानी नहीं होती थी। उन्हें अकेला छोड़ने का विचार तो उनके मन में कभी आया ही नहीं।

किताबों की दुकान पर समय बिताना हमेशा ही मज़ेदार होता था, बस अफ़सोस की बात है कि मेरे चाचा ने इस तरह शोर मचाकर सब कुछ बिगाड़ दिया। जब मैं यहाँ रहता था, तब मेरे चाचा अपनी कमर के इलाज के लिए अस्पताल जाते थे, इसलिए दुकान पर हमारा मिलना-जुलना बहुत कम होता था। लेकिन अब हम लगभग हमेशा साथ ही रहते थे। इसका मतलब था कि मुझे उनसे लगातार बात करनी पड़ती थी। अपने ही दुकान में चाचा को दखलंदाज़ी करने वाला कहना शायद थोड़ा कठोर लगे, लेकिन वो ऐसे इंसान हैं जो छोटी-छोटी बातों पर भड़क जाते हैं, इसलिए ये चिड़चिड़ेपन भरे outbursts दिन में कम से कम एक बार तो होते ही थे।

“जब तक मैं बाहर नहीं गई, रॉय पूरे दिन यहीं था!” मेरे चाचा दुकान में इधर-उधर घूमते हुए शोर मचा रहे थे, फिर उन्होंने मुझे काउंटर के पीछे वाली कुर्सी से खदेड़ दिया जहाँ मैं बैठी थी और बेचैनी से इधर-उधर ढूंढने लगे।

मैंने तुमसे कहा था कि मुझे नहीं पता। तुमने उसे कहीं छोड़ दिया होगा।

“रॉय मेरे लिए इस समय मेरी जान से भी ज्यादा कीमती है। मैं कभी ऐसा काम नहीं करूंगा।” मेरे चाचा अभी भी बड़बड़ा रहे थे कि अचानक चिल्लाए और दूसरी मंजिल की ओर भाग गए।

“वो मोमोको!”

कुछ देर बाद, मेरे चाचा भूरे रंग के तकिये को सीने से चिपकाए हुए सीढ़ियों से नीचे उतरे। मुझे अपने जानने वाले किसी और वयस्क के बारे में नहीं पता जो एक तकिये को लेकर इतना हंगामा करे।

हाल ही में मेरे चाचा को न केवल पीठ दर्द हो रहा था, बल्कि उन्हें बवासीर भी हो गया था, जिसके कारण उनके लिए कुर्सी पर लंबे समय तक बैठना "अत्यंत कष्टदायक" हो गया था।

फिर भी, पुरानी किताबों की दुकान चलाने का मतलब है कि आपको दिन का ज़्यादातर हिस्सा कुर्सी पर बैठकर ग्राहकों का इंतज़ार करते हुए बिताना पड़ता है। इस हालत में उनके लिए अपना काम करना नामुमकिन था। उनकी इस मुश्किल से उन्हें बचाने वाली चीज़ थी: बीच में छेद वाला एक तकिया, जिसे डोनट पिलो भी कहते हैं। यह तकिया दर्द कम करने में इतना कारगर था कि मेरे चाचा को इस पर पूरा भरोसा था। उन्होंने कहा कि वे इसे सिर्फ़ तकिया नहीं कह सकते। ऐसा कहना बेरहमी होगी। और क्योंकि यह उनके बवासीर के लिए था, इसलिए उन्होंने इसे रॉय कहना शुरू कर दिया। वे मज़ाक नहीं कर रहे थे। नहीं, वे पूरी तरह से, बिल्कुल, सौ प्रतिशत गंभीर थे।

“ओह माय गॉड।” मेरे चाचा ने रॉय को कुर्सी पर बिठाया और फिर खुद भी बड़ी सावधानी से बैठ गए, जैसे किसी एक्शन फिल्म में बम निरोधक दस्ता बैठता है। लेकिन फिर भी वे बड़बड़ाते रहे और मोमोको को कोसते रहे। दरअसल, जब मेरे चाचा डिलीवरी करने बाहर गए थे, तब मोमोको रॉय को बरामदे में सुखाने के लिए छोड़कर छोटे से रेस्टोरेंट में मदद करने चली गई थी। इसीलिए मेरे चाचा अब उस पर बहुत गुस्सा थे।

“अच्छा हुआ कि आपको मिल गया, है ना?” मैंने पूछना ज़रूरी समझा। खतरे से बाल-बाल बचने के बाद मेरे चाचा गहरी साँस ले रहे थे।

"बुढ़ापा आना मुश्किल होता है। तरह-तरह की छोटी-मोटी बीमारियां सामने आने लगती हैं।"

“बूढ़े आदमी की तरह बात करना बंद करो।”

“मैं एक बूढ़ा आदमी हूँ,” मेरे चाचा ने उदास चेहरे के साथ कहा।

“अंकल, आप अभी भी चालीस साल के हैं,” मैंने झुंझलाते हुए कहा। मैं चाहता था कि वे हमेशा स्वस्थ रहें और बवासीर की इस समस्या को अपने ऊपर हावी न होने दें। “आप अभी भी जवान हैं। आपके पास समय है। बूढ़े लोग आपसे ज़्यादा उम्र के होते हैं।”

“ये बवासीर तो बिल्कुल बेकार है।” बवासीर का दर्द सिर्फ वही लोग समझ सकते हैं जिन्हें यह बीमारी होती है। मेरे चाचा ने ये शब्द ऐसे कहे जैसे कोई कहावत सुना रहे हों। मुझे यकीन है कि यह बहुत दर्दनाक रहा होगा। किसी भी तरह की बवासीर में काफी दर्द होता है। लेकिन मेरे चाचा की बात को मजाक के अलावा कुछ और समझना नामुमकिन था। “अरे हाँ, याद आया। क्या मैं आपके लिए एक तैयार कर दूँ?”

“मैं ठीक हूँ, धन्यवाद। मुझे अभी बवासीर नहीं है,” मैंने रूखेपन से जवाब दिया। मैं उससे थोड़ा ऊब चुकी थी, और मैंने उस पर ध्यान न देने का फैसला किया। आखिर वह मेरे लिए बवासीर क्यों तैयार कर रहा था? मुझे बिलकुल भी समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या सोच रहा है। क्या वह उसका नाम रॉय जूनियर रखने की योजना बना रहा था? यह मेरे चाचा की इकलौती अजीब सनक या जुनून नहीं थी। उनकी और भी बहुत सी सनकें थीं। उनमें से हर एक परेशान करने वाली थी। उदाहरण के लिए, चालीस की उम्र पार करने के बाद, उन्होंने ज़िद करना शुरू कर दिया कि जब भी वे घर पर करी खाएँ, तो वह केवल वर्मोंट करी ब्रांड की ही होनी चाहिए, और वह भी केवल “हल्के” स्वाद वाली। जब मोमोको ने गलती से “मध्यम तीखा” वाला खरीद लिया, तो वह पूरे दिन मुंह फुलाए उदास बैठे रहे। मोमोको के अनुसार, वह इतना चिढ़ाने लगा था कि वह उसे एक ज़ोरदार लात मारना चाहती थी। मैं अच्छी तरह समझ सकती थी कि वह कैसा महसूस कर रही थी।

खैर, हमें रॉय मिल गया था, इसलिए मैंने सोचा कि मेरे चाचा थोड़ा शांत हो जाएंगे। मैंने एक गहरी सांस ली और अपनी किताब की दुनिया में वापस जाने की कोशिश की।

लेकिन जैसे ही यह विचार मेरे मन में आया, मैंने अपने चाचा के चेहरे पर एक मासूम सी मुस्कान देखी और वे अपनी कुर्सी सटाकर मेरे बिल्कुल बगल में आ गए। हमेशा की तरह, वे अपनी नाक घुसाने और मुझे टोकने से खुद को रोक नहीं पाए।

"तो, ताकाको।"

मेंने कुछ नहीं कहा।

आप क्या पढ़ रहे हैं?

“क्या? अरे, इससे क्या फर्क पड़ता है?” लेकिन चाहे मैंने उसे नजरअंदाज करने की कोशिश की हो या गुस्सा करने की, उस पर इसका कोई असर नहीं हुआ।

"अरे, क्या वो सकुनोसुके ओडा हैं?"

उसने चुपके से मेरे हाथ में मौजूद 'स्वीट बीन्स फॉर टू!' की प्रति पर एक नजर डाली, सिर हिलाया और मुझे एक समझदारी भरी नजर से देखा।

“आपको किताब पसंद आई?”

“हाँ, पढ़ लिया। दरअसल, मैं इसे दूसरी बार पढ़ रहा हूँ। लीजिए। अब आप संतुष्ट हैं? मैं पढ़ रहा हूँ, कृपया मुझे परेशान न करें।”

लेकिन स्वाभाविक रूप से, मेरे चाचा ने सुनने का कोई प्रयास नहीं किया।

अब एक और लेखक का दुखद अंत हो गया है।

मेरे चाचा की आँखें सिकुड़ गईं, मानो वे दूर कहीं टकटकी लगाए देख रहे हों, और उन्होंने गंभीर स्वर में बोलना जारी रखा। “आह, ताकाको, तुम्हें भी साकुनोसुके ओडा पसंद हैं... लेकिन मुझे यकीन है कि तुम उनके जीवन के बारे में अभी तक कुछ नहीं जानतीं। ये तो बहुत दुख की बात है।”

इस समय तक बहुत देर हो चुकी थी। मैं समझ सकता था कि वह मुझे बताने के लिए कितना उत्सुक था। मुझे पता था कि जब तक मैं पूरी कहानी नहीं सुन लेता, वह मुझे जाने नहीं देगा। मेरे चाचा साकुनोसुके ओडा के बारे में असाधारण रूप से बहुत कुछ जानते थे—उनके पूरे जीवन के बारे में, न केवल उनकी किताबों के बारे में। जब उन्हें कोई लेखक पसंद आता था, तो उन्हें उनकी आत्मकथाएँ, संस्मरण, जीवनियाँ, पत्रों का संग्रह आदि पढ़ने से बढ़कर कुछ और नहीं लगता था। इसका उनके पुराने किताबों की दुकान चलाने के व्यवसाय से कोई लेना-देना नहीं था। वह यह सब केवल अपनी रुचि को संतुष्ट करने के लिए करते थे। किताबों के बारे में उन्हें जो एक बात सबसे ज्यादा पसंद थी, वह यह थी कि किताबें उन्हें बता सकती थीं कि लेखकों ने किस

तरह का जीवन जिया, वे कैसे रहते थे, कैसे प्यार करते थे और कैसे इस दुनिया से विदा होते थे।

मुझे तो उसमें कुछ अद्भुत सा लगा। हालांकि, मेरे चाचा को लोगों को ये सब बातें इस तरह सुनाना बहुत पसंद था मानो उन्होंने खुद अपनी आँखों से ये सब देखा हो। इसी तरह मुझे कई लेखकों के जीवन के बारे में सुनने को मिला, जैसे ओसामु दाज़ाई, ताकेहिको फुकुनागा, हारुओ सातो। बेशक, इतिहास में दर्ज हो चुके लेखकों का जीवन वाकई दिलचस्प हो सकता है। लेकिन इसके लिए सही समय होना चाहिए। कभी-कभी मेरा मन ये सब सुनने का नहीं करता। लेकिन मेरे चाचा को इस बात की परवाह नहीं होती कि समय सही है या नहीं; एक बार शुरू हो जाने पर, उनकी आँखों में चश्मे के पीछे फिर से चमक आ जाती है, और वो तब तक बोलते रहते हैं जब तक उनका मन भर न जाए।

मैंने हार मान ली और एक गहरी आह भरकर किताब बंद कर दी (जिसका उस पर कोई असर नहीं हुआ)। पढ़ने का मेरा समय बर्बाद हो गया था। अब क्या कर सकते हैं? इस स्थिति में, मैं केवल वही सुन सकती थी जो वह मुझे बताना चाहता था।

“क्या साकुनोसुके का अंत दुखद था?”

“बिल्कुल सही,” उन्होंने कहा।

"उनकी शैली से आपको किसी न किसी रूप में इसका अंदाजा लग जाता है।"

“उनका बहुत सारा काम उनके अनुभवों पर आधारित है।” उन्होंने गहरी सहमति में सिर हिलाया, अब वे पूरी तरह संतुष्ट थे कि मैं उनकी बातों में रुचि दिखा रहा हूँ। फिर मेरे चाचा ने बड़े उत्साह से साकुनोसुके ओडा के जीवन की घटनाओं का वर्णन करना शुरू किया।

मेरे चाचा के अनुसार, सकुनोसुके का जीवन कठिनाइयों से भरा रहा। छात्र जीवन में ही उन्हें तपेदिक हो गया था, और उनकी मुसीबतें इतनी बढ़ती गईं कि उन्हें कॉलेज छोड़ना पड़ा। उन्हें काज़ुए नाम की एक महिला से बेइंतहा प्यार हो गया, जो एक कैफे में काम करती थी, और उन्होंने उपन्यासकार बनने का सपना देखा, लेकिन उनके काम को पहचान नहीं मिली, और लंबे समय तक उन्होंने गरीबी में जीवन बिताया, जिसमें रोज़मर्रा की तमाम कठिनाइयाँ शामिल थीं। लेकिन उनका कष्ट व्यर्थ नहीं गया; उनकी किताबों 'वल्गैरिटी' और 'स्वीट बीन्स फॉर टू!' ने आखिरकार उन्हें वह पहचान दिलाई जिसकी उन्हें लंबे समय से तलाश थी। उनका लेखन करियर फल-फूल रहा था,

लेकिन कुछ वर्षों बाद, उनकी प्रिय पत्नी, काज़ुए, बीमार पड़ गईं और उनका देहांत हो गया।

उनके जीवन में इतनी उथल-पुथल थी कि वे किसी टीवी शो के मुख्य किरदार बन सकते थे।

काज़ुए को खोने के बाद, साकुनोसुके अक्सर दूसरों की परवाह किए बिना फूट-फूट कर रो पड़ते थे। काज़ुए वह पहली इंसान थीं जिनसे साकुनोसुके ने दिल से प्यार किया था और जिन्होंने भी बदले में उनसे प्यार किया था। काज़ुए के प्यार के बिना, साकुनोसुके का जीवन बिखर गया। उनकी टीबी की बीमारी और भी गंभीर होती चली गई। उन्हें शायद आभास हो गया था कि मृत्यु निकट है। क्योंकि जब काज़ुए अपनी मृत्युशय्या पर थीं, तो उन्होंने रोते हुए उनसे कहा था कि कुछ वर्षों में उनका भी निधन हो जाएगा। अपने बचे हुए समय में, उन्होंने शराब और कॉफी में, साथ ही अन्य महिलाओं की बाहों में सुकून ढूंढा। उपन्यास लिखते समय उन्हें खून की उल्टी होती थी।

मेरे चाचा ने बिना रुके पूरी कहानी सुनाई, मानो उन्होंने पूरा भाषण रट लिया हो।

आप कह सकते हैं कि उनमें यह प्रतिभा थी। जैसे-जैसे मैं सुनता गया, मैं कहानी में पूरी तरह खो गया, अपने चाचा के हर शब्द पर ध्यान दे रहा था।

अपने जीवन के अंतिम वर्षों में, साकुनोसुके शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से इतने कमजोर हो गए थे कि उपन्यास लिखने का काम जारी रखने के लिए उन्होंने मेथम्फेटामाइन का सेवन शुरू कर दिया था। उनकी बीमारी इतनी बढ़ गई थी कि इनके बिना वे कलम भी नहीं पकड़ पाते थे। उनका शरीर जवाब दे चुका था।

"और मेथम्फेटामाइन एक प्रकार का उत्तेजक पदार्थ है, है ना?"

"अब इसकी कल्पना करना मुश्किल है, लेकिन उस समय इन्हें दवा की दुकान से खरीदना आसान था। वह इन्हें इंजेक्ट करता और बिना सोए कई दिनों तक अपने उपन्यास पर काम करता रहता।"

“अरे बाप रे!” अब इस बात की कल्पना करना वाकई मुश्किल है। मैंने सोचा, समय कितना भी बदल गया हो, यह कितनी दिल दहला देने वाली कहानी है!

“और वह अकेला नहीं है। ऐसे कई लेखक थे जो नियमित रूप से मेथम्फेटामाइन का सेवन करते थे। उदाहरण के लिए, यह काफी हद तक ज्ञात था कि एंगो साकागुची मेथ का आदी था।”

“एक मेथ एडिक्ट?” ये शब्द सुनने में कुछ हद तक प्यारे लग रहे थे, लेकिन असल में इसका मतलब था—

"कोई व्यक्ति मेथम्फेटामाइन का आदी है।"

मैंने खुद को फिर से "याइक्स" कहते हुए सुना।

“यह एक भयानक कहानी है,” उन्होंने दुख से सिर हिलाते हुए कहा। “लेकिन काज़ुए हमेशा उनके दिल में बसी रहीं। उनकी उत्कृष्ट रचनाओं में से एक कहानी एक ऐसे व्यक्ति की है, जो अपनी पत्नी की मृत्यु से हताश होकर अपनी कंपनी से पैसे निकालता है और रेसट्रैक पर नंबर एक गेट पर खड़े किसी भी घोड़े पर पागलों की तरह दांव लगाता है। वह ऐसा सिर्फ इसलिए करता है क्योंकि उसकी मृत पत्नी काज़ुए का नाम ‘एक’ अक्षर से शुरू होता है। हम निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि साकुनोसुके ने कहानी लिखते समय क्या सोचा होगा, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह काज़ुए के प्रति उनकी गहरी भावनाओं से जुड़ा है, क्योंकि आखिरकार, काज़ुए का नाम भी उसी अक्षर से शुरू होता है।”

“हाँ... यह निर्विवाद प्रतीत होता है।”

मुझे इस तरह की कहानियों से बहुत लगाव है। जो कुछ हुआ होगा, उसकी कल्पना मात्र से ही मैं उदास हो गया।

“नशे की लत में डूबे रहने के बावजूद, खून की उल्टी होने के बावजूद भी, वे उपन्यास लिखते रहे। और जब उन्हें फेफड़ों में गंभीर रक्तस्राव हुआ और अस्पताल ले जाया गया, तो वे हिंसक हो गए और लिखने की ज़रूरत का हवाला देते हुए रिहा होने की मांग करने लगे। लेकिन बाद में, जिस सराय में वे रह रहे थे, वहीं वे गिर पड़े और इस बार वे बच नहीं पाए। 1947 में महज तैंतीस वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।”

“तैंतीस? अगर वो स्वस्थ होते, तो कितनी ही किताबें लिख सकते थे,” मैंने कहा, मन में एक गहरे दुख का भाव उमड़ रहा था। “मुझे आश्चर्य होता है कि अगर वो और अधिक जीवित रहते तो क्या-क्या लिखते।”

“लेकिन आप यह भी कह सकते हैं कि वे जो उपन्यास लिख पाए, वे इसलिए लिख पाए क्योंकि उनका जीवनकाल बहुत कम था, और मृत्यु का विचार उनके मन में हमेशा बना रहता था, जैसे-जैसे वे अपने जीवन के शेष भाग को व्यतीत करते रहे। उनमें वह अद्भुत दृढ़ता थी। ज़रा सोचिए, ऐसे कई लेखक हैं जिनका जीवनकाल छोटा

रहा। मुझे लगता है कि वे इतनी अद्भुत पुस्तकें इसलिए लिख पाए क्योंकि उनका जीवन इतना छोटा था। साकुनोसुके ओडा ने ज़्यादा पुस्तकें नहीं लिखीं, लेकिन वे कुछ बेहतरीन लघु कथाएँ छोड़ गए। यह अच्छा था या बुरा, हम कह नहीं सकते। इसका एकमात्र तरीका है कि स्वर्ग में साकुनोसुके से पूछ लें।" ये शब्द कहते हुए मेरे चाचा काफी भावुक लग रहे थे, उनका नितंब डोनट के आकार के तकिये पर टिका हुआ था।

"क्या सच में?" मैंने धीरे से कहा। मैंने शेल्फ पर सजी किताबों की जिल्दों पर नज़र डाली। "ज़रा सोचो, यहाँ रखी किताबों के ज़्यादातर लेखक अब इस दुनिया में नहीं हैं। ये थोड़ा अजीब है, है ना? उनकी किताबें आज भी हमारे साथ हैं, हम उन्हें आज भी पढ़ते हैं और उनसे प्रभावित होते हैं।" ये सच था। जिन लोगों के नाम यहाँ शेल्फ पर लिखे थे, उनमें से बहुत से लोग बहुत पहले इस दुनिया से चले गए थे। जब मैंने ये सोचा, तो मेरी आँखों में फिर से आँसू आ गए।

"आप सही कह रहे हैं। जिस तरह से उन्होंने अपनी भावनाओं को व्यक्त किया, उसी से वे स्थायी बन गईं। यह अद्भुत है, है ना? और यह सिर्फ लेखकों के लिए ही नहीं है। सभी कलाकार अद्भुत होते हैं। हम अपने पूर्वजों से विरासत में मिली रचनाओं से बहुत कुछ सीख सकते हैं।"

मैंने उत्साहपूर्वक सहमति में सिर हिलाया। "यह सचमुच सच है।"

कुछ देर बाद मुझे एहसास हुआ कि सूरज डूब चुका है। खिड़कियों के बाहर, दुनिया नीली छाया में डूबी हुई थी। दुकान बंद करने का समय लगभग हो चुका था। किसी न किसी तरह, मेरे चाचा ने मेरा दिल जीत लिया था, और मैं उनकी कहानी में खो गया था।

लेकिन आखिरकार यह इतना बुरा भी नहीं था, मैंने खुद से कहा, जब मैं साकुनोसुके ओडा के जीवन के बारे में सोच रहा था।

मुझे लगता है कि मेरे चाचा ने इन लेखकों के जीवन का इतनी गहराई से अध्ययन करने की कोशिश इसलिए की क्योंकि वे उनसे कुछ सीखना चाहते थे, और उस इच्छा के पीछे यह उम्मीद छिपी थी कि शायद उन्हें अपने जीवन को समझने में मदद करने वाला कोई सुराग मिल जाए।

मैंने जो सुना है, उसके अनुसार जब मेरे चाचा युवा थे, तब वे एक गहन अस्तित्वगत संकट से गुज़रे थे। वे इससे बहुत परेशान थे।

तो, अपनी जवानी के बीसवें दशक में, उन्होंने जापान में काम करके यात्रा के लिए पैसे बचाए, फिर अपना बैग उठाया और महीनों तक अकेले ही पूरी दुनिया में घूमते रहे। जब पैसे खत्म हो गए, तो वे जापान वापस आ गए और फिर से शुरुआत की। मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि वे उन लोगों में से एक थे जो खुद की तलाश में थे। इस तरह कहना थोड़ा अजीब लग सकता है, लेकिन मुझ जैसे व्यक्ति के लिए, जिसे कुछ भी करने की परवाह नहीं है, जिस तरह से मेरे चाचा ने बिना डरे इस योजना को पूरा किया, वह वाकई काफ़ी प्रेरणादायक है।

जब मैं कुनिताची में उनके घर गया, तो उन्होंने मुझे उन दिनों की अपनी एक तस्वीर दिखाई। ऐसा लगता है कि यह तस्वीर तब ली गई थी जब उन्होंने यात्रा करना शुरू ही किया था। तस्वीर में वे अभी भी बीस साल के एक नौजवान हैं। चूंकि यह मेरे जन्म के ठीक बाद की बात है, इसलिए मैंने उन्हें उस उम्र में कभी नहीं देखा था।

तस्वीर में वह नेपाल या भारत (मेरे चाचा को ठीक से याद नहीं था) की भीड़ में खड़ा है, उसके चेहरे पर हल्की दाढ़ी है, गाल धंसे हुए हैं और धूप से उसकी त्वचा गहरे भूरे रंग की हो गई है। वह कैमरे की ओर देख रहा है, उसकी आँखों की पुतलियाँ रोशनी में हल्की चमक रही हैं।

जब मैंने तस्वीर देखी, तो मैं चिल्ला उठी, "वाह! आप तो बिल्कुल ही अलग इंसान लग रहे हैं।" मैं सच में अतिशयोक्ति नहीं कर रही थी। मेरे चाचा के वर्तमान रूप की तुलना में उनका व्यक्तित्व बिलकुल अलग था।

“मैं तब जवान था। लगभग तीस साल पहले की बात है।”

“बात सिर्फ इतनी ही नहीं है। पता नहीं, उस तस्वीर में आपमें कुछ तो अद्भुत सा है,” मैंने तस्वीर को टकटकी लगाए हुए कहा। मानो मेरे चाचा का वो युवा रूप मुझे ही घूर रहा हो। सोचो, आज का वो नौजवान सिर्फ इसलिए इतना हंगामा कर रहा था क्योंकि उसे अपना तकिया नहीं मिल रहा था। जिंदगी अजीब है!

“खैर, उस समय मैं सचमुच बहुत परेशान था। जब मैं यात्रा नहीं कर रहा होता था, तो अपना सारा समय पढ़ने में बिताता था।” मेरे चाचा ने अपने बिखरे बालों में सिर के पीछे खुजली की और धीरे से हँसे, मानो वे अपने पुराने डर को हँसी में उड़ाने के लिए तैयार हों।

"जब भी मैं उस तस्वीर को देखती हूं, मुझे हंसी आ जाती है," मोमोको ने हमारे पास वापस आने पर हल्की सी खिलखिलाहट के साथ कहा।

पता नहीं क्यों, यात्रा में बिताए अपने कई वर्षों के दौरान उन्होंने केवल यही एक तस्वीर ली थी।

“मैंने इसे सिर्फ इसलिए लिया था क्योंकि यह मेरी पहली यात्रा थी, और मैं उस पल में खो गया था। उसके बाद से, मैं यात्रा करते समय कैमरा नहीं ले जाता,” मेरे चाचा ने रूखेपन से कहा।

“सच में? कितना अफसोस की बात है।”

"नहीं, ढेर सारी तस्वीरें पीछे छोड़ने का क्या फायदा?"

“मुझे लगता है कि इसे देखने का यह एक तरीका है। क्या यह वही समय था जब आप पेरिस में मोमोको से मिले थे?”

“मुझे लगता है कि मैं तुम्हारे चाचा से बाद में मिली थी,” मोमोको ने कहा। “उस समय वह इतने भयानक नहीं दिख रहे थे। उनकी आँखों में ज़्यादा कोमलता थी। अगर वह ऐसे दिखते, तो मैं उन्हें अपने पास नहीं आने देती।”

मुझे पता है कि ये मैं ही हूँ, लेकिन मैं बहुत खराब दिख रही हूँ।

“ये आदमी तो किसी को जान से मार डालने वाला लग रहा है।” ये कहते ही दोनों हंसते-हंसते लोटपोट हो गए। मोमोको ने उनके गाल पर चुटकी ली और मेरे चाचा ने उसे ऐसा करने दिया, और दोनों ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगे। (मोमोको की एक अजीब आदत है कि वो अपने करीबियों के गालों पर चुटकी लेती है।) वे दोनों वाकई अजीब जोड़ी हैं।

लेकिन उन दिनों मेरे पिता और मेरे बीच बिल्कुल भी बनती नहीं थी। हम लगातार झगड़ते रहते थे। हालांकि, मुझे यह स्वीकार करना पड़ेगा कि उन दिनों मैंने उन्हें सिवाय परेशानी के और कुछ नहीं दिया। यह सच है।

आप और आपके पिता के व्यक्तित्व बिल्कुल अलग हैं।

“बिल्कुल। एकदम अलग।”

मेरे दादाजी एक सख्त मिजाज इंसान थे। वे मुश्किल से ही कुछ बोलते थे और कभी कोई मजाक नहीं करते थे; उनकी भौंहें हमेशा गहरी सिकुड़ी रहती थीं। उनके लिए सख्त होना एक गुण था। वे इसे एक सिद्धांत मानते थे। मेरी मां के अनुसार, उनकी पहली शादी के कुछ समय बाद ही उनकी पत्नी का निधन हो गया था। जब उन्होंने मेरी दादी से शादी की, तब उनकी उम्र लगभग पचास साल थी। आम तौर पर, आप सोच सकते हैं कि उम्र अधिक होने के कारण वे अपने बच्चों को बिगाड़ देंगे,

लेकिन मेरे दादाजी ऐसे इंसान नहीं थे। मेरी मां और मेरे चाचा की परवरिश काफी सख्त माहौल में हुई थी। किताबों की दुकान चलाने के मामले में भी मेरे दादाजी अपने सिद्धांतों पर अडिग रहे। व्यापार के प्रति उनका रवैया बिल्कुल अटल था। लोग कहते थे कि वे तो सिर्फ देखने आए ग्राहकों को भी भगा देते थे। यह मेरे चाचा के रवैये से बिलकुल उलट था।

लेकिन अंततः दादाजी की जगह लेने वाले आप ही थे।

"अजीब बात है, है ना? मुझे उम्मीद है कि वह अपनी कब्र में करवटें नहीं बदल रहा होगा," मेरे चाचा ने मजाक में कहा।

"मुझे यकीन है कि वो गुस्से से पागल हो रहा होगा। वो सोच रहा होगा कि उस लड़के को पुरानी किताबों की दुकान चलाने का कुछ भी नहीं पता। वो इतना शोर मचा रहा है कि आसपास के सभी लोग परेशान हो रहे हैं," मोमोको ने कहा और दोनों जोर-जोर से हंसने लगे।

चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं थी। मेरे चाचा का व्यक्तित्व मेरे दादाजी से बिल्कुल विपरीत हो सकता है, लेकिन महत्वपूर्ण मामलों में वे दोनों एक जैसे थे। यह तो निश्चित था।

मैंने मेज पर रखी अपने चाचा की तस्वीर पर एक बार फिर नजर डाली। उस तस्वीर में दिख रहा व्यक्ति मेरे लिए बिलकुल अजनबी था। उसकी आँखों में जो चमक थी, वह क्रोध, संदेह या किसी अस्पष्ट उदासी की हो सकती थी।

मैंने तस्वीर में दिख रहे अपने चाचा के युवा रूप को एक मौन संदेश दिया:

कोई बात नहीं। आपको अच्छे लोग मिलेंगे। अब आपको इतना उदास होने की ज़रूरत नहीं है। भले ही आपको कमर दर्द और बवासीर हो, किताबों की दुकान के मालिक के रूप में आप सबकी चहेती रहेंगी। इसलिए अब आपको चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है।

4

सेवर कॉफी शॉप मोरिसाकी बुकशॉप से तीन मिनट की पैदल दूरी पर है। आस-पड़ोस में हर कोई सेवर को जानता है, जैसा कि पचास साल से मौजूद किसी जगह से उम्मीद

की जा सकती है। पुराने समय में, जिम्बोचो में रहने वाले कई महान लेखक अक्सर वहां समय बिताते थे।

पत्थर की दीवारों से घिरी यह जगह मंद रोशनी से जगमगाती है और कॉफी की मनमोहक सुगंध से भरी रहती है। इसका प्रभाव बेहद सुकून देने वाला है। हालांकि यहां आमतौर पर ग्राहकों की भीड़ रहती है, लेकिन शोरगुल बिल्कुल नहीं लगता। दरअसल, लोगों की बातचीत की आवाज़ पृष्ठभूमि में बज रहे मधुर पियानो संगीत में घुलमिल जाती है, जिससे माहौल और भी सुखद हो जाता है। तीन साल पहले गर्मियों में जब मेरे चाचा मुझे यहां लाए थे, तब से मुझे इस जगह का माहौल और कॉफी का स्वाद बेहद पसंद है। मैं आज भी यहां नियमित रूप से आता हूं।

कॉफी शॉप का मालिक लगभग चालीस वर्ष का एक सलीकेदार आदमी है, जिसका चेहरा लंबा और पतला है। पहली नज़र में वह थोड़ा सख्त लग सकता है, लेकिन असल में वह बेहद मिलनसार और बातूनी है। जब वह मुस्कुराता है, तो उसकी आँखों के आसपास प्यारी सी झुर्रियाँ पड़ जाती हैं। जैसे ही मैंने दरवाज़ा खोला, उसने काउंटर के पीछे से, जहाँ वह कॉफी बना रहा था, "स्वागत है!" कहकर मेरा स्वागत किया।

आज रात भी कुछ अलग नहीं था। जैसे ही मैंने दरवाजा खोला, उसने हमेशा की तरह गर्मजोशी से मेरा स्वागत किया। "हे, ताकाको। स्वागत है!"

“शुभ संध्या। लगता है आज फिर काफी भीड़भाड़ है।” मैंने दुकान में चारों ओर देखते हुए नमस्कार किया।

“धन्यवाद। कॉफी शॉप का व्यस्त मौसम शुरू हो रहा है। यही वो समय है जब हम सबसे ज्यादा कमाई करते हैं,” मालिक ने गिलास चमकाते हुए कहा। उनके चेहरे पर हल्की शरारती मुस्कान थी।

मुझे लगता है कि जब ठंड बढ़ती है, तो लोगों को कॉफी की तलब होती है।

"तो यह जाता है।"

दरअसल, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि वसंत है या गर्मी; यह कॉफी शॉप हमेशा गुलजार रहती थी। फिर भी, साल के ठंडे मौसम में एक अच्छी कप कॉफी पीने का अपना ही आनंद था। मुझे लगता है कि बाकी ग्राहक भी ऐसा ही महसूस करते होंगे।

तो, क्या आप किसी से मिल रहे हैं?

"मैं हूँ।"

“वाह, कितना अच्छा! अच्छा, आनंद लीजिए।”

मैंने मुस्कुराकर थोड़ा झुककर प्रणाम किया।

वेट्रेस तुरंत मेरे पास आई, मानो मेरा ही इंतज़ार कर रही हो, और मुझे खिड़की के पास वाली सीट पर ले गई जो अभी-अभी खुली थी। दरअसल, यही कॉफ़ी शॉप वो जगह थी जहाँ मेरे बॉयफ्रेंड वाडा और मैं मिलने का प्लान बनाते थे। उसका ऑफिस पास ही था, इसलिए ये एकदम सही जगह थी। जब भी वो देर तक काम करता, मैं किताब पढ़कर और कॉफ़ी पीकर समय बिताती थी। हमेशा की तरह, आज रात भी मैंने अपनी पसंदीदा किताब बैग में रखी थी। मैंने उसे तुरंत निकाला और पढ़ना शुरू कर दिया। इस तरह बिताया गया समय शांत होता है, लेकिन साथ ही रोमांचक भी—अपने प्रिय के आने का इंतज़ार करना। अपने पसंदीदा कॉफ़ी शॉप में बैठकर, किताब पढ़ते हुए, अपने बॉयफ्रेंड का इंतज़ार करना, ये एहसास किसी तरह बेहद शानदार होता है।

मैं लगभग आधे घंटे से इसी तरह इंतज़ार करते हुए पढ़ रहा था, तभी मुझे खिड़की के शीशे पर किसी के दस्तक देने की आवाज़ सुनाई दी। वाडा खिड़की के बाहर खड़ा था। हमारी नज़रें मिलीं और उसने हाथ हिलाया। जब मैंने भी हाथ हिलाया, तो वह मुड़ा और प्रवेश द्वार की ओर चल दिया।

“इंतज़ार कराने के लिए माफ़ कीजिएगा।” वो मेरे सामने बैठ गया, उसकी साँस थोड़ी फूल रही थी, मानो वो जल्दी में आया हो। उसके काम की जगह पर कोई ड्रेस कोड नहीं था, इसलिए आज भी वो हमेशा की तरह कैज़ुअल कपड़ों में था। ज़्यादातर, वाडा के कपड़े एक ही पैटर्न पर होते थे: जैकेट और स्लिम-फिटिंग पैंट या स्लैक्स। अगर आप उससे पूछते, तो वो कहता कि “कपड़े चुनने में बहुत झंझट होता है,” लेकिन यही स्टाइलिश अंदाज़ उस पर सबसे अच्छा लगता था। आज उसने एक स्टाइलिश काली जैकेट और ग्रे स्लैक्स पहनी थी जो उस पर एकदम फिट बैठ रही थी।

मैंने मुस्कुराते हुए अपनी किताब बंद करते हुए कहा, "मैं अभी-अभी यहाँ आई हूँ।"

“ओह, मुझे उम्मीद है।” वाडा मुस्कुराते हुए मुझे काफी देर तक देखता रहा। वह बिना कुछ कहे बस मुझे घूरता रहा। वह इतनी देर तक मुझे घूरता रहा कि मुझे शर्म

आने लगी, फिर मुझे एहसास हुआ कि उसकी नज़र असल में मेरे हाथ में मौजूद किताब पर थी।

"क्या यह तारुहो इनागाकी का संग्रह है?" वाडा ने अपनी आवाज में थोड़ी प्रशंसा के साथ पूछा।

“ओह, उम, ठीक है, हाँ...” मैंने कहा, यह समझने में थोड़ी मुश्किल हो रही थी कि एक हफ्ते बाद जब हम मिले थे, तो उसके मुँह से निकले पहले शब्द यही क्यों थे। हालाँकि, वाडा ने मेरी प्रतिक्रिया पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया।

“वन थाउजेंड एंड वन-सेकंड स्टोरीज काफी अच्छी है, है ना?” उन्होंने कहा।

“हाँ, बिल्कुल।” वाडा इतना खुश लग रहा था कि मैंने तुरंत खुद को संभाला और उसकी बात से सहमत हो गया। “ये इस तरह की जगह पर पढ़ने के लिए एकदम सही हैं। ये छोटी और प्यारी सी हैं। और ऐसा लगता है कि एक कप कॉफी के साथ इनका स्वाद और भी अच्छा लगेगा।”

“आप बिल्कुल सही कह रहे हैं,” वाडा ने उत्साहपूर्वक कहा। “शुरुआत के लिए, शीर्षक भी मज़ेदार हैं। ‘हाउ आई लॉस्ट माईसेल्फ’ या ‘हाउ माई फ्रेंड टर्न्ड इनटू द मून’।”

“वे बहुत ही मजेदार हैं। मेरा मतलब है कि इसीलिए मैंने इस किताब को अब तक पांच बार पढ़ा है।”

वाडा भी किताबों का बहुत शौकीन था। उसे पुरानी जापानी उपन्यासों से खास लगाव था। वह मुझसे कहीं ज्यादा जानकार था, क्योंकि मैंने तो अभी-अभी गंभीरता से पढ़ना शुरू किया था। और पढ़ने के शौकीन ज्यादातर लोगों की तरह, उसे भी दूसरों की किताबों में दिलचस्पी रहती थी। मैं जो भी किताब पढ़ता, उसे जानने की हमेशा उत्सुकता रहती थी। जब भी उसे कोई किताब पसंद आती, तो वह ऐसे मुस्कुराने लगता, और जब कोई ऐसी किताब होती जिसे वह नापसंद करता या अभी तक पढ़ा ही न होता, तो वह ऐसे मुंह बनाता जैसे कोई बच्चा कैंटीन में अपनी नापसंद डिश खाकर उदास हो गया हो। उसके चेहरे पर वो भाव इतना गंभीर होता कि मुझे शर्मिंदगी महसूस होती, मानो मैंने कोई बड़ा धोखा कर दिया हो। सच कहूं तो, कभी-कभी मुझे उसके चेहरे के उस भाव को देखने का थोड़ा इंतज़ार रहता था। उस दिन, मेरी किताब सबको पसंद आई, और मुझे वाडा का वो उदास चेहरा देखने को नहीं मिला।

"यह मुझे याद दिलाता है, जिस दिन हम यहां पहली बार मिले थे, आप तारुहो इनागाकी को पढ़ रहे थे।"

“रुको, क्या यह सही है? मुझे याद है कि मैं एक किताब पढ़ रहा था।”

इसमें कोई शक नहीं। मुझे वह दिन अच्छी तरह याद है।

वाडा को इतनी दृढ़ता से यह कहते हुए सुनकर मुझे किसी तरह शर्मिंदगी महसूस हुई। मैंने हंसकर इसे छिपाने की कोशिश की।

वाडा से मेरा रिश्ता तब शुरू हुआ जब एक रात हम सेवूर में अचानक मिले और साथ में कॉफी पीने लगे। मैं उन्हें पहले से जानती थी क्योंकि वे किताबों की दुकान पर अक्सर आते थे, लेकिन यह पहली बार था जब हमने खुलकर बात की। अब सोचती हूँ तो लगता है कि तभी मुझे उनकी तरफ आकर्षण महसूस हुआ। तब से हम काफी करीब हैं, लेकिन हमने गर्मियों से कुछ समय पहले तक आधिकारिक तौर पर अपने रिश्ते को एक कपल घोषित नहीं किया था। तो, उस समय तक हम कुछ ही महीनों से एक-दूसरे को डेट कर रहे थे।

मैंने उसे अकीरा कहकर बुलाने की कोशिश की है, जो उसका असली पहला नाम है, लेकिन अब भी मैं खुद को उसे उसके उपनाम वाडा से बुलाते हुए पाता हूं, वही नाम जिसका इस्तेमाल मैं हमारी पहली मुलाकात से कर रहा हूं।

सेवर के मालिक की बदौलत ही सब कुछ इस तरह से संभव हो पाया। इसीलिए मैं आज भी उनका आभारी हूं।

वाडा बेहद विनम्र स्वभाव का व्यक्ति है। वह ज़रूरत से ज़्यादा लाइमलाइट में रहना पसंद नहीं करता। उदाहरण के लिए, भीड़-भाड़ वाली जगहों पर वह पीछे हटकर चुपचाप सबकी बातें सुनता है, चेहरे पर मुस्कान लिए, और बीच-बीच में कोई चतुराई भरी टिप्पणी कर बैठता है। यही उसका स्वभाव है। लेकिन उसमें एक अजीब सी बात भी है। अचानक उसका ज़िद्दी स्वभाव सामने आ जाता है, और वह कहता है, "आज मुझे कैलामारी खानी है। मैंने आज सुबह ही तय कर लिया था, और मेरा फैसला पक्का है। मैं अपने पेट में कुछ और नहीं जाने दूँगा।" उसे समझना थोड़ा मुश्किल हो सकता है। लेकिन मुझे उसका यह थोड़ा सा अजीब स्वभाव बहुत पसंद आया।

हम दोनों की छुट्टी के दिन अलग-अलग थे, और वाडा का काम हर महीने के अंत में बहुत व्यस्त हो जाता था, जब अक्सर उसे अपनी नियमित छुट्टी के दिनों में भी काम करना पड़ता था। इसलिए, हम अक्सर शाम को ही कुछ समय के लिए मिल पाते थे।

हमारे काम के शेड्यूल में यह बेमेलपन हमारे रिश्ते में एक बड़ी बाधा बन रहा था। हम दोनों ही अपने काम को गंभीरता से लेते थे। हम दोनों के लिए ही काम से जल्दी निकल जाना और छुट्टी ले लेना संभव नहीं था। इसलिए, हम जो समय साथ बिता पाते थे, वह मजबूरीवश सीमित था। हालांकि मुझे इस बात से निराशा होती थी, लेकिन मैं यह भी जानती थी कि मैं इसके बारे में कुछ नहीं कर सकती।

खैर, एक हफ्ते में हम पहली बार एक-दूसरे से मिले थे। हम कॉफी पी रहे थे और थोड़ी देर में कुछ खाने जाने की बात कर रहे थे, तभी ताकानो अचानक रसोई के बाहर दिखाई दिया।

ताकानो सेवर रेस्टोरेंट में किचन मैनेजर था। वह लंबा और दुबला-पतला नौजवान था, जिसकी बोलने की शैली इतनी संकोची थी कि वह बिल्कुल असहाय लगता था। मैंने सुना था कि वह एक दिन अपनी खुद की कॉफी शॉप खोलना चाहता था और यहाँ मालिक से प्रशिक्षण ले रहा था।

“तुम्हें देखकर अच्छा लगा, ताकानो। काफी समय हो गया।”

"तुम्हें देखकर भी अच्छा लगा, ताकाको, और...उम, तुम्हें भी देखकर अच्छा लगा, वाडा।"

ताकानो अजनबियों के सामने काफी शर्मीला स्वभाव का था, और ऐसा लगता था कि वह वाडा से थोड़ा ही परिचित था और अभी भी उससे बात करने का आदी नहीं था।

“शुभ संध्या। मेरा नाम ताकानो है, है ना?” वाडा ने गर्मजोशी भरी मुस्कान के साथ जवाब दिया। ताकानो के चेहरे के भाव से मैं समझ गया कि इससे उसे भी सहजता महसूस हुई। वाडा में यह खूबी थी। वह किसी से भी आसानी से बात कर लेता था और उन्हें सहज महसूस करा देता था।

एक-दूसरे को नमस्कार करने के बाद भी, ताकानो न जाने क्यों वहीं मंडराता रहा, मानो किसी शेर के बचे हुए मांस पर नज़र गड़ाए लकड़बग्घे की तरह आसपास घूम रहा हो। यह थोड़ा अजीब लगने लगा, इसलिए मैंने उससे पूछा कि क्या बात है।

"अरे नहीं, कोई बात नहीं। हम अगली बार बात कर सकते हैं।"

जैसे ही वह अपना जवाब बुदबुदा रहा था, दूसरी तरफ से मालिक ने गुस्से से भरी आवाज में कहा, "अरे, ताकानो!"

जैसे ही ताकानो ने उसकी आवाज सुनी, वह घबरा गया और दौड़कर रसोई में वापस चला गया।

“यह सब क्या था?” ताकानो के दुबले-पतले शरीर को अचानक पीछे की ओर गायब होते देख मैं अपना सिर हिलाता रह गया।

वाडा भी उतने ही असमंजस में दिख रहे थे। "वह कुछ संदिग्ध तरीके से व्यवहार कर रहा था।"

फिर भी, संदिग्ध तरीके से व्यवहार करना उसके लिए कोई नई बात नहीं है।

"ऐसे में, मुझे लगता है कि चिंता करने की कोई बात नहीं है।"

ताकानो के बारे में ये कुछ असभ्य बातें कहने के बाद, हम किसी तरह खुद को समझाने में कामयाब हुए और सेवूर से निकल गए।

हम सानसेइदो की किताबों की दुकान में बंद होने के समय टहलते हुए गए, फिर पास के एक रेस्तरां में खाना खाने के बाद, जो वाडा को पसंद था, हम आस-पड़ोस में थोड़ी देर टहलने निकल गए। हम दोनों को अगले दिन काम पर जाना था। मेरी सुबह जल्दी मीटिंग थी, इसलिए हमने तय किया कि हम दोनों उसके बाद घर चले जाएंगे। वाडा मुझे स्टेशन तक छोड़ने आया।

वाडा का अपार्टमेंट भवन पुरानी किताबों की दुकानों वाले इलाके से लगभग पंद्रह मिनट की पैदल दूरी पर स्थित था। मैं वहाँ कुछ ही बार गया था, लेकिन पहली बार जब मैं गया तो मुझे बहुत बड़ा झटका लगा। "मेरा अपार्टमेंट बहुत गंदा है," वाडा ने रास्ते में बार-बार मुझे चेतावनी देने की कोशिश की, और सचमुच वह गंदा ही था।

जैसे ही मैंने दरवाजे से अंदर कदम रखा, मैंने देखा कि कन्वीनियंस स्टोर से बचे हुए बेंटो कंटेनर और फेंके हुए कपड़े फर्श पर बिखरे पड़े थे। उनकी ढेर सारी किताबें न केवल बुकशेल्फ़ पर रखी थीं, बल्कि सोफे और टेबल पर भी बिखरी पड़ी थीं। रसोई की हालत तो और भी खराब थी। सिंक गंदी प्लेटों और फ्राइंग पैन से लबालब भरा हुआ था। यह एक भयानक दृश्य था। यह कहना अतिशयोक्ति होगी कि अंदर कदम रखने की भी जगह नहीं थी, लेकिन कम से कम बैठने की तो कोई जगह नहीं थी। अलमारी का दरवाजा आधा खुला हुआ था, और अंदर बड़े-बड़े गत्ते के डिब्बे एक दूसरे के ऊपर ढेर लगे हुए थे। मैंने उनकी अनुमति से डिब्बों में झाँका और बहुत सारी पुरानी किताबें पाईं। ऐसा लग रहा था कि उनमें कुछ कीमती किताबें भी होंगी, लेकिन उन्हें इतनी बेतरतीब ढंग से फेंका गया था कि उन्हें व्यवस्थित करना ही एक मुश्किल

काम लग रहा था। खैर, जिस तरह से वे अव्यवस्थित थीं, उसे देखते हुए शायद बेहतर होता कि मोरिसाकी बुकशॉप वाले इसे पैक करके सारा ढेर ले जाते।

मुझे बहुत खेद है। मैंने सफाई करने की योजना बनाई थी, लेकिन इस सप्ताह काम में इतनी व्यस्तता रही कि मेरे पास समय ही नहीं था।

मुझे उसके घर आने को लेकर थोड़ी घबराहट थी, लेकिन घर का नजारा देखते ही मेरी घबराहट गायब हो गई। मैं काफी देर तक मन ही मन हंसती रही। मुझे लगा जैसे मैंने उसका एक अनपेक्षित रूप देख लिया हो, लेकिन वह इतना अनपेक्षित था कि मैं समझ ही नहीं पा रही थी कि इसका क्या मतलब निकालूं।

मैंने कहा, "खैर, मुझे लगता है कि सिंगल लड़कों के अपार्टमेंट ऐसे ही दिखते हैं।"

वाडा, जो पहले घबराया हुआ था, अब थोड़ा शांत लग रहा था। मुझे आश्चर्य हुआ था क्योंकि यह वाडा का अपार्टमेंट था, लेकिन इस तरह की अव्यवस्था आम तौर पर काफी आम है। बेशक, अगर उसने अपनी प्रेमिका के आने पर पहली बार में ही इसे साफ कर दिया होता तो अच्छा होता, लेकिन...

मैंने बेपरवाही से पूछा, "जब तुम्हारी पिछली गर्लफ्रेंड आई थी, तब तुमने क्या किया था?"

“खैर, जब भी उसे नज़र आती, वह मेरे लिए सफाई कर देती थी। वह ऐसी इंसान थी जिसे साफ-सफाई पसंद थी,” वाडा ने उदास मुस्कान के साथ कहा।

मुझे अचानक सवाल पूछने पर पछतावा हुआ। मैंने खुद से कहा, तुम बहुत ज्यादा सवाल पूछते हो।

उस ज़माने में वाडा उस औरत को कई बार मोरिसाकी बुकशॉप लाया था। उसके चेहरे की बनावट बेहद खूबसूरत थी और उसका कद लंबा और पतला था। उस समय मैं उन्हें सिर्फ़ देखती थी, इसलिए मैं उन्हें यूँ ही देखकर सोचती थी, "वाह, कितना खूबसूरत जोड़ा है!" अब हालात बदल गए थे, और मैं उस तस्वीर को किताबों के साथ अलमारी में रखे गत्ते के डिब्बे में बंद करना चाहती थी। छोटी-सी जलन से जलते हुए, मैंने उसी पल तय कर लिया कि मैं उसका अपार्टमेंट साफ़ करूँगी। मैं उस औरत को मुझे हराने नहीं दूँगी। तो, उस दोपहर, जब वाडा असमंजस में खड़ा था कि क्या करे, मैं एक ज़बरदस्त सफ़ाई मशीन में बदल गई।

इसी वजह से मुझे वाडा के घर पर रात बितानी पड़ी।

वाडा की बाहों में, मुझे अपने भीतर की गहराई में कुछ महसूस हुआ। और ऐसा लगा जैसे उस गहराई को छुआ जा रहा हो। शायद यह मेरे जीवन में पहली बार था जब मैंने ऐसा अनुभव किया था।

साथ ही, मुझे चिंता हो रही थी कि क्या वाडा मुझ जैसे साधारण व्यक्ति के साथ सचमुच आनंद ले रहा होगा। जिम्बोचो में, मैं अपने चाचा से लेकर कई दिलचस्प लोगों से मिला था (यहाँ तक कि साबू भी, मुझे मानना पड़ेगा, अपने तरीके से दिलचस्प था), लेकिन इसका दूसरा पहलू यह था कि इसने मुझे यह एहसास दिलाया कि मैं कितना सुस्त और अज्ञानी था। जिससे मुझे यह चिंता सताने लगी कि वाडा को भी जल्द ही इसका एहसास हो जाएगा।

मैं उसके साथ ज़्यादा समय बिताना चाहती थी, उसके साथ हर तरह की बातें साझा करना चाहती थी। लेकिन मुझे यकीन नहीं था कि वाडा भी ऐसा ही महसूस करता है। मैं रोमांस में बहुत बुरी हूँ, हमेशा से ही देर से समझदार हुई हूँ। शायद यही मेरे पिछले रिश्ते का कारण था, जिसका अंत बहुत बुरा हुआ। बाद में पता चला कि शुरुआत में हम दोनों के रिश्ते को लेकर सिर्फ़ मैं ही सोचती थी। अब, मुझे पूरा यकीन था कि वाडा उस तरह का लड़का नहीं है, लेकिन फिर भी मैं यह नहीं समझ पा रही थी कि उसे मेरी कितनी ज़रूरत है।

वाडा अपनी भावनाओं को ज़ाहिर करने वाला इंसान नहीं था। इसलिए मैं कभी-कभी यह समझने की कोशिश में बहुत परेशान हो जाती थी कि वह क्या सोच रहा है। वह एक प्रेमिका में क्या ढूंढ रहा था? क्या वह अपनी पिछली प्रेमिका से ज़्यादा मुझसे प्यार करता था? मैं उसकी तरह खूबसूरत तो नहीं थी। इन विचारों से मुझे कोई फ़ायदा नहीं हो रहा था; ये बस मेरे दिमाग में घूमते रहते थे। लेकिन एक बात बिल्कुल साफ़ थी। मैं जानती थी कि मैं क्या महसूस करती हूँ, और मैं उसे अपने शब्दों में बताना चाहती थी। और मैं यह बिल्कुल नहीं चाहती थी कि मैं अपनी भावनाओं या उसके साथ शुरू हुए रिश्ते को यूँ ही उलझाए रखूँ।

पढ़ने का मुझ पर ऐसा असर होने लगा था जिसकी मैंने उम्मीद नहीं की थी। किताबों में पढ़ी प्रेम कहानियों ने मुझे झकझोर दिया था, और इससे मेरा यह विश्वास और मजबूत हो गया था कि मुझे अपनी भावनाओं को और गंभीरता से लेना चाहिए।
रात में बहुत ज्यादा ठंड हो जाती है।

"हाँ।"

हम धीरे-धीरे ओचानोमिज़ू स्टेशन की ओर जाने वाली हल्की पहाड़ी पर चढ़ रहे थे। जिम्बोचो स्टेशन बहुत पास था, लेकिन हमने जानबूझकर लंबा रास्ता चुना था। किताबों की दुकानों वाले मोहल्ले के विपरीत, जहाँ हर कोई जल्दी सो जाता है, सड़क का यह हिस्सा अपने कई रेस्तरां और वाद्य यंत्र बेचने वाली दुकानों से जगमगा रहा था। सड़क पर कई लोग चल रहे थे और गाड़ियों का लगातार आना-जाना लगा हुआ था।

मैं उसके साथ रहना चाहता था।

लेकिन मुझे घर जाना पड़ा।

मेरे दिमाग में वही विचार बार-बार लौटते रहे।

मैं तिरछी नज़रों से वाडा को देख रहा था, जो मेरे बगल में चल रहा था। वाडा हर कदम बड़ी सहजता से उठा रहा था, बिना किसी फालतू हरकत के। उसके कदमों से लगभग कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। बिल्कुल उसकी आदत के अनुसार। क्या वह भी थोड़ा उदास था? उसके चेहरे पर भाव हमेशा की तरह ही थे।

चलते-चलते हमारी बातचीत सोने से पहले पढ़ने के लिए सही किताब के बारे में होने लगी। वाडा ने मुझे चौंकाते हुए कहा कि अगर वह बिस्तर पर पढ़े तो उसे नींद नहीं आती। उसने गंभीर चेहरे से कहा कि अगर कुछ पढ़ना ही है तो फोन बुक भी ठीक रहेगी। काफी सोच-विचार के बाद मैंने कोतारो ताकामूरा की किताब, 'द चिएको पोएम्स' पढ़ने का सुझाव दिया।

"हालांकि मुझे लगता है कि यह एक बेहतरीन किताब की बर्बादी होगी क्योंकि सोने से पहले आप वास्तव में इतना कुछ नहीं पढ़ सकते।"

"हम दोनों में से कोई भी इसका सही जवाब नहीं दे पा रहा है," वाडा ने मुस्कुराते हुए कहा। "लेकिन मुझे लगता है कि 'द चिएको पोएम्स' आपके लिए वाकई एक महत्वपूर्ण किताब है।"

"मेरा मतलब है, मुझे ऐसी कोई दूसरी किताब नहीं पता जो इतनी प्रेममय हो।"

“मैं सहमत हूँ। चिएको की मानसिक बीमारी ने उसके प्रति उनके प्यार को और भी मजबूत कर दिया, और मानो इसके जवाब में, उनकी कविताएँ और भी खूबसूरत हो गईं।”

स्कूल में मेरी पाठ्यपुस्तकों में चिएको कविताओं का एक अंश शामिल था, इसलिए ज़ाहिर है मैं इससे परिचित थी। लेकिन जब मैंने किताब को शुरू से पढ़ना शुरू किया, तो मैं इसकी भावपूर्णता से दंग रह गई। ताकामूरा ने चिएको के साथ जो दिन बिताए,

उनके प्यार की सारी खुशियाँ, चिंताएँ, उदासी और दर्द, उनकी पहली मुलाकात से लेकर शादी तक, चिएको की बीमारी और उसकी मृत्यु तक की सारी भावनाएँ, सब कुछ कविता की पंक्तियों में पिरो दिया गया था। उन कविताओं में एक ऐसी चमक है जो इतनी तेज़ है कि आँखों को चकाचौंध कर देती है।

मुझे लगता है कि बहुत से लोगों के लिए, बल्कि बहुत से लोगों के लिए, चिएको की कविताएँ एक महत्वपूर्ण, बल्कि अपूरणीय पुस्तक है। और मैं भी निश्चित रूप से उन्हीं लोगों में से एक हूँ। जब भी मैं इसे पढ़ता हूँ, मैं भावनाओं से भर जाता हूँ। इतनी भावनाएँ कि मुझे उन्हें शब्दों में व्यक्त करने की आवश्यकता ही नहीं रहती।

इसीलिए मैं इस किताब को तभी पढ़ती हूँ जब मुझे सच में पढ़ने की तीव्र इच्छा होती है। क्योंकि मैं अपने उस हिस्से को बचाए रखना चाहती हूँ जो इस किताब को पढ़कर इतना भावुक हो जाता है। जब भी मैं इसे पढ़ती हूँ, मेरी आँखों में आँसू आ जाते हैं। चाहे मैं इसे कितनी ही बार पढ़ लूँ, आँसू हमेशा उमड़ आते हैं। किताब के बारे में सोचते ही मेरी आँखों में आँसू आ जाते हैं।

मैं सोचता हूं कि अपने विचारों को इस तरह शब्दों में व्यक्त कर पाना कितना अद्भुत होगा।

जैसे ही यह विचार मेरे मन में आया, मुझे एहसास हुआ कि स्टेशन पहले से ही दिखाई दे रहा था। अलविदा कहने का समय आ गया था।

हमने एक-दूसरे को शुभ रात्रि कहा और अपने-अपने रास्ते चले गए। यह मेरे लिए दिन का सबसे दर्दनाक पल था। लाख कोशिश करने पर भी, मैं इसे शब्दों में बयान नहीं कर सकती।

मैं कुछ देर तक चौकी के सामने खड़ा रहा और वाडा को धीरे-धीरे दूर जाते हुए देखता रहा। मैंने सोचा कि सोने से पहले थोड़ी सी चिएको की कविताएँ पढ़ लूँ। काफी समय हो गया था। घर वापस आते समय रास्ते भर मैं इसी बारे में सोचता रहा।

5

दिन-ब-दिन हम पतझड़ के मौसम में और गहरे उतरते जा रहे थे। सर्दी करीब आ रही थी। सूखी हवा इतनी ठंडी थी कि हमें कंपकंपी छूट रही थी। सड़क के किनारे पेड़ों के

पत्ते रंग बदलने शुरू ही हुए थे। देखते ही देखते सूरज हर गुजरते दिन के साथ जल्दी डूबने लगता और रातें लंबी और गहरी होती जातीं।

यह साल का मेरा सबसे पसंदीदा समय था, सर्दियों के पूरी तरह आने से पहले का वो समय, जब मैं बीते मौसम का शोक मनाती थी। मेरा मन करता था कि मैं वहीं खड़ी रहूँ और हल्के नीले आसमान और उसकी कोमल रोशनी को निहारती रहूँ। इसीलिए आजकल मेरी सुबह की दिनचर्या आसमान की ओर देखते हुए काम पर जाना बन गई थी।

मैं इदाबाशी में एक डिज़ाइन स्टूडियो में काम कर रहा था, वही कंपनी जिसने मुझे किताबों की दुकान छोड़ने के बाद नौकरी पर रखा था। यह एक बहुत छोटी कंपनी थी जिसका मुख्य काम पैम्फलेट और लीफलेट डिज़ाइन करना था। अगर शुरुआती अंशकालिक काम का समय भी शामिल कर लें, तो मैं वहाँ लगभग तीन साल से काम कर रहा था।

चूंकि हमारे कई काम मूल रूप से एकल प्रोजेक्ट थे, इसलिए हमारे काम के घंटे या दिन तय नहीं थे, और जब तक हम कार्यालय के बुनियादी शिष्टाचार का पालन करते थे, तब तक हम अपनी इच्छानुसार काम करने के लिए काफी हद तक स्वतंत्र थे। जिस कंपनी में मैंने पहले काम किया था, वहां हमारे निजी संबंध गुप्त रखे जाते थे, और वहां गुट भी बने हुए थे, जिनमें तालमेल बिठाना मेरे लिए सचमुच बहुत मुश्किल था। मेरी नई कंपनी छोटी होने के कारण, मैं उन उलझनों से दूर रह सकी। मेरी आय पिछली नौकरी की तुलना में काफी कम थी, लेकिन मैं अपनी गति से काम कर सकती थी, और मुझे लगा कि यह नई जगह मेरे लिए निश्चित रूप से बेहतर है।

रात देर तक ऑफिस में काम करना मुझे बिल्कुल पसंद नहीं था, इसलिए मैं सुबह सबसे पहले पहुँच जाता था और शाम को जल्दी काम खत्म करने की कोशिश करता था। मैं अपने सहकर्मियों से बातचीत तो करता था, लेकिन ज़रूरत से ज़्यादा उनसे उलझता नहीं था। ऑफिस के बाहर तो मैं उनसे बहुत कम ही मिलता था।

शायद इन्हीं सब बातों की वजह से, जब कभी-कभार मुझे अपने सहकर्मियों के साथ ड्रिंक्स पर बुलाया गया, तो उनमें से एक ने मुझसे कहा, "तुम तो कुछ-कुछ अपने में ही मग्न रहते हो, है ना?" बाकी लोगों की भी मेरे बारे में यही राय थी। उनके अनुसार, मैं ज्यादा बात नहीं करता था और शाम को हमेशा जल्दी घर चला जाता था। यह सुनकर मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ, लेकिन जब मैंने इस बारे में सोचा, तो मुझे लगा कि

इसका एक बड़ा कारण शायद यह था कि मुझे एक ऐसी जगह मिल गई थी जहाँ मैं घर जैसा महसूस करता था।

पहले मैं बस घर और काम के बीच ही आती-जाती रहती थी। मेरी कोई खास हॉबी नहीं थी और न ही किसी चीज़ से मेरा कोई गहरा लगाव था। मैं बहुत दुखी तो नहीं थी, लेकिन मुझे हल्का सा एहसास ज़रूर होता था कि मेरी ज़िंदगी में कुछ कमी है। अब पीछे मुड़कर देखती हूँ तो लगता है कि मैं हमेशा से ऐसा ही महसूस करती थी और मुझे समझ नहीं आता था कि इससे कैसे निपटूँ। लेकिन अब ऐसा नहीं लगता। बेशक, यह कहना बेवकूफी होगी कि मैं अभी पूरी तरह से संतुष्ट हूँ। बात बस इतनी है कि जब मैं इस बारे में सोचती हूँ, तो मुझे अब सच में ऐसा नहीं लगता कि मेरी ज़िंदगी में कुछ कमी है।

कुछ जगहें थीं जहाँ मैं जाना चाहता था और कुछ लोग थे जिनसे मैं मिलना चाहता था। और एक जगह ऐसी भी थी जो हमेशा मेरा स्वागत करने के लिए तैयार रहती थी।

मुझे इससे ज्यादा अद्‌भुत और कुछ नहीं सूझता।

मैं अपनी सुविधानुसार काम कर पा रहा था। मुझे नौकरी पसंद थी और ऑफिस का माहौल भी ठीक-ठाक था। मुझे पूरा भरोसा था कि सब कुछ सही दिशा में आगे बढ़ रहा है।

लेकिन हाल ही में मुझे थोड़ी परेशानी का सामना करना पड़ा। सच कहूँ तो यह मामूली बात थी। अगर मैं किसी को इसके बारे में बताता, तो शायद वे इसे मजाक समझकर हँस देते। लेकिन सच्चाई यह है कि इससे मुझे काफी दुख हुआ।

यह सब एक दिन दोपहर के भोजन के समय शुरू हुआ। कंपनी में कोई कैंटीन या तय समय नहीं था। हर व्यक्ति को अपने लंच ब्रेक को अपनी इच्छानुसार बिताने की छूट थी। मैं आमतौर पर पास के एक कैफे में जाता था। दोपहर के भोजन के समय भी वह खाली रहता था, और मैंने वहां कभी किसी सहकर्मी को नहीं देखा, यही वजह थी कि मुझे वहां खाना सबसे आरामदायक लगता था।

लेकिन एक दिन अचानक मेरी मुलाकात एक वरिष्ठ सहकर्मी से हो गई। वह एक ऐसा व्यक्ति था जो लोगों से व्यंग्यपूर्ण और तिरस्कारपूर्ण ढंग से बात करता था। मुझे पहले से ही आभास था कि उसके साथ मेरा तालमेल अच्छा नहीं बैठेगा। इसलिए, मैंने बस यूं ही नमस्ते कहा और दूसरी सीट ढूंढने की कोशिश की, लेकिन उसने मुझे आवाज़ दी।

"अरे, आओ यहाँ बैठो।"

मेरे पास उसके साथ बैठने के अलावा कोई चारा नहीं था। जैसा कि मैंने सोचा था, हमारी मेज पर माहौल बिल्कुल भी खुशनुमा नहीं था। बातचीत जारी रखने की कोशिश न करने में कुछ हद तक मेरी भी गलती थी, लेकिन जब वह लगातार बोलता रहा, अपनी बड़ाई करता रहा और काम के बारे में शिकायत करता रहा, तो मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दूं। “समस्या यह है कि हमारे ग्राहक इतने मूर्ख हैं कि उन्हें समझ ही नहीं है। मुझे अपनी प्रतिभा का इस्तेमाल करने के लिए कोई बड़ा काम चाहिए। मौजूदा परियोजनाओं में तो मैं अपनी क्षमता का पचास प्रतिशत भी नहीं दे पा रहा हूं।” हमने पूरा लंच ब्रेक उसके इसी तरह के भाषण को सुनते हुए बिताया, उसके चेहरे पर घृणा का भाव था। अंत में, मैं बस इतना ही कह पाया, “हम्म।”

बात यहीं खत्म हो जानी चाहिए थी। मैंने मन ही मन सोचा, ये तो बस ऐसी ही एक घटना है—कभी किसी ऐसे व्यक्ति से मुलाकात हो जाती है जिसे आप पसंद नहीं करते; आज आपका दिन अच्छा नहीं है। लेकिन उसके बाद, वो मुझसे बात करने के बहाने ढूंढने लगा। ऑफिस में भी, अगर मैं अपने कंप्यूटर पर काम में व्यस्त होती, तो वो जानबूझकर मेरे पास आकर मुझसे बात करने लगता। अगर मैं अनसुना करके काम करती रहती, तो वो आकर मेरी पीठ थपथपाता ताकि मैं उसकी बात सुनूं। फिर उसने मुझे लंच पर बाहर जाने के लिए पूछना शुरू कर दिया, मानो ये बिल्कुल सामान्य बात हो। मुझे बिल्कुल समझ नहीं आ रहा था कि आखिर किस बात से उसे मेरे साथ एक और उबाऊ घंटा बिताने की इच्छा होती होगी। और मेरी स्थिति में, मैं उसे हर दिन मना तो नहीं कर सकती थी, इसलिए उस दिन के बाद मुझे कई बार उसी कैफे में उसके साथ जाना पड़ा। ज़ाहिर है, हमारे लिए तो बस समय की बर्बादी ही थी।

इन सब का क्या मतलब था? उसे इसमें क्या मज़ा आ रहा था? क्या यह उत्पीड़न का कोई नया रूप था? मैं दिन-ब-दिन और ज़्यादा चिढ़ती जा रही थी।

चौथी बार जब उसने मुझे अपने साथ लंच ब्रेक लेने के लिए मजबूर किया, तो शिकायत और शेखी बघारने के बीच एक विराम में, उसने अचानक मुझसे, मुंह में सैंडविच भरे हुए, पूछा, "तो, आप अपनी छुट्टियों के दिनों में क्या करते हैं?"

“मैं...उम...अक्सर पुरानी किताबों की दुकानों पर जाता हूँ।” मैं इतना अचंभित हो गया कि मैंने उसे ईमानदारी से जवाब देकर गलती कर दी।

“क्यों? ऐसी जगह क्यों जाना चाहते हो? क्या तुम बूढ़े हो?” वो ऐसे हँस पड़ा जैसे मैंने उसे अब तक का सबसे मज़ेदार चुटकुला सुनाया हो। तुम्हें मुझसे ये पूछने का कोई हक नहीं है कि मैं अपनी छुट्टियों में क्या करता हूँ! मैंने मन ही मन कहा, लेकिन फिर मुझे याद आया कि वो अभी भी मुझसे ऊंचे पद पर है। ये बात मैं ज़बान से नहीं कह सकता था।

"क्या हम आपकी अगली छुट्टी के दिन ड्राइव पर चलें?"

एक और अप्रत्याशित हमले के बाद, मैं और भी ज़्यादा परेशान हो गया। "उम, हम ऐसा क्यों करेंगे?"

“तुम्हारा मतलब ‘क्यों’ से क्या है? अगर तुम व्यस्त नहीं हो, तो क्या यह अच्छा नहीं होगा?”

नहीं... मेरी कुछ योजनाएँ हैं।

“योजनाएं?”

मैंने अभी आपको किताबों की दुकानों के बारे में बताया था।

अरे यार। कोई भी इतनी बार किताबों की दुकानों पर नहीं जाता।

“जो लोग इन्हें पसंद करते हैं, वे ऐसा करते हैं। इसमें कुछ गलत नहीं है,” मैंने जवाब दिया। मैं सचमुच चिढ़ रहा था। उसने उलझन में अपना सिर खुजाया और गहरी सांस ली। उसने दया से भरी आह भरी, जैसे कोई शिक्षक किसी हाई स्कूल ड्रॉपआउट को गाइडेंस काउंसलर के कार्यालय में देखकर आह भरता है।

“क्या आप जीवन का आनंद लेते हैं?” उसने पूछा।

"क्या?"

“मतलब, ऐसा लगता है जैसे तुम हमेशा उदास रहते हो। तुम बातचीत नहीं कर पाते। तुमसे बात करने का क्या फायदा? जब मैं तुम्हारी मदद करने की कोशिश करता हूँ और तुम्हें कहीं बुलाता हूँ, तब भी तुम असहज हो जाते हो और पुरानी किताबों की दुकानों या ऐसी ही किसी बात का ज़िक्र करने लगते हो। तुम्हें अपना नज़रिया थोड़ा सकारात्मक करना होगा, वरना तुम अपनी ज़िंदगी बर्बाद कर दोगे।”

इस आखिरी बात के बाद, उसने मुझे जवाब देने का एक पल भी नहीं दिया और ताना मारते हुए बोला, "यह उबाऊ है।" फिर वह उठा और बाहर चला गया। एक पल के लिए मैं हिल भी नहीं सका। मैं बस अवाक बैठा रहा, मेरा मुंह खुला रह गया था।
"ओह, कितना परेशान करने वाला है!"

उस रात, मैं मोमोको से मिलने उसके छोटे से रेस्तरां में गई जहाँ वह काम करती थी और दोपहर के भोजन के दौरान मैंने साके पीते हुए उसे उस घटना के बारे में बताया। हाल ही में, मोमोको के खाने की वजह से मैं उस रेस्तरां में अक्सर जाने लगी थी। रेस्तरां के मालिक श्री नाकासोनो एक मिलनसार व्यक्ति थे और बातों में माहिर थे। इस लिहाज़ से, वे और मोमोको एक-दूसरे के लिए बिल्कुल सही थे। लेकिन शायद ग्राहकों के नाम और चेहरे याद न रख पाने की वजह से, श्री नाकासोनो मेरा नाम भूल जाते थे। हर बार जब मैं रेस्तरां में आती, तो वे मुझे "मिकाको" या "युकाको" या इसी तरह के किसी नाम से पुकारने लगते। चाहे मैं कितनी ही बार उन्हें टोकती, अगली बार जब वे मुझे देखते, तो फिर से वही गलती कर बैठते। आखिरकार, मैंने इसे स्वीकार कर लिया।

उस रात, जब मुझे "तेरुको" कहकर पुकारा गया, जो मेरे असली नाम से काफी अलग है, तो मैं गुस्से से कांप उठी, लेकिन फिर मैंने तुरंत फैसला किया कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

काउंटर के दूसरी तरफ, मोमोको अपने काम में व्यस्त थी और एप्रन पहने हुए काफी सहज लग रही थी। "अरे, जब आप बहुत ज्यादा पी चुके हों तो किसी की दुकान में आकर बकवास मत करो," उसने ऐसे कहा जैसे वह किसी नशे में धुत ग्राहक को डांट रही हो।

उस दुर्लभ अवसर पर, मैं वास्तव में काफी नशे में था।

"लेकिन यह बेहद परेशान करने वाला है। बेशक, उससे यह सुनना परेशान करने वाला है, लेकिन सबसे परेशान करने वाली बात यह है कि मैं जवाब भी नहीं दे सकी।"

“हां, मैं समझता हूं, बिल्कुल। यह परेशान करने वाला है। मैं समझता हूं।”

जैसे-जैसे मेरा नशा बढ़ता गया, मुझे उसकी मनमानी भरी हरकतों पर गुस्सा आता गया। और हालात और भी बदतर इसलिए हो गए क्योंकि संयोगवश उसका नाम वाडा था। यह भी एक ऐसी बात थी जो मुझे बेहद अप्रिय लगी।

“मैं इसे भाग्य का खेल नहीं कहूंगी। वाडा एक आम नाम है। ऐसा नहीं है कि वाडा नाम रखना उसकी अपनी पसंद थी,” मोमोको ने अविश्वास से कहा।

लेकिन मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। मेरा मतलब है, जब आप उसके बारे में सोचते हैं, तो क्या वाडा भी आपके दिमाग में नहीं आ जाता?

"तो तुम इस लड़के के बारे में सोच रही थी, है ना?" मोमोको ने शरारती मुस्कान के साथ कहा।

“मेरा मतलब वो नहीं था। मेरा मतलब है जैसे हम अभी उसके बारे में बात कर रहे हैं,” मैंने नाराज़गी जताते हुए कहा।

“खैर, मुझे लगता है यह असुविधाजनक है। तो क्या हम उसे वाडा #2 कहें?” मोमोको ने उसे अचानक एक उपनाम देते हुए कहा। “तो, मूलतः तुम यह कह रही हो कि वाडा #2 ने तुम्हें डेट पर बुलाया था और तुम्हें इसका एहसास ही नहीं हुआ?”

"नहीं, मुझे पता था, लेकिन मुझे यह नहीं पता था कि वह अचानक मुझसे उन सब बातों के बारे में क्यों बात कर रहा था।"

"उसने तुम्हें डेट पर जाने के लिए इसलिए कहा क्योंकि उसे लगा कि तुम चाहती हो, और फिर तुम उस पर गुस्सा हो गईं।"

“यह बात समझ में नहीं आती, है ना? क्या लोग सच में मुझे इसी तरह देखते हैं?”

“खैर, वाडा नंबर 2 ने ऐसा ही किया था,” मोमोको ने रूखेपन से कहा। उसने कंधे उचकाए, मानो कह रही हो, मुझसे नाराज़ मत हो। “लेकिन तुम भी थोड़ी-बहुत ऐसी ही हो सकती हो, ताकाको।”

"कैसा?"

"मतलब, लापरवाह।"

“लापरवाही से तुम्हारा क्या मतलब है? मैं तो कुछ कर ही नहीं रहा था।”

"कभी-कभी यह एक ही बात होती है। और कभी-कभी यह और भी अधिक लापरवाह प्रतिक्रिया को जन्म दे सकता है।"

यह सुनकर मैं चौंक गया। मैं भी पहले ऐसा कर चुका था। "मुझे लगता है आप सही कह रहे हैं... उस एक बार मैं सच में मुसीबत में पड़ गया था।"

"अरे, क्या आप उदाहरण के तौर पर उस लड़की के मामले का जिक्र कर रहे हैं जिसने खुद को पुरानी किताबों की दुकान के अंदर बंद कर लिया था?"

“क्या, वो? कृपया मेरे जीवन की घटनाओं को अजीबोगरीब नाम देना शुरू न करें।”

मोमोको खिलखिलाकर हंस पड़ी। “हालांकि तुम थोड़े धीमे... लापरवाह... और हां, बेअदब हो, फिर भी मुझे तुम्हारा प्यारा स्वभाव बहुत पसंद है।” मोमोको मुस्कुराते हुए मेरी तरफ देखने लगी। उसके मुलायम, छोटे बाल फ्लोरोसेंट लाइट में चमक रहे थे।

मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा कि आप मेरी तारीफ कर रहे हैं या मेरा अपमान कर रहे हैं।

“नहीं, मैं तो तुम्हारी तारीफ ही कर रही हूँ,” मोमोको ने फिर से ज़ोर से हंसते हुए कहा। “वैसे, तुम्हारी पिछली बात पर आते हैं, भले ही वाडा नंबर 2 ने तुम्हें उस नज़रिए से देखा हो, इसका मतलब यह नहीं है कि उसने तुम्हें सचमुच में एक इंसान के रूप में देखा हो। उसने तुम्हें सिर्फ़ अपने पूर्वाग्रहों से भरे नज़रिए से देखा। कहने का मतलब यह है कि अगर तुम थोड़ी ज़्यादा समझदार होतीं, तो तुम ऐसे व्यक्ति से दूर रह सकती थीं जो तुम्हें मुश्किल में डाल सकता था।”

"कहना आसान है, करना मुश्किल। वह काम में मुझसे वरिष्ठ है।"

"इसीलिए आपको ऐसा माहौल बनाने की पूरी कोशिश करनी होगी जिससे लगे कि आप इस आदमी के करीब आने में कोई दिलचस्पी नहीं रखतीं। आप ऐसा जता सकती हैं। और चाहे वह कितना भी बेवकूफ क्यों न हो, उसे संदेश मिल जाएगा।"

"ओह, मैं इस तरह के कामों में सचमुच बहुत बुरा हूँ।"

“जब मैंने कहा था कि तुम बहुत प्यारी हो, तो मेरा यही मतलब था। और मैं चाहती हूँ कि तुम जैसी हो वैसी ही रहो। मुझे तुम जैसी हो वैसी ही पसंद हो,” मोमोको ने काउंटर के उस पार हाथ बढ़ाकर मेरी पीठ थपथपाते हुए कहा।

"आपका क्या मतलब है?"

"इस तरह से आप अक्सर हारने वाले पक्ष में समाप्त हो सकते हैं, लेकिन क्या अपने वास्तविक स्वरूप के प्रति सच्चे रहना बेहतर नहीं है?"

"शायद।" मुझे ठीक से समझ नहीं आया कि वह क्या कह रही थी, लेकिन मुझे लगा कि वह कह रही थी कि वह चाहती है कि मैं वैसा ही रहूँ जैसा पहले था।

लेकिन ऐसे लोग भी होते हैं, आप जानते हैं, जो बेहद स्वार्थी होते हैं। ऐसे व्यक्ति के लिए यह मायने नहीं रखता कि उनके साथ आप हैं या कोई और।

यह सुनकर बहुत दुख हुआ, पर मुझे पता था कि वह सही कह रही थी। अतीत में मुझे भी ऐसा ही एक बुरा अनुभव हुआ था। मुझे लगा था कि उस व्यक्ति ने मुझे चुना है, लेकिन असल में ऐसा नहीं था। वह मेरे जैसी किसी को पाकर संतुष्ट हो जाता। यह बात मुझे बहुत परेशान कर रही थी, क्योंकि ऐसा लग रहा था जैसे मेरी पहचान ही छिन रही हो। दूसरी ओर, यह भी स्पष्ट है कि इसमें मेरी भी कुछ ज़िम्मेदारी थी।

“इस दुनिया में हर तरह के लोग हैं। वाडा नंबर 2 जैसा व्यक्ति, वह अपने जीवन की कहानी का मुख्य पात्र है। बेशक, व्यक्तिगत रूप से मुझे उस वाडा नंबर 2 के बारे में किताब पढ़ने में कोई दिलचस्पी नहीं है।” मोमोको ने एक शरारती बच्चे की तरह जीभ बाहर निकाली।

“सुनो, जीवन छोटा है। अपने जीवन की कहानी में, तुम्हें ऐसे लोगों से दूर रहना चाहिए। उन लोगों के साथ रहो जो तुम्हें सचमुच चुनते हैं, जो तुम्हें अनमोल समझते हैं। यही वो कहानी है जो तुम चाहते हो—समझ रहे हो ना मैं क्या कह रहा हूँ?”

“हाँ, मुझे पता है। मैं तुम्हारी बात को पूरी तरह समझता हूँ।”

मुझे सचमुच ऐसा लगा जैसे मैं समझ गई हूँ। मुझे लगा कि यह वाडा के साथ मेरे रिश्ते के बारे में मेरे हाल के विचारों से गहराई से जुड़ा हुआ है। एक ऐसा व्यक्ति जिसने मुझे मेरे असली रूप में चुना। क्या वाडा (और, ज़ाहिर है, मैं वाडा नंबर दो की बात नहीं कर रही हूँ) मेरे बारे में ऐसा ही सोचता था? वाडा ही मेरे लिए एकमात्र था। कोई और उसकी जगह नहीं ले सकता था।

“यह अच्छी बात है। इसे दिल से मान लो। यह तुम्हारे बड़ों की तरफ से एक छोटी सी सलाह है।”

"ठीक है।"

हमारी बातचीत ने एक अजीब मोड़ ले लिया था, लेकिन मुझे पता था कि मोमोको ने जो कहा था वह सच था। मैंने आज्ञाकारी भाव से सिर हिलाकर उसकी बात मान ली। कुछ दिनों बाद, एक ग्राहक से आखिरी समय में संपादन का अनुरोध आया, और इसके साथ इतने सारे नए काम आ गए कि कार्यालय में कई दिन बहुत व्यस्तता भरे रहे। शायद इसी वजह से, हालांकि "शुक्रिया" सही शब्द नहीं है, मुझे वाडा #2 के बारे में दोबारा सोचने का समय ही नहीं मिला।

फिर एक रात, जब काम पर हालात थोड़े सुधरने लगे थे, मैं ऑफिस से थकी-हारी निकली और अपने आप ही सेवूर की तरफ चल पड़ी। ऐसा नहीं था कि मैं वहाँ वाडा से मिलने वाली थी, बस मुझे कॉफी पीने की ज़बरदस्त तलब हो रही थी। मैंने सोचा, अब तो तुम सच में कॉफी की आदी हो गई हो। कॉफी शॉप की तरफ जाते हुए मैं मन ही मन थोड़ा हँसी।

दरवाजा खोलते ही मुझे चहल-पहल भरी बातचीत की जानी-पहचानी आवाज सुनाई दी और मुझे एहसास हुआ कि साबू वहीं था। और हाँ, वह वहीं काउंटर पर बैठा

मालिक से बात कर रहा था।

“अरे, आपको देखकर अच्छा लगा।” एक संक्षिप्त अभिवादन के बाद, मैं उनके बगल में बैठ गया और एक मिश्रित कॉफी और जापानी शैली की नेपोलिटन स्पेगेटी सलाद के साथ ऑर्डर की क्योंकि मुझे बहुत भूख लग रही थी।

मालिक रसोई की ओर मुड़ा और चिल्लाया, "अरे, ताकानो! एक नापो जल्दी से लाओ!"

“ठीक है!” ताकानो ने थोड़ा झिझकते हुए जवाब दिया।

“वैसे, वो बेवकूफ तुम्हारे पीछे-पीछे घूम रहा है, ताकाको। क्या वो फिर से तुमसे बकवास कर रहा है?” मालिक ने पूछा, शायद ताकाको के पिछले दिन के अजीब व्यवहार के बारे में सोचते हुए।

नहीं, ऐसा खास तौर पर नहीं है।

"अगर वह आपको परेशान करे, तो बेझिझक उसके सिर पर एक थप्पड़ मार दें।"

“माफ़ कीजिए, मुझे नहीं लगता कि मैं ऐसा कर पाऊँगी,” मैंने अचंभित होकर कहा। इससे मुझे यह सोचने पर मजबूर होना पड़ा कि ताकानो के लिए वहाँ काम करना कैसा होगा, जहाँ उसे इतना कठोर व्यवहार सहना पड़ता है।

साबू हमेशा की तरह अच्छे मूड में था, मेरे बगल में बैठे-बैठे इधर-उधर की बातें कर रहा था।

"क्या हुआ—क्या तुम थक गए हो?" साबू ने पूछा, मानो यह स्वीकार कर रहा हो कि जब मैं बातचीत में अपनी बात नहीं रख पाया तो वह ऊब गया था।

“हाँ, काम में थोड़ी व्यस्तता रही है। लेकिन तुम हमेशा की तरह अच्छे दिख रहे हो, साबू।”

साबू खिलखिलाकर हंस पड़ी। "तुम्हें छुट्टी लेने की जरूरत है। मैं तो इतनी ताकतवर और इतनी तंदुरुस्त हूं कि मुझे छुट्टी की जरूरत ही नहीं है।"

मुझे लगता है कि तब यह मेरा भ्रम ही रहा होगा कि वह स्थायी छुट्टी पर है।

मैं छुट्टी जरूर लेता हूँ।

“क्या सच में? और फिर तुम तो हमेशा सटोरू के घर पर ही रहते हो। अगर कोई है जो कभी छुट्टी नहीं लेता, तो वो सटोरू ही है। मोमोको वापस तो आ गई, पर कुछ नहीं बदला। अगर वो ऐसे ही चलता रहा, तो वो फिर भाग जाएगी। मैं तो हमेशा अपनी

पत्नी को घुमाने ले जाता हूँ या बाहर खाना खिलाने ले जाता हूँ, उसे हर तरह की जगहों पर ले जाता हूँ ताकि वो खुश रहे।"

"आखिरकार, जब वह नाखुश होती है, तो वह तुम्हारी किताबें फेंक देती है," मालिक ने बुदबुदाते हुए कहा, जिससे साबू गुस्से से भड़क उठा।

"चुप रहो, बूढ़े आदमी!"

"यहाँ बूढ़ा व्यक्ति केवल आप ही हैं।"

"अरे हाँ, ये तो सच है। मैं ही वो बूढ़ा आदमी हूँ," साबू ने अपने गंजे सिर पर हाथ मारते हुए कहा। फिर वो पागलों की तरह ज़ोर से हंसने लगा। मुझे हैरानी हुई कि मालिक, जो एकदम भावहीन होकर गिलास चमका रहा था, वो भी अपनी हंसी नहीं रोक पाया। इन दोनों का रिश्ता अजीब था। ये समझना मुश्किल था कि वे एक-दूसरे को पसंद करते थे या नफ़रत।

फिर भी, साबू की बातों से मेरी एक चिंता दूर हो गई। मोमोको वापस आ गई थी, लेकिन साथ में समय बिताने के बावजूद, मेरे चाचा लगातार काम में लगे रहते थे। दुकान बंद रहने वाले दिनों में भी, वे अपनी खस्ताहाल छोटी गाड़ी में बैठकर किताबें खरीदने के लिए लंबी दूरी तय करते थे। ऐसा लगता था जैसे वे उनके साथ समय बिताने के लिए बिल्कुल भी समय नहीं निकाल रहे हों। वे मोमोको की सेहत को लेकर बेहद चिंतित थे, फिर भी मुझे ऐसा कोई संकेत नहीं दिख रहा था कि वे सचमुच उसकी देखभाल करने की कोशिश कर रहे हों।

कॉफी की चुस्की लेते हुए मैंने सोचा कि मेरे चाचा कितने लाचार हैं और आह भरी। "मेरे चाचा को कुछ समय की छुट्टी ले लेनी चाहिए। आखिर उन्हें बवासीर भी है।"

"ठीक है, उसके बवासीर के बारे में सोचो। उसे गर्म पानी के झरनों पर जाकर आराम करना चाहिए। अगर वह तुम्हारी चाची को भी साथ ले जाए तो कैसा रहेगा?"

मुझे लगा कि यह एक अच्छा विचार हो सकता है। मैं एकदम से अपनी थकान भूल गई और ऊर्जा से भर उठी।

"यह बहुत बढ़िया है। यह एक शानदार विचार है।"

मेरे चाचा दुकान में इतने व्यस्त थे कि उन्हें इस बात का एहसास ही नहीं हुआ, लेकिन क्या होगा अगर मैं उन्हें मेरे लिए किए गए सभी कामों के लिए धन्यवाद के रूप में एक छोटी सी यात्रा का तोहफा दूं? मोमोको ने अभी बताया कि उनकी शादी की सालगिरह नवंबर में है। शायद थोड़ा जल्दी हो, लेकिन मैं कह सकता हूँ कि यह मेरी

तरफ से उनके लिए तोहफा है। मैं अपने चाचा के लिए होटल और ट्रेन टिकट बुक करवा सकता हूँ, क्योंकि यह उनके लिए बहुत झंझट का काम था। इससे वे दोनों खुश हो जाएँगे।

“वाह, ये तो बढ़िया रहेगा ना?” दुकानदार ने कहा। “मोमोको के लिए तो ये अच्छा ही होगा, लेकिन साटोरू को भी कभी-कभी आराम करना चाहिए। वो भले ही बेफिक्र दिखता हो, पर जब बात किताबों की दुकान की आती है, तो वो अपने काम के प्रति इतना समर्पित हो जाता है कि शायद हद से ज्यादा ही कर रहा हो।”

उनकी बातों से मुझे हौसला मिला। और उसी क्षण मेरे मन में एक और विचार आया जिससे मुझे और भी खुशी हुई। मैं बेहद उत्साहित हो रहा था।

"साबु, कभी-कभी तुम समझदारी की बात कह देते हो।"

"अरे, 'कभी-कभार' से तुम्हारा क्या मतलब है?"

मैंने हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए कहा, "मुझे आपका धन्यवाद करना चाहिए।"

सबु को लोगों के ध्यान से थोड़ा शर्मिंदा होते देखना दुर्लभ था। वह मुँह फेरकर धीरे से बोला, "ठीक है, बस करो," और अपने शब्दों को चबाने लगा। ऐसा लगता था कि उसे धन्यवाद सुनने की आदत नहीं थी, शायद इसलिए क्योंकि वह हमेशा लोगों को चिढ़ाता रहता था।

“धन्यवाद, साबू।” मैंने थोड़ा और जोर देकर फिर से यही बात कही।

“नहीं, सच में, बस करो।” कॉफी मुंह के पास लाते हुए साबू सचमुच शर्मिंदा लग रहा था और बुदबुदा रहा था।

वह देखने में बेहद हास्यास्पद लग रहा था।

“देखो तुम हर समय हंसते रहते हो। तुम्हें दुनिया की कोई चिंता ही नहीं है।”

"हालांकि हाल ही में किसी ने मुझसे कहा था कि मैं बेहद निराशावादी व्यक्ति हूं।"

"लगता है उसकी आँखों में कुछ गड़बड़ है। तुम तो बस अपने स्लीप मॉन्स्टर वाले दिनों में ही उदास हुई थी। अब तो तुम बिल्कुल बेफिक्र हो।"

“अरे, शायद तुम सही हो। धन्यवाद, साबू।”

“मैंने तुमसे कहा था कि ऐसा करना बंद करो। इससे मुझे बहुत खुजली हो रही है। अगर तुम ऐसा करते रहे तो मैं एक शब्द भी नहीं बोलूंगा!” साबू ने अपनी पूरी पीठ खुजाते हुए कहा।

“ताकाको, मुझे लगता है कि तुमने भी साबू को चिढ़ाने का तरीका ढूंढ लिया है। और ये लो तुम्हारा नेपोलिटन।” मालिक ने मेरे सामने मेज पर ढेर सारे केचप के साथ मेरी स्पेगेटी रख दी।

मैंने एक तरह के सम्मोहन की अवस्था में भोजन किया।

जब तक मेरा पेट भर गया, मेरी थकान गायब हो चुकी थी, और वाडा नंबर 2 के प्रति मेरे मन में जो गुस्सा था, वह बहुत पहले ही शांत हो चुका था।

6

मेरे चाचा और मेरे बीच झगड़ा हो गया।

हम एक-दूसरे को जितने सालों से जानते थे, उतने सालों में पहली बार हमारे बीच इस तरह की कोई असली लड़ाई हुई थी। फिर भी, इस लड़ाई का कारण और जिस मुद्दे पर हम लड़े, वे दोनों ही मूल रूप से मूर्खतापूर्ण थे।

इसकी शुरुआत उपर्युक्त यात्रा से हुई।

सेवूर में मुझे यह विचार आने के बाद, मैं तुरंत घर गया और ऑनलाइन कई आशाजनक दिखने वाले गर्म पानी के रिसॉर्ट्स का चयन किया और सब कुछ इस तरह से व्यवस्थित किया कि एक बार जब वे अपना चयन कर लें, तो मैं आरक्षण कर दूंगा।

फिर अपनी छुट्टी के दिन दोपहर में, मैं उत्साह से झूमते हुए मोरिसाकी बुकशॉप की ओर चल पड़ा।

"रुको, क्या ये सभी कार्यदिवस नहीं हैं?"

“कोई बात नहीं। सप्ताहांत की तुलना में आज ज्यादा समय उपलब्ध है। और आपको दुकान से कुछ समय की छुट्टी की जरूरत है।”

लेकिन मैं किताबों की दुकान बंद नहीं कर सकता।

मुझे इसी प्रतिक्रिया की उम्मीद थी। मैंने गर्व से उससे कहा, "मुझे पता था कि तुम यही कहोगे। मैं तुम्हारे लिए दुकान का ख्याल रखूंगा।"

सच तो यह है कि मेरी इस योजना के पीछे एक छिपा हुआ मकसद था। सटोरू और मोमोको के बाहर जाने पर, उन्हें दुकान संभालने के लिए किसी की ज़रूरत तो होगी ही। मैं मन ही मन वहाँ कुछ दिन बिताना चाहता था। बेशक, अगर मैंने अपने चाचा से कहा होता, तो मैं जब चाहूँ दुकान के ऊपर दूसरी मंज़िल पर रह सकता था,

लेकिन बात बिल्कुल अलग होती। भले ही थोड़े समय के लिए ही सही, मैं सुबह से शाम तक दुकान संभालना चाहता था, और फिर उस कमरे में रात बिताना चाहता था जो अब मुझे पुरानी यादें दिलाता है। इस तरह मैं सब कुछ अच्छे से जी सकता था, और कोई "रॉय कहाँ है?" चिल्लाकर मेरा मूड खराब नहीं करता। मेरे चाचा को भी थोड़ा आराम मिल जाता, और सबसे अच्छी बात, मैं भी मज़े कर पाता। एक तीर से दो निशाने—कम से कम ऐसा होना तो चाहिए था।

"बिल्कुल नहीं। ताकाको, तुम्हारा अपना काम है।"

"मेरी छुट्टियां आपस में मेल खाती हैं, इसलिए कोई बात नहीं।"

“तो फिर, ताकाको, हम आपका यह उदार प्रस्ताव स्वीकार करते हैं,” पास ही बैठी मोमोको ने कहा। “कितनी अच्छी बात है।” उसकी आँखों में चमक थी और वह उतनी ही खुश लग रही थी जितनी मुझे उम्मीद थी।

“अरे, हम दोनों के लिए फैसला तुम ही मत करो,” मेरे चाचा ने बड़बड़ाते हुए कहा।

“इस विचार में क्या बुराई है? कभी-कभार छुट्टी लेना अच्छा होता है। वैसे भी, ताकाको ने बहुत मेहनत की है। वह हमारे लिए यह करना चाहती है।” मोमोको ने उसके गाल को जोर से चुटकी काटी, मानो कह रही हो, “कितना जिद्दी है।”

“नहीं। ये तो नामुमकिन है,” मेरे चाचा ने हठपूर्वक कहा, यहाँ तक कि उनका गाल लाल हो गया। “मेरा मतलब है, अगर कुछ गड़बड़ हो गई तो हम क्या करेंगे?”

तो क्या आप उस दिन भी नहीं जाएंगे जिस दिन दुकान बंद रहेगी?

“हाँ, बिल्कुल सही। मैंने योशिमुरा से वादा किया था कि अगले हफ्ते मैं साइतामा में उनके यहाँ से शेयर खरीदने जाऊँगा।”

“तो फिर कोई सामान्य कार्यदिवस ठीक रहेगा। अगर सिर्फ एक या दो दिन की बात है, तो मैं भी सब संभाल लूंगी। कृपया मुझ पर थोड़ा भरोसा रखें।”

“बिल्कुल नहीं,” मेरे चाचा ने साफ इनकार कर दिया।

"लेकिन क्यों नहीं?"

“कोई उम्मीद नहीं,” मोमोको ने हाथ ऊपर उठाते हुए कहा। “जब वह इस तरह हो जाता है, तो उससे बात करने का कोई मतलब नहीं है।”

मैंने थोड़े-बहुत विरोध की उम्मीद तो कर ली थी, लेकिन इतनी ज़िद की नहीं। हालाँकि मेरे इस प्रस्ताव के पीछे शायद कोई स्वार्थ रहा हो, लेकिन मैं सचमुच उन्हें

छुट्टी देकर अपना आभार व्यक्त करना चाहता था। मैं गहरी निराशा के साथ अपने चाचा को गुस्से से देखता रहा।

"क्या आपको यह विचार वाकई इतना नापसंद है?"

“नापसंद है? जो बात नामुमकिन है, वो नामुमकिन ही है।”

हे भगवान! मैं तुम्हें बर्दाश्त नहीं कर सकता!

"इसकी इजाज़त नहीं है!"

“तुम दोनों बच्चों जैसी हरकतें करना बंद करो,” मोमोको ने बीच में टोकते हुए अविश्वास भरी निगाहों से हमारी तरफ देखा। “अगर तुम्हें यही लगता है,” उसने आगे कहा, “तो ताकाको और मैं पिछली बार की तरह साथ चलेंगे। वैसे भी, मुझे उसके साथ इससे ज़्यादा मज़ा आएगा।”

तो फिर इसका क्या मतलब है?

वह सचमुच बिगड़े हुए बच्चे की तरह मुंह फुला रहा था। लेकिन मैं भी जिद्दी हो सकती हूँ। और मैं उसे छुट्टी दिलवाकर उस यात्रा पर ले जाने वाली थी।

बहुत लंबे समय तक, मेरे चाचा और मैं एक-दूसरे से बहस करते रहे, बार-बार इन अर्थहीन जवाबों को दोहराते रहे—"जाओ!" "यह संभव ही नहीं!"—जब तक कि मूल इरादा फीका नहीं पड़ गया, और हम बस एक-दूसरे से सिर टकराते रहे, और हममें से कोई भी हार मानने को तैयार नहीं था।

मुझे नहीं पता कि दुनिया में इससे ज्यादा अर्थहीन लड़ाई कभी हुई है या नहीं।

अंत में, मैंने गुस्से से चिल्लाकर कहा, "बस बहुत हो गया!" और दुकान से बाहर निकल गया। मैं आवेश में आ गया और दरवाज़ा इतनी ज़ोर से बंद कर दिया कि उसकी आवाज़ मेरी उम्मीद से कहीं ज़्यादा तेज़ थी, जिससे मैं चौंक गया, लेकिन मैंने ऐसे चला गया जैसे कुछ हुआ ही न हो।

इन सब के अगले दिन, मेरी मुलाकात वाडा से हुई। चार दिनों में हम पहली बार एक-दूसरे से मिले थे। स्वाभाविक रूप से, हमने सेवूर में मिलने का प्लान बनाया था। हालांकि, उस दिन वाडा के चेहरे पर एक अजीब सी जकड़न थी। फिर, जैसे ही वह अपनी सीट पर बैठने वाला था, उसने अचानक पूछा, "क्या हम थोड़ी देर बात कर सकते हैं?"

मैं एकदम घबरा गई। आखिर ये क्या हो सकता है? मुझे उम्मीद थी कि आज रात हम साथ में कुछ सुकून भरे पल बिताएंगे, इसलिए ये सब मेरे लिए एकदम अप्रत्याशित

था। "हूँ? क्या बात है?" मैंने घबराकर पूछा।

“क्या हम टेबल बदल सकते हैं?” उसने पूछा, वह भी काफी घबराया हुआ लग रहा था। इससे मुझे और भी ज्यादा बेचैनी महसूस हुई।

"उम, क्या यह अच्छी बातचीत होगी... या बुरी बातचीत?" मैंने खुद को सबसे बुरे के लिए तैयार करते हुए पूछा।

“क्या यह एक अच्छी बातचीत होगी? नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता।”

मैं क्या कर सकता था? मैंने क्या कर दिया था? जैसे ही मुझे घबराहट होने लगी, मेरे चाचा के साथ हुई मेरी मूर्खतापूर्ण लड़ाई का ख्याल मेरे दिमाग से गायब हो गया।

“हम कहाँ जा रहे हैं?”

“उम, मुझे नहीं पता। हमें क्या करना चाहिए? यह जगह ठीक है, वैसे। यह कोई खास बात नहीं है।”

मुझे अब कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। एक मिनट पहले वो बहुत घबराया हुआ लग रहा था, अब कह रहा था कि कोई खास बात नहीं है। जब उसने बोलना शुरू किया, तो एक पल के लिए मुझे लगा कि शायद वो शादी की बात करने वाला है। आजकल मेरी माँ मुझे फोन पर लगातार परेशान कर रही थी, हमेशा पूछती रहती थी, "तुम्हारी शादी कब हो रही है?"

मुझे अभी-अभी एहसास हुआ कि मैं उस उम्र में पहुँच गई हूँ जहाँ माता-पिता को इस तरह की बातों की चिंता होने लगती है। लेकिन क्या यह बातचीत बुरी होने वाली थी? ज़रूर इसी बारे में होगी। यह इतना भयानक था कि शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। मैं अब भी वाडा के साथ रहना चाहती थी। मैं अब भी उसके साथ हमेशा-हमेशा रहने का सपना देख रही थी। या शायद वह इस बात से भली-भांति वाकिफ था और दबाव महसूस कर रहा था।

"तुम हँसोगे नहीं, है ना?" वाडा ने गंभीरता से पूछा, इस बात से बेखबर कि मेरा दिमाग सुन्न हो गया था।

“जब तक मैं तुम्हारी बात नहीं सुन लेती, तब तक मैं पक्का नहीं कह सकती, लेकिन शायद मैं नहीं हँसूँगी,” मैंने कहा, पर सच में, हँसने की क्या बात थी? जब आपका प्रिय व्यक्ति ब्रेकअप की बात करने लगे, तो ज़ोर से हँसने के लिए हिम्मत चाहिए होती है।

“समझ गया,” वाडा ने शांत भाव से सहमति जताई। उनके चेहरे पर कोई भाव-भंगिमा नहीं बदली।

और फिर उन्होंने कुछ ऐसा कहा जिसकी मुझे बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी: "मैं एक उपन्यास लिखने के बारे में सोच रहा हूँ।"

“एक उपन्यास?” यह शब्द मेरे दिमाग में गूंज रहा था, लेकिन इसका अर्थ समझ में नहीं आ रहा था। एक नाह-वुल...

“हाँ। क्या यह अजीब लगता है?”

"अजीब? नहीं, लेकिन क्या आप इसी बारे में बात करना चाहते थे? बस इतना ही?"

"बस इतना ही था । । ।"

मैं अपनी कुर्सी से गिरने ही वाला था। वाडा को पढ़ना कभी-कभी सचमुच असंभव हो जाता था। मैं इतना थक गया था कि अंत में हंसने लगा।

"तुम हँसे थे," वाडा ने दुखी होकर कहा।

मैंने अपनी बात समझाने की पूरी कोशिश की। "यह उस तरह की हंसी नहीं है।"

“वो हंसी नहीं? हम किस तरह की हंसी की बात कर रहे हैं?” उसने गंभीरता से पूछा। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। हम दोनों की सोच बिल्कुल अलग थी।

मैंने पानी का गिलास खाली किया और राहत की सांस ली। इससे मुझे कुछ हद तक शांति मिली।

मैंने बुदबुदाते हुए कहा, "आपने कहा था कि यह बुरी तरह की बातचीत होने वाली है, इसलिए मैं घबरा गई थी।"

वाडा ने खाली निगाहों से मेरी तरफ देखा।

मैंने यह नहीं कहा कि यह बुरा था। मैंने सिर्फ इतना कहा कि यह अच्छा नहीं था।

"जिसका मतलब है कि यह बुरा होने वाला है।"

“क्या यह सही है? मुझे माफ करना। मेरा मतलब सिर्फ इतना था कि यह कोई खास अच्छी खबर नहीं थी।”

"वाडा, तुम कभी-कभी थोड़े अजीब हो जाते हो," मैंने व्यंग्यपूर्वक कहा, उसे यह कहकर चिढ़ाने की कोशिश कर रही थी कि उसने मुझे कितना घबरा दिया था।

“सचमुच?” वाडा ने अपनी बाहें मोड़ लीं और मेरी कही बात पर विचार करने लगा।

इस तरह से बात आगे नहीं बढ़ रही थी, इसलिए मैंने एक मिनट पहले कही गई उसकी बात पर वापस जाने की कोशिश की। "तुम उपन्यास लिखने जा रहे हो?"

“जी हां,” वाडा ने आखिरकार अपनी बात पर लौटते हुए कहा। “दरअसल, मैंने हाई स्कूल में लिखना शुरू किया था और लगभग दस साल तक लिखता रहा। लेकिन कुछ समय पहले ही मैंने लिखना पूरी तरह बंद कर दिया था। फिर मैं तुमसे, ताकाको, और मोरिसाकी बुकशॉप आने वाले सभी लोगों से मिला, और मुझे फिर से प्रेरणा मिली। अब मुझे बुकशॉप में घटित होने वाला एक उपन्यास लिखने की तीव्र इच्छा हो रही है। ज़ाहिर है, मेरा कोई पुरस्कार जीतने का इरादा नहीं है, न ही पेशेवर लेखक बनने का। मुझे लगा था कि लिखने की मेरी ललक खत्म हो गई है, लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ कि यह अभी भी मेरे अंदर है, और मुझे लगता है कि बिना पूरी कोशिश किए इसे यूं ही खत्म कर देना शर्म की बात होगी।” वह थोड़ा शर्मिंदा होकर हँसा।

मैं इतना सीधा-सादा हूँ कि एक मिनट पहले जो हुआ वो पूरी तरह भूल गया। वाडा की बातों ने मुझे झकझोर दिया। मुझे बहुत खुशी हुई कि उसने अपने मन की बात मुझसे खुलकर कह दी, जो वो काफी समय से अपने मन में सोच रहा था। वाडा हमेशा इतना गंभीर रहता है। भले ही ये मेरे लिए कोई बड़ी बात न हो, लेकिन ये साफ है कि उसे ये बात बताने में बहुत डर लग रहा था। बस इसी वजह से ये बात मेरे लिए महत्वपूर्ण थी।

मुझे लगता है यह एक शानदार विचार है। मैं मदद करना चाहता हूं।

“सच में? यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं किताबों की दुकान पर जाकर कुछ शोध करना चाहूंगी, ताकि कुछ विचार जुटा सकूं।”

"ओह।"

"कोई प्रॉब्लम है क्या?"

"मेरे चाचा सटोरू और मैं इस समय एक बड़े झगड़े के बीच में हैं।"

“मालिक से झगड़ा? मुझे तो यह जानकर हैरानी हुई कि आपको भी गुस्सा आ गया।”

ज़ाहिर है, उसे पता ही नहीं चला कि मैं एक मिनट पहले उससे थोड़ी नाराज़ थी। लेकिन समस्या सिर्फ़ यही नहीं थी। मेरे चाचा वाडा को पसंद नहीं कर रहे थे, क्योंकि वह मेरा बॉयफ्रेंड था। हमारे रिश्ते शुरू होने के तुरंत बाद, मैं उसे अपनी चाची और चाचा से मिलवाने के लिए दुकान पर ले गई थी। मेरे चाचा ने वाडा को पूरी तरह से

नज़रअंदाज़ कर दिया, यहाँ तक कि जब उसने उसे नमस्ते किया तब भी नहीं। वह एकदम शांत खड़ा रहा, मानो वह उन बंदरों की मूर्तियों में से एक हो जो बुराई को नहीं देखते।

“क्या आपको लगता है कि मालिक मुझे नापसंद करता है? क्या मैंने अनजाने में किसी बुकशॉप के नियम का उल्लंघन किया है?” वाडा ने अपना सिर एक तरफ झुकाते हुए और अपनी भौंहें सिकोड़ते हुए कहा।

“नहीं, बिलकुल नहीं। वह हमेशा से ऐसा ही है,” मैंने बड़ी बेताबी से झूठ बोलकर बात को संभालने की कोशिश करते हुए कहा।

घर लौटते समय, वाडा अपने आप से बुदबुदाता रहा कि उसने हमेशा मेरे चाचा को कितना बुद्धिमान और मिलनसार समझा था।

बाद में, जब मैं अकेले किताबों की दुकान पर गया और अपने चाचा के रवैये पर भड़क उठा, तो मेरे चाचा चिल्लाए, "वह मोरिसाकी किताबों की दुकान के लिए सही तरह का ग्राहक नहीं है।"

उसके बगल में खड़ी मोमोको ने झुंझलाहट में अपना सिर हिलाया। "अरे, तुम बस इतना तो नहीं चाहते कि वह ताकाको को तुमसे छीन ले।"

“बकवास मत करो। मैं बस इतना कह रहा हूँ कि मुझे ये पाखंडी बुद्धिजीवी बिल्कुल पसंद नहीं हैं। ऐसे लोग अमानवीय दरिंदे होते हैं जो लड़कियों को रुलाने में जरा भी संकोच नहीं करते।”

“राक्षस?” अब तो मैं बेहद क्रोधित हो गया था। मैं अवाक रह गया था।

मुझे डर है कि कहीं वो तुम्हें रुला न दे। और वो मुझे बार-बार मालिक क्यों कह रहा है? मुझे इससे घिन आती है। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती।

“तुम तो कमाल हो,” मोमोको ने कहा। “अब तुम्हारे लिए आगे बढ़ने और ताकाको को जाने देने का समय आ गया है। और वाडा तो वाकई बहुत अच्छा लड़का लगता है। वो लंबा और पतला है, और दिखने में तुमसे हज़ार गुना ज़्यादा सुंदर है।”

मैं किसी भी परिस्थिति में उसे दुकान में प्रवेश नहीं करने दूंगा।

“हम्म... जब आप कहते थे, ‘दुकान सबके लिए खुली है,’ तब तो आप बड़े ही शानदार लगते थे, लेकिन अब लगता है कि आप ग्राहकों को चुनना चाहते हैं?” मैंने ठंडे लहजे में कहा।

मेरे चाचा को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहें। फिर उन्होंने वही वाक्य दोहराया जो वे हमेशा तब कहते थे जब वे किसी बात को लेकर असमंजस में होते थे: "इंसान विरोधाभासों से भरे होते हैं।"

मैंने ठान लिया था कि मैं वाडा को उसका उपन्यास लिखने में हर हाल में मदद करूंगा। जब मैंने उसे यह प्रस्ताव दिया तो वाडा बहुत खुश हुआ। और जब वह खुश था, तो मुझे भी खुशी हुई।

“मालिक से जल्द ही सुलह कर लेना,” वाडा ने कहा जब हमने रेलवे स्टेशन के टर्नस्टाइल पर अलविदा कहा। “मेरी नॉवेल की वजह से नहीं, बस यूं ही।”

अगले दिन, काम से घर लौटते समय, मैं दुकान बंद होने के समय के आसपास मोरिसाकी बुकशॉप पर रुका। मैं अपने चाचा से सुलह करने आया था। यह थोड़ा परेशान करने वाला था, लेकिन मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। वैसे भी, वाडा ने मुझसे ऐसा करने को कहा था। अगर मैं मान जाता, तो बात यहीं खत्म हो जाती।

जब मोमोको ने मेरे चाचा के यात्रा पर न जाने का सुझाव दिया, तो वे सचमुच बहुत निराश दिखे। उन्हें मोमोको के लिए भी जाना ज़रूरी था। इसलिए मैंने अपनी रणनीति बदलने का फैसला किया।

"हे अंकल?"

"क्या?"

दुकान का ताला पहले से ही बंद था, इसलिए मैंने पीछे के दरवाजे से अंदर झाँका और उसे आवाज़ दी। उसकी आवाज़ में सतर्कता झलक रही थी। रात में दुकान के अंदर की सीलन भरी गंध और भी तेज़ हो जाती थी।

“अरे, क्या तुम थोड़ा भी निश्चिंत नहीं हो सकते?” जबरदस्ती मुस्कुराते हुए, मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने हाल ही में कोई अच्छी किताबें पढ़ी हैं, और इस तरह उनका मूड ठीक करने की कोशिश की। जब भी वो किताबों के बारे में बात करने लगते हैं, मेरे चाचा का मूड तुरंत ठीक हो जाता है। बात इतनी ही सरल है। जल्द ही वो पूरी तरह भूल गए कि हम लड़ रहे थे, और हम अपने रास्ते पर चल पड़े।

"अच्छा, कल एक ऐसी चीज आई है जो शायद आपके लिए एकदम सही हो।"

"असल में क्या?"

"यह एक क्लासिक रचना है जो आज भी पाठकों के दिलों को छू जाती है।"

मेरे चाचा ने किताबों के ढेर में से जुनइचिरो तानिजाकी की 'इन प्रेज़ ऑफ़ शैडोज़' निकाली और मुझे दे दी।

“यह एक निबंध है, है ना? शीर्षक का क्या अर्थ है?”

हम्म... अगर मैं इसे बहुत सरल शब्दों में कहूँ, तो यह इस बारे में है कि हमें अपने रोज़मर्रा के जीवन में सिर्फ़ रोशनी पर ही ध्यान नहीं देना चाहिए। हमें परछाइयों पर भी गौर करना चाहिए। और इस विचार के पीछे एक पूरी सौंदर्यबोध की भावना छिपी है। और मुझे लगता है कि इसमें जापानी सौंदर्यबोध का भी कुछ खास अनुभव है। लेकिन यह इससे कहीं ज़्यादा गहरा है। इसे पढ़ना थोड़ा मुश्किल हो सकता है, लेकिन यह इतनी अच्छी किताब है कि आपको इसे ज़रूर पढ़ना चाहिए।

“धन्यवाद। मैं इसे पढ़ने के लिए पर्याप्त समय निकाल लूंगा।”

“इसे अभी पढ़ो,” उन्होंने तेज़ी से झुकते हुए आग्रह किया। ऐसा लग रहा था मानो वे मेरे बगल में बैठकर किताब पढ़ना चाहते हों ताकि वे मुझे समझा सकें। मैं पीछे हट गई और अपने चाचा से दूर हो गई।

मैं अभी ठीक हूँ। मैं इसे जल्द ही ध्यान से पढ़ूंगा, किसी शांत और निर्बाध जगह पर।

“ऐसा क्यों? अगर आप इसे अभी पढ़ना चाहते हैं, तो मैं दुकान दोबारा खोल सकता हूँ।”

"इसीलिए मैं कह रहा था कि मैं इसे किसी शांत जगह पर पढ़ना चाहता हूं।"

"यहाँ से अधिक शांत जगह आपको कहाँ मिलेगी?"

जाहिर तौर पर, उसे कभी यह ख्याल भी नहीं आया होगा कि चुप्पी तोड़ने का दोषी वही था।

“तो, उस यात्रा के बारे में,” मैंने किताब को शेल्फ पर रखते हुए कहा। मेरे चाचा का चेहरा तुरंत सख्त हो गया, मानो कह रहे हों, फिर वही बात।

“अगर तुम नहीं जा सकती तो कोई बात नहीं,” मैंने भूमिका निभाते हुए कहा, हालाँकि मुझे इस बात पर ज़रा भी यकीन नहीं था। मैंने अपनी नज़रें झुका लीं। “मुझे हमेशा ऐसा लगता है कि मैं तुम पर बहुत निर्भर रहती हूँ। मैं बस अपनी कृतज्ञता दिखाने के लिए कुछ करना चाहती थी। इसलिए, अगर मुमकिन नहीं है तो मैं तुमसे ऐसा करने के लिए नहीं कह रही हूँ, लेकिन मोमोको जाना चाहती है, और अगर तुम

दोनों साथ में कुछ समय बिता सको तो बहुत अच्छा होगा।” मैंने पहले से तैयार की हुई पंक्तियाँ बोलीं, और उनमें जितना हो सके उतनी भावनाएँ भर दीं।

मैं चाहता हूँ कि तुम दुकान को बहुत लंबे समय तक चला सको। और इसके लिए तुम्हें छुट्टी लेना याद रखना होगा। नहीं तो तुम्हारी सेहत खराब हो जाएगी। और अगर तुम बहुत ज्यादा काम करने से मर गए, तो मुझे लगता है मेरा दिल फट जाएगा।

उन्हें ये सब बताते हुए मुझे असहज महसूस होने लगा था। पहली बात तो ये कि मेरे चाचा ऐसे इंसान हैं जिन्हें आप चाहकर भी मार नहीं सकते। उनके अत्यधिक काम के बोझ से मर जाने की बात पर यकीन करना नामुमकिन था। लेकिन वो इस तरीके से बेहद आसानी से प्रभावित हो गए। देखते ही देखते, उनकी आँखों में आँसू आ गए और वो मेरी तरफ देखने लगे।

“ताकाको, तुम...”

तो, आप समझ गए होंगे कि मेरा मतलब क्या है?

मेरे चाचा ने भावुक होकर कई बार सिर हिलाया। "क्या यह सच है? क्या मैं सच में आपके लिए इतना मायने रखता हूँ?"

“तो इसीलिए तो आपको जाना चाहिए,” मैंने बिना समय गंवाए कहा।

“आह, हम्म-हम्म,” मेरे चाचा ने अनायास ही जवाब दिया।

और मोमोको का भी अच्छे से ख्याल रखना। अगले हफ्ते कैसा रहेगा? मैं तब उपलब्ध हूँ।

“क्या? आह्ह्ह्ह।” मेरे चाचा अनिच्छा से मान गए, हालाँकि उनके चेहरे के भाव देखकर ऐसा लग रहा था कि वे पूरी तरह आश्वस्त नहीं थे। मेरी रणनीति सफल हो गई थी।

हम दुकान से निकले और साथ-साथ स्टेशन की ओर चल पड़े। पूरे रास्ते वह बुदबुदाता रहा, "क्या तुम्हें वाकई यकीन है कि तुम अकेले दुकान चला सकते हो? मुझे नहीं पता।"

मैं सीधा खड़ा हो गया और मैंने कहा, "मुझ पर भरोसा करो," यह दिखाते हुए कि मैं कितना आत्मविश्वासी था।

रात होते ही बाहर कड़ाके की ठंड हो गई। मैंने अपने गले में स्कार्फ़ और कसकर लपेट लिया। मेरे चाचा मेरे बगल में बड़बड़ा रहे थे, उनकी साँसों से धुएँ के सफेद गुबार उठ रहे थे जो कुछ पल के लिए हवा में ठहरते और फिर रात के अंधेरे में गायब हो

जाते।

7

यात्रा वाले दिन, मैं सुबह उठा और दो दिन के कपड़ों से भरा बैग लेकर मोरिसाकी बुकशॉप की ओर चल पड़ा। मेरे चाचा और चाची सीधे घर से निकल रहे थे, इसलिए मुझे सुबह से शाम तक दुकान संभालनी थी। यह सोचकर ही मेरी धड़कन तेज़ हो गई।

शायद इसी वजह से मैं अपने घर से करीब एक घंटा पहले निकल गया, जिसका मतलब था कि मैं सीधे सुबह की भीड़भाड़ में पहुँच गया। वैसे तो मुझे दस बजे तक काम पर नहीं पहुँचना होता था, यानी मैं भीड़भाड़ से बस थोड़ा सा बच गया। तो ये पहली बार था जब मैं अपनी पुरानी नौकरी के दिनों के बाद से इन भीड़ भरी ट्रेनों में वापस आया था। मुझे तब तक भीड़ भरी ट्रेन में धक्का-मुक्की करना सीख जाना चाहिए था, लेकिन इतने लंबे समय बाद मैं ये पूरी तरह भूल गया था। ट्रेन की गर्मी में, लोगों की भीड़ में इधर-उधर हिलते हुए, और हवा के बहाव में बहते हुए, मैं लगभग तीस बार खुद से चीखा होगा।

जब मैं हर सुबह भीड़ भरी ट्रेनों में इधर-उधर हिलते-डुलते बिताता था, तब मेरी मुलाकात कुछ अजीब लोगों से हुई थी। ऐसे लोग जो आपस में कुछ बुदबुदाते थे, या गुस्से में चिल्लाते थे, ऐसे लोग जो साफ़ तौर पर दुर्भावना से मुझ पर टूट पड़ते थे। हमेशा कोई न कोई झगड़ा होता रहता था, और जब भी किसी पर छेड़छाड़ का आरोप लगता या लड़ाई छिड़ जाती, तो पूरी ट्रेन का डिब्बा उसमें शामिल हो जाता था। सुबह-सुबह ऐसा कुछ देखना मुझे बहुत थका देता था। अब जब मैं कुछ समय बाद फिर से उसी खतरनाक माहौल में ट्रेन के डिब्बे में बैठा हूँ, तो मेरा यह अनुभव अनुचित नहीं लगता। हर सुबह ऐसी परेशानी में फँसे रहना वाकई दिमाग पर बुरा असर डाल सकता है।

पंद्रह मिनट तक नरक जैसी स्थिति झेलने के बाद, मैं जिम्बोचो में ट्रेन से उतरा और किताबों की दुकान की ओर चल पड़ा। अभी नौ बज ही रहे थे। दुकान दस बजे तक नहीं खुलती थी, इसलिए मैं बहुत जल्दी पहुँच गया था।

और कुछ करने को न होने के कारण, मैं अंदर जाकर हर कोने-कोने की सफाई करने लगा। सफाई में इतना मग्न हो गया कि पता ही नहीं चला और दुकान खोलने का

समय हो गया।

“ठीक है, चलो शुरू करते हैं,” मैंने जोश से कहा और शटर उठाकर अपना पहला दिन शुरू किया। सुबह दुकान खोलनी थी, दिन भर दुकान संभालनी थी, और फिर रात को दिन भर की कमाई तिजोरी में रखनी थी और शटर बंद कर देना था। ज़ाहिर है, मैं किसी भी कीमती किताब की कीमत नहीं बता सकता था, इसलिए अगर कोई ग्राहक उन्हें बेचना चाहे, तो मैं उन्हें स्थिति बताकर किताबें अपने पास रख लूँगा। जब तक यह सिर्फ़ दो-तीन दिन का काम था, मुझे लगा कि मैं अकेले ही दुकान को अच्छे से चला लूँगा।

गली में चारों ओर देखते हुए मैंने पाया कि अन्य दुकानें भी खुलने की तैयारी कर रही थीं। पास ही कहीं से मीठे जैतून के पेड़ की मनमोहक खुशबू आ रही थी। सड़क के दूसरी ओर स्थित सबसे नज़दीकी किताबों की दुकान के मालिक श्री इजिमा से मेरी नज़रें मिलीं, इसलिए मैंने उन्हें सुप्रभात कहा।

“आज सटोरू कहाँ है?”

वह यात्रा पर निकल गया।

“अरे बाप रे!” मालिक ने हैरानी से आँखें चौड़ी करते हुए कहा। “यह तो बहुत ही असामान्य बात है। आज बारिश होने वाली है, है ना?”

मैंने मौसम के लिए पहले से ही माफी मांगते हुए कहा, "मुझे इसके लिए बहुत खेद है।"

हमेशा की तरह, सुबह के समय बहुत कम ग्राहक आए। ऐसा ही होता था, और मुझे इसकी आदत हो चुकी थी। मैं आराम से बैठकर ग्राहकों के आने का इंतज़ार करता था। सच कहूँ तो, मैं किताबों से घिरे रहने में ही खुश था, और अगर कोई ग्राहक न भी आता तो भी मुझे उतना ही सुकून मिलता।

फिर भी, उस सुबह मेरे चाचा का तीन बार फोन करना मेरे लिए असहनीय था। ऐसा लग रहा था कि किताबों की दुकान से दूर होने के कारण वे बहुत चिंतित थे। मैं उनसे बात करते-करते थक गया था, इसलिए मैंने उन्हें दिलासा देने की कोशिश की और जल्दी से फोन काट दिया।

समय बहुत धीरे-धीरे बीत रहा था। दोपहर से पहले का समय मैंने उन ग्राहकों से निपटने में बिताया जो बहुत कम संख्या में आते थे, दीवार के किनारे ढेर लगी किताबों

की धूल झाड़ने और उन्हें व्यवस्थित करने में बिताया, और जो भी किताब मेरी नज़र में आती, उसे पलटकर देखने में भी समय बिताया।

मैंने अपने चाचा की प्रशंसा सुनकर जुनइचिरो तानिज़ाकी की किताब 'इन प्रेज़ ऑफ़ शैडोज़' भी पढ़ने का सोचा। यह किताब छायाओं के अर्थ का गहन विश्लेषण है, जो तानिज़ाकी के अपने अनुभवों के वर्णन से उभरता है। यह जापान के शहरों की चकाचौंध पर संदेह करने का तर्क प्रस्तुत करती है। उनकी लेखन शैली इतनी प्रभावशाली थी कि मुझे लगा मानो वे मेरे ठीक बगल में खड़े होकर मुझसे बात कर रहे हों। किताब में इतना ज़बरदस्त आकर्षण था कि मुझे पता भी नहीं चला और मैं उसमें पूरी तरह डूब गया।

जब आखिरकार दोपहर हुई, तो सचमुच बारिश होने लगी। पहले तो हल्की बूंदा-बांदी हुई, लेकिन धीरे-धीरे तेज होती गई, और देखते ही देखते साकुरा स्ट्रीट पूरी तरह बारिश से काली हो गई।

इस इलाके में पुरानी किताबों की दुकानों के लिए बारिश से बड़ा कोई दुश्मन नहीं है। अगर किताबें भीग जाएं तो यह एक गंभीर समस्या बन जाती है, साथ ही दुकान में आने वाले लोगों की संख्या भी तुरंत कम हो जाती है। जब मैं किताबों की गाड़ियां अंदर लाने के लिए बाहर भागा, तो मैंने देखा कि सड़क पर बाकी सभी किताबों की दुकानों के सामने भी लोग अपना सामान अंदर लाने के लिए होड़ लगा रहे थे।

यहां तक कि श्री इजिमा, जो पहले बारिश को लेकर मजाक कर रहे थे, अब बारिश से जूझ रहे थे।

हम दोनों अपनी-अपनी गाड़ियां छत के नीचे खींचते हुए जोर-जोर से हंसे।

उन्होंने कहा, "यह सचमुच नीचे गिर रहा है।"

“सचमुच ऐसा ही है, है ना?”

आसमान में घने बादल छा गए, जिससे तेज़ बारिश होने लगी। शायद चाचा को यात्रा पर भेजना मेरी गलती थी। उम्मीद है वहाँ बारिश न हो रही हो। "हम्म," मैंने मन ही मन कहा। "लगता है दिन के अंत तक मेरे पास करने को कुछ नहीं होगा।" मैं अंदर चला गया।

जैसे ही मैंने दरवाजा बंद किया, बारिश की तेज आवाज धीमी फुसफुसाहट में बदल गई। बारिश से भीगी सड़क की हल्की सी खुशबू दुकान में समा गई, जहाँ वह पुरानी किताबों की महक के साथ मिल गई।

ग्राहकों का आना-जाना पूरी तरह रुक गया।

कुछ देर तक मैं काउंटर के पीछे अपनी हमेशा वाली जगह पर आँखें बंद करके बैठा रहा। चारों ओर सन्नाटा था, एकदम सन्नाटा। अगर मैं ध्यान लगाता, तो हल्की-हल्की आवाज़ें सुनाई देतीं—खिड़की पर बारिश की बूँदों की आवाज़, बारिश में गाड़ियों के चलने की धीमी गूंज। तभी मुझे एक अजीब सा एहसास हुआ कि मैं किताबों की दुकान का हिस्सा बन गया हूँ। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा अस्तित्व मिटने लगा है और मेरी चेतना फैलने लगी है।

नहीं, नहीं, मुझे नींद नहीं आ सकती, मैंने सोचा। मैं ही वह व्यक्ति हूँ जिस पर उन्होंने दुकान की देखभाल का जिम्मा सौंपा है। चाहे इस समय मेरे पास कितना भी खाली समय क्यों न हो।

लेकिन इतने सालों से मौजूद किताबों से घिरे होने से समय के बीतने का मेरा अनुभव ही बदल गया। मुझे स्पष्ट रूप से महसूस हुआ कि मैं समय के भीतर मौजूद हूँ। अगर कुछ पेशे ऐसे होते हैं जिनमें स्थिरता ज़रूरी होती है और कुछ ऐसे जिनमें सक्रियता चाहिए, तो पुरानी किताबों की दुकान चलाना पहली श्रेणी में आता है। बेशक, नौकरियों को इस तरह से दो भागों में बाँटना संभव नहीं है। लेकिन यह सच है कि इन किताबों की दुकानों की जो छवि मन में बनती है, वह स्थिरता और सुकून के एहसास पर आधारित होती है। मुझे लगा जैसे मैं यहाँ बिल्कुल फिट बैठती हूँ, जैसे मुझे कोई ऐसी जगह मिल गई हो जो मेरे आकार और रूप के बिल्कुल अनुकूल हो। और मैं हमेशा इसी तरह रहना चाहती थी।

क्या मेरे चाचाजी ने कभी ऐसा महसूस किया था? उनके लिए यह भावना और भी तीव्र रही होगी। यह दुकान उन्हें मेरे दादाजी और परदादाजी से विरासत में मिली थी। मेरे चाचाजी को किताबों की दुकान चलाने पर गर्व होने का एक कारण यह भी था कि वे उन लोगों का बहुत सम्मान करते थे जिन्होंने उनसे पहले इसकी देखभाल की थी।

बारिश से धुंधली खिड़की से बाहर देखते हुए मेरे मन में यही विचार उमड़ रहे थे।

चार बजे के बाद, जैसे ही बारिश हल्की हुई, अचानक मुझे दरवाजा खुलने की खड़खड़ाहट सुनाई दी।

"अरे, बीच में आने के लिए क्षमा करें।"

मुझे इतने लंबे समय से कोई ग्राहक नहीं मिला था कि मैं अपनी कुर्सी से उछल पड़ा। लेकिन जब मुझे एहसास हुआ कि यह साबू है, तो मैं वापस बैठ गया और अपने

चाचा की तरह बुदबुदाते हुए बोला, "ओह बॉय।" लगता है साबू मुझसे मिलने और समय बिताने आया था। उसके चेहरे पर एक शरारती मुस्कान थी।

"आज कैसा चल रहा है?" साबू ने उसी लहजे में पूछा, जैसा वह हमेशा मेरे चाचा से यही सवाल पूछते समय करता था।

मैंने जवाब दिया, "ऐसा नहीं है।"

साबू ने हमेशा की तरह खिलखिलाकर हँसा। उसकी हँसी की आवाज़ दुकान के अंदर गूँज उठी। कुछ देर पहले तक यहाँ इतनी शांति थी, इसलिए मुझे यह सब थोड़ा अजीब लगा। लोगों की आवाज़ों से भर जाने पर दुकान का माहौल बिल्कुल बदल गया था। और यह कोई बुरी बात नहीं थी।

“तुम तो बड़े जिज्ञासु व्यक्ति हो, है ना?” उसने कहा। “तुम हर हफ्ते इस दुकान पर आते हो जहाँ कोई नहीं आता।”

“तुम ही जिज्ञासु हो। तुम तो हर रोज इस दुकान पर आते हो।”

"अरे रुक जाओ, तुम मुझे शर्मिंदा कर रहे हो।"

आपको इतना विनम्र नहीं होना चाहिए।

मैं हार मानता हूँ। तुम जीत गए।

“एक बार फिर। और याद है, आपने कहा था कि आपको कोई आपत्ति नहीं है।”

चाय की चुस्की लेते हुए हम इसी तरह आपस में बेतुकी बातें करते रहे, चेहरे पर कोई भाव नहीं था। हमेशा की तरह साबू बिना कुछ खरीदे ही चला गया। आखिरकार सूरज डूब गया और बारिश, जो थोड़ी कम हो गई थी, पूरी तरह रुक गई। दीवार पर लगी घड़ी मिनट गिन रही थी और जब मैंने ऊपर देखा तो सात बज चुके थे—दुकान बंद करने का समय हो गया था। दिन लंबा लगा था, लेकिन पता ही नहीं चला और खत्म हो गया। मैं धीरे से उठा और दुकान बंद करने की तैयारी करने लगा।

ठीक उसी समय, मेरे चाचा ने फिर से फोन किया, मानो उन्होंने बिल्कुल सटीक समय का इंतज़ार किया हो। मैंने उन्हें बताया कि मैंने बिना किसी समस्या के दुकान बंद कर दी है, और उनसे अनुरोध किया कि वे अगले दिन केवल एक बार ही मुझे फोन करें।

“ठीक है, चलो बीच का रास्ता निकालते हैं। तीन बार!” मेरे चाचा ने फोन पर चिल्लाकर कहा। हे भगवान, आखिर हम किस बात का बीच का रास्ता निकाल रहे थे?

दूसरी मंज़िल का कमरा पहले से भी ज़्यादा आरामदायक था। मोमोको, जो कुछ समय यहाँ रुकी थी, अब कुनिताची में मेरे चाचा के साथ रह रही थी, इसलिए कोई भी उस कमरे का इस्तेमाल नहीं कर रहा था। फिर भी, कमरा साफ़-सुथरा रखा गया था और किताबें भी करीने से सजी हुई थीं, शायद मोमोको की वजह से। खिड़की के पास गेरेनियम और जरबेरा डेज़ी के गमले सजे थे, और खिड़की के फ्रेम पर मोमोको का लिखा एक नोट लगा था जिसमें उन्हें पानी देने के निर्देश थे। मुझे लगा कि अगर मैं किसी तरह उन्हें पानी देना भूल गया, तो बहुत बड़ी मुसीबत हो जाएगी। और कमरे के बीचोंबीच, बड़े करीने से सजी हुई, वह पुरानी, खूब इस्तेमाल की हुई छोटी खाने की मेज़ थी।

मैंने अंदर के छोटे से कमरे में झाँकने के लिए स्लाइडिंग दरवाज़ा थोड़ा सा खोला और कुछ डरावना देखा। धुंधली रोशनी में, मैंने देखा कि कमरा मेरे चाचा के संग्रह की किताबों से खचाखच भरा हुआ था। दरवाज़े के पीछे चुपचाप मंडराती उन सभी किताबों की काली परछाईं बेहद डरावनी थी। मैंने दरवाज़ा धीरे से बंद कर दिया, मानो मैंने कुछ देखा ही न हो।

ठीक उसी समय, डाइनिंग टेबल पर रखा मेरा मोबाइल फोन बजने लगा और मैं चौंक गया। जब मैंने स्क्रीन पर देखा तो पता चला कि कॉल वाडा का था। मैंने उसे बताया था कि आज दुकान संभालने का मेरा पहला दिन है, इसलिए शायद वह मेरे बारे में चिंतित था।

इसका परिणाम कैसा रहा?

“बहुत बढ़िया। आपका क्या हाल है? काम में व्यस्त हैं क्या?”

मैं पहले से ही बहुत व्यस्त हूँ।

“आराम से रहो। लगता है तुम अपने उपन्यास लिखने के लिए बहुत व्यस्त हो।”

मैं अपना समय ले रहा हूँ, इसलिए कोई समस्या नहीं है। खैर, मुझे काम पर वापस जाना चाहिए।

“ठीक है। ज्यादा मेहनत मत करो। फोन करने के लिए धन्यवाद। मुझे पता है तुम व्यस्त हो।”

उसके बाद, मैंने अपना साधारण खाना खाया, नहाया, और फिर मेरा सारा काम लगभग पूरा हो गया। मैं अपने गद्दे पर लेट गया, पास की अलमारियों से एक किताब उठाई और उसके पन्ने पलटने लगा, लेकिन नींद इतनी तेज़ थी कि ध्यान केंद्रित नहीं

कर पा रहा था। फिर भी, इस हालत में सोना मुझे अच्छा नहीं लग रहा था। मेरे ऊपर छत पर एक छोटी सी मकड़ी धीरे-धीरे रेंग रही थी। मैं कुछ देर तक अनमने ढंग से उसे देखता रहा।

कुछ देर बाद, मैं अचानक उठा और खिड़की खोल दी। ठंडी पतझड़ की हवा अंदर आ गई। दूर आसमान में चाँद की चाँदी जैसी रोशनी दिखाई दे रही थी। आस-पड़ोस का शोरगुल दूर से सुनाई दे रहा था। गुजरती कारों की धीमी गड़गड़ाहट, गली में चलते लोगों की बातें। फिर अचानक किसी के शटर बंद करने की खड़खड़ाहट सुनाई दी। आवाज़ थमने के बाद, सन्नाटा गहरा गया।

परछाइयों की प्रशंसा में।

मुझे यकीन नहीं था कि यह इसके लिए सही समय है या नहीं, लेकिन मैंने खुद को ये शब्द गुनगुनाते हुए पाया। फिर मैंने कमरे की बत्तियाँ बंद कर दीं, खिड़की के पास बैठ गया और अपनी आँखें बंद कर लीं।

मैंने इस तरह कितनी ही लंबी रातें बिताई थीं। तब मैं सोच भी नहीं सकता था कि मेरे जीवन का वो दौर कभी खत्म होगा। लेकिन वो दिन बीत गए। मेरे जीवन का वो दौर अब दूर चला गया है। अब अतीत में लौटना संभव नहीं है। जब मैंने खुद से ये कहा, तो मेरे सीने में एक मीठा सा दुख फैल गया।

लेकिन मैंने सोचा, उस पर ज्यादा सोचने का कोई फायदा नहीं है। मैं अब बहुत खुश हूं।

अब तक मेरा जीवन सरल था, लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि यह परेशानियों से मुक्त था। मैंने भी अपने जीवन में कई कष्ट और असफलताएँ झेली थीं। मैं एक गहरे, अंधकारमय सागर की तलहटी में डूब गया था, और कुछ समय के लिए मुझे लगा कि मैं कभी ऊपर नहीं आना चाहता। लेकिन आज रात की ऐसी शांत रात में, मुझे इस बात का गहरा एहसास हुआ कि मैं कितना भाग्यशाली रहा हूँ, और रास्ते में मिले सभी अद्भुत लोगों ने मुझे कितना सहारा दिया है। सचमुच, मैं कुछ अद्भुत लोगों से मिला था। मैंने अपनी आँखें थोड़ी सी खोलीं और खिड़की से आती चाँदनी देखी। उस कोमल रोशनी में बैठे-बैठे, मुझे अपने भीतर धीरे-धीरे खुशी उमड़ती हुई महसूस हुई।

फिर, किसी कारणवश, मेरे बचपन की यादें एक-एक करके मेरे सामने आने लगीं। ऐसा लगा जैसे कोई बंद दरवाजा अचानक खुल गया हो।

मैं अपने तरीके से एक दुखी बच्चा था। या शायद मुझे कहना चाहिए कि मैं बचपन में वयस्क होने की तुलना में कहीं अधिक परेशान था। मुझे लगता है कि इसका एक कारण यह था कि मैं इकलौता बच्चा था और अंतर्मुखी स्वभाव का था, और मुझे अपने माता-पिता के साथ ज्यादा समय बिताने का मौका नहीं मिला क्योंकि वे दोनों काम में व्यस्त रहते थे। इसका एक कारण यह भी था कि मैं अपनी चिंता और उदासी से ठीक से निपट नहीं पाया।

क्योंकि मैं इस बारे में किसी से बात नहीं कर सकती थी, इसलिए मुझे अपनी समस्याओं से निकलने का कोई रास्ता नहीं मिला, और धीरे-धीरे मेरे अंदर उदासी बढ़ती गई, यहाँ तक कि हर रात बिस्तर पर जाते समय ऐसा लगता था जैसे कोई बड़ा गुब्बारा मुझ पर दबाव डाल रहा हो। बेशक, ये सब छोटी-छोटी बातें होती थीं। अब जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ, तो सब तुच्छ लगती हैं। जैसे कि जब मैं गर्मियों की छुट्टियों के ठीक बाद जिम क्लास में होने वाले टेस्ट के बारे में सोचकर उदास हो गई थी, जिसमें यह देखना था कि क्या मैं खेल के मैदान की रेलिंग पर पीछे की ओर घूम सकती हूँ। या जब मैंने यह अफवाह सुनी कि लोग चेरी के पेड़ों के नीचे लाशें दफनाते हैं, और मैं अपने घर के पीछे वाले चेरी के पेड़ से डरने लगी। या जब मेरी क्लास के लड़कों ने मुझे "बोन्स" (क्योंकि मैं लंबी और थोड़ी दुबली थी) उपनाम दिया, तो मैं निराश हो गई।

उन दिनों मुझे सबसे ज़्यादा खुशी इस बात की होती थी कि लंबी छुट्टियों में मैं अपने दादाजी के घर वापस जाऊं। मेरे चाचा सटोरू वहाँ मेरा इंतज़ार करते रहते थे। यह मेरे लिए बहुत बड़ी राहत थी। मेरे लिए, चाचा के कमरे में उनके साथ रहना दुनिया की चिंताओं से बचने का एक मज़बूत सहारा था। वहाँ पहुँचते ही मैं चैन की साँस ले सकता था। फिर चिंता करने की कोई बात नहीं रहती थी।

अपने कमरे में, मेरे चाचा बड़े प्यार से मेरी बातें सुनते थे, जब मैं तरह-तरह की बातें करती रहती थी। जब मैं बहुत ज़्यादा बोलने से थक जाती, तो वो अपने संग्रह से कोई बढ़िया रिकॉर्ड निकालते और हम दोनों ज़ोर-ज़ोर से गाने लगते। हम बहुत शोर मचाते थे, और कभी-कभी तो दादाजी भी हम पर चिल्लाते थे, जो हॉल से दौड़ते हुए आते थे जहाँ हमारे सारे रिश्तेदार इकट्ठा होते थे, उनका चेहरा गुस्से से लाल होता था। मेरे चाचा और मैं मासूमियत का भाव दिखाते और माफ़ी माँगने का नाटक करते, लेकिन जैसे ही हम दोनों अकेले होते, हम खिलखिलाकर हँसने लगते। स्कूल में मैं हमेशा बहुत

शर्मीली रहती थी, लेकिन अपने चाचा के साथ मैं इतनी बहादुर महसूस करती थी कि ऐसा लगता था जैसे मैं अपनी सामान्य अवस्था में नहीं हूँ।

जिस चिंता को मैं शब्दों में व्यक्त करने में असमर्थ था, वह थोड़ी कम होती प्रतीत हुई। अब तक जो दुनिया मुझे क्षीण सी लग रही थी, वह मेरे चाचा के साथ अचानक मेरे लिए पूरी तरह खुल गई।

पीछे मुड़कर देखने पर मुझे एहसास हुआ कि उस समय की मेरे चाचा से जुड़ी सारी यादें मुझे किसी गर्म, धूप से जगमगाती जगह पर होने का एहसास दिलाती थीं। क्या यह उदासी थी? क्या मैं समय में पीछे जाना चाहती थी? मुझे पक्का पता नहीं था, लेकिन किसी तरह मेरी आँखों में आंसू आ रहे थे।

चांदनी से जगमगाते उस कमरे में, मैंने उन मीठी यादों को फिर से ताजा किया जो मेरे भीतर एक दरवाजे के पीछे सुप्त पड़ी थीं, और ऐसा लगा जैसे मैं एक के बाद एक किताब खोल रहा था, पन्ने पलट रहा था जब तक कि आखिरकार मुझे नींद नहीं आ गई।

8

अगली सुबह मौसम सुहाना हो गया। शरद ऋतु के साफ आसमान में बिखरे हुए बादल तैर रहे थे। सुबह की तेज रोशनी में पानी के छोटे-छोटे गड्ढे चमक रहे थे।

“आज बारिश नहीं होगी, है ना?” श्री इजिमा ने सड़क के दूसरी तरफ से कहा, उनकी आवाज़ में उतना आत्मविश्वास नहीं था।

मुझे ऐसा नहीं लगता, लेकिन...

“अगर आज बारिश हुई और मुझे सटोरू के दोबारा यात्रा पर जाने की खबर मिली, तो मैं उसे रोकने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दूंगा,” श्री इजिमा ने दुकान खोलने की तैयारी करते हुए कहा। मुझे समझ नहीं आया कि वह मजाक कर रहे थे या नहीं।

सौभाग्यवश, आसमान साफ रहा और मेरी आशंकाएं दूर हो गईं। इसी वजह से कारोबार कल से कहीं बेहतर रहा। सुबह से ही ग्राहकों का तांता लगा रहा। मैंने तो हिदेओ कोबायाशी की एक किताब भी बेच दी, जिसकी कीमत पाँच हज़ार येन थी।

फिर, दोपहर से कुछ समय पहले, दो लड़कियाँ मुझसे मिलने आईं जो कॉलेज की छात्राएँ लग रही थीं। दोनों दिखने में एक-दूसरे से मिलती-जुलती थीं, लेकिन फूलों वाली

पोशाक वाली लड़की के गले में एक महंगा सा दिखने वाला सिंगल-रिफ्लेक्स कैमरा लटका हुआ था। दोनों ने ध्यान से एक-एक किताब देखी और फिर मुझसे पूछा कि क्या मैं कुछ सुझाव दे सकता हूँ। बहुत सोचने के बाद, मैंने तोसन शिमाज़ाकी की किताब 'बिफोर द डॉन' का सुझाव दिया। उन्हें वह किताब अच्छी लगी और उन्होंने उसे खरीद लिया।

जब वे जाने लगे, तो कैमरे वाली लड़की ने विनम्रता से कहा, "क्या आपको बुरा लगेगा अगर मैं एक तस्वीर ले लूं?"

“अरे, बिलकुल नहीं,” मैंने कहा। लड़की की आँखें चमक उठीं और उसने तुरंत दुकान की तस्वीरें लेना शुरू कर दिया।

"उम, क्या मैं आप में से एक को भी ले जा सकता हूँ?"

मैं अनिच्छा से काउंटर के पीछे वाली कुर्सी पर बैठ गया।

शायद मेरे चेहरे पर कुछ ज़्यादा ही गंभीर भाव थे, इसलिए उसने झिझकते हुए कहा, "और, उम, क्या मैं आपसे अनुरोध कर सकती हूँ कि आप वैसे ही देखें जैसे आप आमतौर पर देखते हैं?" लेकिन कैमरे के सामने ऐसा करना मेरे लिए नामुमकिन था। ज़्यादातर, जब भी मुझे दुकान में अकेले समय मिलता है, मैं वहाँ एक खोई-खोई सी शक्ल बनाकर बैठी रहती हूँ। उस तरह से तस्वीर खिंचवाना तो बस खुद को बेवकूफ़ साबित करने जैसा होता। आखिर में, मैंने कोई बहाना बनाया और पीछे हट गई, और मानो दुकान के एक कोने में भाग गई।

“सच कहूँ तो, मुझे यह दुकान काफी समय से अच्छी लग रही थी और मैं इसकी तस्वीरें लेना चाहती थी,” लड़की ने शटर दबाते हुए मुझसे कहा। उसके साथ आई लड़की उसके बगल में मुस्कुराती खड़ी थी। वे दोनों प्यारी थीं और बहुत अच्छी लग रही थीं।

वाह! क्या यह सच है?

“इसकी अपनी एक अलग ही शैली है। और अंदर का वातावरण वाकई बहुत शानदार है।”

“शायद आप सही कह रहे हैं,” मैंने बेपरवाही से कहा। शायद आप कह सकते हैं कि पुरानी लकड़ी की इमारत के अंदर के माहौल में कुछ खास बात होती है। हालांकि, जब मैं पहली बार यहाँ आया था, तो मेरी पहली धारणा यही थी कि यह इमारत जर्जर हालत में है।

लेकिन, हमेशा कुछ न कुछ संभावना रहती है...

“एक अजीब बूढ़ा आदमी जिससे बात करना मुश्किल है?” मैंने शरारती मुस्कान के साथ कहा।

लड़की घबराई हुई लग रही थी। "ओह नहीं, मतलब... खैर, हाँ, असल में।"

"मैं हैरान नहीं हूँ।"

मैंने उनके चेहरों पर दिख रहे खाली भावों को नजरअंदाज करते हुए जोर से हंस दिया।

आपने हमारी बहुत मदद की। बहुत-बहुत धन्यवाद। हम किताब भी जरूर पढ़ेंगे।

लड़की के फोटो खींचने का काम खत्म होने के बाद, उसने मुझे विनम्रतापूर्वक धन्यवाद दिया, और वे दोनों दुकान से चले गए।

इन सब कामों में मैं काफी व्यस्त रहा और देखते ही देखते रात हो गई। बहीखाता देखकर और दिन भर की कमाई तिजोरी में रखने के बाद, मैंने थोड़ी-बहुत साफ-सफाई की और दुकान बंद कर दी। और कल से बिलकुल उलट, उस दिन पता नहीं क्यों मेरे चाचा ने एक बार भी फोन नहीं किया। क्या उन्हें मुझ पर भरोसा होने लगा था? मुझे लग रहा था कि कुछ तो गड़बड़ है। आखिर में, मैंने दुकान बंद करने की तैयारी पूरी की, फिर रात के खाने के लिए सामान खरीदने बाहर चला गया।

उस रात टोमो आने वाली थी। जब मैंने उसे बताया कि इतने लंबे समय बाद मैं फिर से दुकान पर रुकने वाली हूँ, तो उसने कहा कि काम के बाद उसे आना ही पड़ेगा। जब मैं दुकान पर रहती थी, तब वह मुझसे कई बार मिलने आई थी और उसे यह जगह बहुत पसंद आ गई थी।

चूंकि वह लगभग नौ बजे आने वाली थी, इसलिए मैंने तब तक का समय मोमोको से सीखी हुई रात के खाने की तैयारी में लगाया, जब वह यहाँ रहती थी। मोमोको अभी भी मेरे चाचा के लिए दोपहर का खाना बनाती थी, जिसका मतलब था कि चावल और मसाले पहले से ही वहाँ मौजूद थे।

यह पूरी तरह से जापानी खाना था, जो सीधे मोमोको से मिला था: उबला हुआ चिकन और हिजिकी समुद्री शैवाल, तला हुआ टोफू, नमक में भुनी हुई मैकेरल पाइक मछली, तले हुए टोफू और शलजम के टुकड़ों के साथ मिसो सूप, और लाल शिसो के साथ चावल। वहाँ केवल एक ही गैस बर्नर था, इसलिए खाना पकाने में उम्मीद से

ज़्यादा समय लगा। मुझे यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि मोमोको इस तरह के सीमित संसाधनों के साथ हर रात इतना स्वादिष्ट खाना बना पाती थीं।

ठीक नौ बजे, मैंने पीछे के दरवाजे से एक हंसमुख आवाज को "शुभ संध्या" कहते हुए सुना, और मैं टोमो का स्वागत करने के लिए नीचे गया।

"ओह, किसी चीज़ से अच्छी खुशबू आ रही है।"

“मैं अभी खाना बना रही थी। आपने अभी तक खाना नहीं खाया है, है ना? मैंने सोचा कि हम साथ में खाना खा सकते हैं।”

मैं थोपना नहीं चाहूंगा...

बिल्कुल नहीं। मुझे वैसे भी खाना तो खाना ही है।

तोमो और मैं पहली बार तब मिले और करीब आए जब वह सेवूर में पार्ट टाइम वेट्रेस का काम करती थी। पहली मुलाकात में ही मुझे लगा कि हम दोस्त बन सकते हैं। बाद में जब मैंने उसे यह बात बताई, तो मुझे खुशी हुई कि उसने कहा कि उसे भी उस समय ऐसा ही लगा था। तब से, हमारी दोस्ती उन दुर्लभ दोस्ती में से एक बन गई है जो आसानी से नहीं मिलती। उसके बात करने के तरीके में कुछ ऐसा था जो शांत और संयमित लगता था। उसके काले बाल चमकदार थे और उसकी त्वचा गोरी थी। अगर आप शब्दकोश में पारंपरिक जापानी सुंदरता की परिभाषा देखें, तो तस्वीर कुछ-कुछ तोमो जैसी ही होगी। और तो और, वह प्रतिभाशाली भी थी। उसने स्नातक स्तर पर जापानी साहित्य का अध्ययन किया था। मैंने सुना था कि वह अब किसी कॉलेज में लाइब्रेरियन के रूप में काम कर रही है। आज उसने एक स्टाइलिश काली ड्रेस और चिड़िया के डिज़ाइन वाला चांदी का हार पहना हुआ था। मुझे लगा जैसे उसे सहज ज्ञान है कि कौन से कपड़े उस पर सबसे अच्छे लगते हैं।

टोमो की मदद से, मैंने अपने द्वारा तैयार किए गए सभी व्यंजनों को छोटी डाइनिंग टेबल पर फैला दिया। हम दोनों के लिए वहाँ खाना थोड़ा तंग था, लेकिन यही हमारे लिए सबसे अच्छा विकल्प था।

तोमो खाने की मेज के सामने बैठते ही कमरे में चारों ओर देखने लगी। “आह, हम दोनों को यहाँ आए हुए बहुत समय हो गया है,” उसने ज़ोर देकर कहा। “कितनी सुकून देने वाली जगह है, है ना?” उसकी नज़र तुरंत खिड़की पर रखी मेरी किताब पर पड़ी, हयाकेन उचिदा की ‘ट्रेन ऑफ फूल्स’, जिसे मैंने पिछली रात अपने फ़्यूटन पर लेटने के बाद पढ़ना शुरू किया था, ताकि मुझे भी यात्रा का एहसास हो सके।

"ओह, मैंने भी इसे पढ़ा है," उसने चमकती आँखों से कहा।

'ट्रेन ऑफ फूल्स' 1950 के दशक में लिखी गई एक यात्रा डायरी है। इस पुस्तक में लेखक बिना किसी विशेष उद्देश्य या गंतव्य के यात्रा पर निकल पड़ता है। वह बस यूं ही यात्रा पर निकल पड़ता है। और इस तरह यात्रा ही अपने आप में एक लक्ष्य बन जाती है। साठ वर्ष से अधिक आयु के इस व्यक्ति का एक ऐसी योजना को पूरा करने के लिए पूरी लगन से प्रतिबद्ध होना हास्यास्पद है, जो अचानक एक दिन उसके मन में आई, हालांकि वास्तव में यह योजना अर्थहीन और निरर्थक है। लेखन में एक गहराई है; वाक्य जल की तरह प्रवाहित होते हैं। इन्हें पढ़ते हुए आप यात्रा के आनंद का अनुभव करते हैं, और साथ ही उस युग के रीति-रिवाजों और संस्कृति की झलक भी पाते हैं।

“ह्याक्केन सेंसेई बहुत ही शानदार हैं, है ना?” टोमो ने मुस्कुराते हुए कहा।

मुझे इस बात का अंदाजा हो गया था कि वह उनके लेखन को कितना पसंद करती थी, जिस तरह से वह उन्हें बिना सोचे-समझे 'सेंसेई' कहकर पुकारती थी।

“वह सबसे अच्छा है। और उसका साथी, हिमालय। वे दोनों साथ में बहुत प्यारे लगते हैं।”

मैं उनके साथ यात्रा पर जाना चाहता था।

“उन्हें खुश करना तो बहुत मुश्किल है। क्या आपको नहीं लगता कि अगर आप सच में चले गए तो यह एक आपदा होगी?”

“लेकिन वे कितने प्यारे हैं—और वे काफी हंसमुख बूढ़े लगते हैं,” टोमो ने प्यारी सी मुस्कान के साथ कहा। उस मुस्कान में एक ऐसी ममता थी कि मैं चौंक गया।

तोमो खाना खाते समय धीरे-धीरे चबा रही थी। पता नहीं क्यों, मुझे हमेशा जल्दी-जल्दी खाना खाने की आदत थी, इसलिए इस बार मैंने भी उसकी तरह धीरे-धीरे खाना खाया। उसने कहा कि उसने काफी समय से जापानी खाना नहीं खाया था। उसे मसालेदार खाना पसंद था। वह हमेशा से कम खाने वाली थी, और काम में व्यस्त रहने के कारण उसे जो भी मिलता था, वही खाने की आदत पड़ गई थी। उसे मेरे सामने मुस्कुराते हुए और खाने की तारीफ करते हुए देखकर, मैं भी मुस्कुराए बिना नहीं रह सकी।

हमने रात के खाने पर कई बातों पर चर्चा की—अपने कामों के बारे में, हाल ही में पढ़ी किताबों के बारे में। हम हमेशा एक-दूसरे को ईमेल और फोन करते रहते थे,

लेकिन इस तरह आमने-सामने बात करना बहुत अच्छा लगा। खाना खत्म होने के बाद भी हम मेज पर बैठे बातें करते रहे।

लेकिन लाइब्रेरियन बनना आपके लिए एकदम सही है।

"कॉलेज की लाइब्रेरी अच्छी है, लेकिन मेरा असली सपना राष्ट्रीय पुस्तकालय में काम करना था।"

"ओह, क्या यह वही पुस्तकालय है जिसमें प्रकाशित हुई हर किताब मौजूद है?"

“बिल्कुल सही। लेकिन मैं नौकरी के लिए परीक्षा में फेल हो गया।”

“सच में? कितना अफसोस की बात है।”

“मैं जिस जगह अभी काम करती हूँ, वो भले ही बड़ी न हो, लेकिन यहाँ की लाइब्रेरी में पुराने और महत्वपूर्ण ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। मुझे इससे बहुत खुशी मिलती है। फिर भी, कभी-कभी उन सभी कॉलेज के छात्रों का जोश थोड़ा परेशान कर देता है,” टोमो ने कहा। उनकी आवाज़ में कोमलता और परिपक्वता दोनों थी। यहाँ तक कि चॉपस्टिक्स चलाने का उनका तरीका भी सलीकेदार था—उनकी मैकेरल पाइक मछली का बस सिर और हड्डियाँ ही बची थीं। मेरी प्लेट में जो बचा था, उसकी तारीफ करने लायक कुछ नहीं था। मैंने मन ही मन सोचा, उनकी परवरिश अच्छी हुई होगी। दरअसल, मैंने सुना था कि टोमो का परिवार इलाके की सबसे बड़ी निर्माण कंपनी चलाता है। असल में, वो मालिक की बेटी थीं। “सुनने में जितना अच्छा लगता है, उतना है नहीं,” उन्होंने ज़ोर देकर कहा।

“तुम्हारा ‘युवावस्था का जोश’ से क्या मतलब है? तुम्हारे और उनके बीच उम्र का कोई खास अंतर नहीं है।”

मुझे लगता है कि अब मैं उतना उत्साहित नहीं रहा।

"क्या आपको कॉलेज में कोई ऐसा लड़का नहीं मिला जिससे आप जुड़ाव महसूस करती हों?"

पुस्तकालय के रिसेप्शन डेस्क पर टोमो जैसी लड़की को देखकर, शायद कई छात्र उसके दीवाने होंगे। मैंने कल्पना की कि किसी लड़के ने दूर से टोमो को देखा और उससे बेइंतहा प्यार करने लगा। लेकिन टोमो ने तुरंत मेरे भ्रम को दूर कर दिया।

“नहीं, बिलकुल नहीं। लेकिन आपका क्या हाल है? वाडा के साथ सब ठीक चल रहा है?”

"उम, हाँ, मुझे लगता है," मैंने कहा, खुद को बातचीत का केंद्र पाकर मैं थोड़ा घबरा गया था।

ठीक उसी समय, मेरे फोन की घंटी बजी, मानो मैंने बिल्कुल सही समय का इंतज़ार किया हो। मैंने देखा तो वाडा का मैसेज था। क्या मुझे कोई आपत्ति होगी अगर वह थोड़ी देर के लिए दुकान पर मुझसे मिलने आ जाए? वह अपना काम खत्म करके ऑफिस से निकलने ही वाला था।

“वाडा का कहना है कि वह आना चाहता है। क्या यह ठीक रहेगा?”

“बिल्कुल, जरूर। मैं उनसे मिलना चाहता हूँ।”

मैंने टोमो से वाडा के बारे में बहुत बातें की थीं, लेकिन उन दोनों की कभी मुलाकात नहीं हुई थी। इसलिए, यह एक अच्छा मौका लगा। चलो उसे बुला लेते हैं। हालांकि कमरा तीन लोगों के लिए बहुत छोटा था।

मैंने कहा, टोमो यहीं है, लेकिन तुम इधर आ जाओ।

दस मिनट से भी कम समय बाद, हमें खिड़की के बाहर से "हे!" चिल्लाने की आवाज सुनाई दी।

"स्वागत है," मैंने वाडा से कहा, जो अभी-अभी सीढ़ियों से ऊपर चढ़कर मेरी नजरों में आया था।

“शुभ संध्या। आपसे मिलकर खुशी हुई,” टोमो ने अपने चेहरे पर एक बड़ी सी मुस्कान के साथ कहा।

“ओह, मिस, उम, सुश्री टोमो, मैंने आपके बारे में बहुत कुछ सुना है। आपसे मिलकर मुझे भी बहुत खुशी हुई।” वाडा ने टोमो को जल्दी से झुककर प्रणाम किया।

मैंने हंसते हुए कहा, "आपको उन्हें 'मिस' कहने की जरूरत नहीं है," लेकिन वाडा की गंभीरता के जवाब में, टोमो ने अपनी मुद्रा सीधी की और बदले में झुककर अभिवादन किया।

नहीं, मुझे तो बहुत खुशी हुई।

“वाडा, तुमने तो खाना खा लिया था ना? मुझे माफ़ करना। हमने सब कुछ खा लिया। अगर मुझे पता होता कि तुम आ रहे हो, तो मैं तुम्हारे लिए एक प्लेट तैयार कर देता।”

नहीं, इसकी चिंता मत करो। मैं थोड़ी देर में घर जा रहा हूँ।

वाडा किसी वजह से बेचैन लग रहा था। वह कमरे के एक कोने में औपचारिक मुद्रा में बैठा था। जब मैंने उससे वजह पूछी, तो उसने कहा कि वह बस उत्साहित था क्योंकि वह पहली बार दूसरी मंजिल के कमरे में आया था।

लेकिन मालिक की अनुमति के बिना जबरदस्ती अंदर घुसकर इधर-उधर देखना गलत लगता है।

ऐसा लग रहा था मानो वह कमरे की हर सतह को चाटने की अपनी तीव्र इच्छा को दबाने की पूरी कोशिश कर रहा हो।

मैंने आश्चर्यचकित होकर कहा, "तुम ऐसा कहते हो, लेकिन फिर भी तुम आ ही गए, है ना?"

“मैंने अपनी जिज्ञासा को खुद पर हावी होने दिया। लेकिन उस आखिरी सीमा को पार करना मेरी गलती थी। किसी को भी शिष्टाचार की कीमत पर भावनाओं में बहकर हार नहीं माननी चाहिए। इसके अलावा, इस बात की भी पूरी संभावना है कि श्री मोरिसाकी मुझसे नफरत करते हैं।” वाडा के चेहरे पर अब पीड़ा के भाव थे, लेकिन वह अपनी सख्त, औपचारिक मुद्रा से बिल्कुल नहीं हिले थे।

"तुम उतने ही मजाकिया हो जितना ताकाको ने तुम्हारे बारे में कहा था।"

"सही?"

हम सबने सहमति में सिर हिलाया और अपनी हंसी रोकने की पूरी कोशिश की।

"क्या? मुझमें मज़ेदार क्या है?" वाडा ने गंभीरता से पूछा, जो उनके स्वभाव की गंभीरता का एक और उदाहरण था।

हम इसे और बर्दाश्त नहीं कर सके, और आखिरकार हम दोनों जोर से हंस पड़े।

वह एक जीवंत रात थी, पिछली रात से बिलकुल अलग।

जब रात की आखिरी ट्रेन का समय लगभग हो गया, तो टोमो को जाना पड़ा, और वाडा ने भी उसके साथ जाने का फैसला किया। मुझे भी थोड़ी ताज़ी हवा चाहिए थी, इसलिए मैं भी उनके साथ कुछ दूर तक गया।

सबवे के प्रवेश द्वार पर टोमो को अलविदा कहने के बाद, मैंने तुरंत वाडा की ओर मुड़कर उससे पूछा कि उसे टोमो कैसी लगी। "टोमो बहुत अच्छी है, है ना?"

"हाँ, बिल्कुल है।"

मन ही मन मैं इस बात को लेकर चिंतित थी कि तोमो से मिलने पर वाडा की क्या प्रतिक्रिया होगी, लेकिन कुल मिलाकर वह उदासीन ही रहा। एक तरफ तो मुझे राहत

मिली, लेकिन साथ ही निराशा भी हुई कि उसने यह नहीं समझा कि वह कितनी अद्भुत थी। मुझे उसे अपना दोस्त कहने पर गर्व था। आखिर वह उसकी खूबसूरती को क्यों नहीं समझ पा रहा था? यह बात मुझे बहुत खटक रही थी।

लेकिन वाडा बोलती रही और कुछ उलझन भरी नज़र से देखती रही। "बात बस इतनी सी है कि वह..."

"क्या?"

मुझे नहीं पता। यह सिर्फ एक एहसास है, लेकिन ऐसा लगता है कि वह वहां है, लेकिन वास्तव में वह वहां नहीं है।

“हं?”

मुझे समझ नहीं आ रहा कि इसका क्या मतलब निकालूं। शायद वह ऐसी इंसान है जिसे अकेले रहने की आदत है। या यूं कहें कि वह ऐसी इंसान है जो अकेले रहना पसंद करती है।

“क्या आपको ऐसा लगता है? मुझे तो उससे ऐसा बिल्कुल भी महसूस नहीं होता।”

वाडा ने जो कहा वह इतना अप्रत्याशित था कि मैं उसे मुश्किल से समझ पाया।

मैंने हमेशा यही सोचा था कि टोमो एक हंसमुख लड़की है जिसे हर कोई पसंद करेगा।

मुझे नहीं पता। शायद ये खुद को बचाने का उसका तरीका है। मैं इसे ठीक से समझा नहीं पा रही। शायद इसलिए कि मैं भी कभी-कभी ऐसी ही हो जाती हूँ, इसलिए मुझे ये समझ आ गया। जैसे ही हमारी नज़रें मिलीं, मुझे लगा कि हम दोनों एक ही तरह के इंसान हैं। पता नहीं। शायद वो मुझसे पहली बार मिलने पर थोड़ी घबराई हुई थी। माफ़ करना। भूल जाओ मैंने क्या कहा।

जब मैं उसकी बातें सुन रहा था, तो मुझे टोमो की चिंता कम और वाडा की चिंता ज्यादा थी।

उस समय वह जो कह रहा था... मुझे दबे-छिपे अंदाज़ा हो गया था कि उसने मुझसे पूरी तरह से अपने दिल की बात नहीं कही थी। मुझे एहसास हुआ कि मेरा अंदाज़ा सही था, और इससे मुझे अकेलापन महसूस हुआ।

वाडा सड़क पर ट्रैफिक सिग्नल से थोड़ा आगे रुक गया और बोला, "यह काफी दूर है। मैं यहां से खुद पैदल वापस जा सकता हूं।"

"या फिर आप दुकान पर ही रात बिता सकते हैं?" मैंने मजाक करने का नाटक करते हुए पूछा।

“मैं नहीं कर सकता। यह मालिक का अधिकार है...”

“कोई बात नहीं। मैं समझ गया,” मैंने उसे बीच में ही रोकते हुए कहा।

उनका जवाब इतना स्पष्ट था कि मुझे निराशा भी नहीं हुई। लेकिन जवाब इतना स्पष्ट होने के कारण मुझे थोड़ा दुख हुआ।

"शुभ रात्रि।"

वाडा से अपनी भावनाओं को छिपाने के लिए, मैंने बिना उसकी प्रतिक्रिया का इंतजार किए ही मुड़कर दुकान की ओर दौड़ लगाई।

अगले दिन, सुबह से ही मेरा मूड खराब था।

मैं अपनी कुर्सी पर बैठा हुआ, खाली निगाहों से घूर रहा था, विचारों में डूबा हुआ। जब से मैं वाडा को जानता था, मेरा दिमाग दो हिस्सों में बँट गया था, मेरा सकारात्मक पक्ष और नकारात्मक पक्ष लगातार बहस में उलझे रहते थे। आज सुबह यह बहस चरम पर पहुँच गई।

मैं उसकी हर छोटी-बड़ी बात पर प्रतिक्रिया देने लगती थी, उसके प्यार की गहराई को समझने की कोशिश करती थी, और सोचती थी, कितना चिड़चिड़ा और चिपचिपाहट वाला इंसान है। लेकिन जिस पल मुझे उससे प्यार हुआ, क्या मैं भी वैसी ही नहीं बन गई?

इस मुद्दे पर, मेरे सकारात्मक पक्ष ने मेरे नकारात्मक पक्ष को समझाने की कोशिश की, "यह दर्शाता है कि तुम उससे कितना प्यार करती हो।" जिस पर मेरे नकारात्मक पक्ष ने तुरंत जवाब दिया, "यह इस बात का और सबूत है कि तुम कितनी चिड़चिड़ी इंसान हो सकती हो।" आज एक बार फिर, मेरा सकारात्मक पक्ष कमजोर साबित हुआ और मेरा नकारात्मक पक्ष पूरी तरह हावी रहा।

“उम...”

मुझे अचानक यह एहसास हुआ कि कोई मुझसे बात कर रहा है, जिससे मैं चौंक गया।

मैं घबराकर ऊपर देखने लगा और पाया कि ताकानो लगभग किताबों की अलमारी के पीछे छिपकर मेरी तरफ देख रहा था।

"रुको, ताकानो, तुम यहाँ कब से हो?"

मैं अभी-अभी आया हूँ।

घड़ी देखकर पता चला कि लगभग दोपहर हो चुकी थी। वह कॉफी शॉप से ब्रेक लेकर यहाँ आया होगा। ताकानो ने सिर्फ तीन चौथाई आस्तीन वाली टी-शर्ट पहनी हुई थी, जिस पर एक टूटते हुए मिकी माउस जैसा चित्र छपा था। पता नहीं क्यों, वह ठंड के महीनों में भी हल्के कपड़े पहनता था। शायद इसलिए क्योंकि दिल से वह अब भी बच्चा ही था।

"अंदर आते समय कुछ बोलो। या फिर इतनी खामोशी से अंदर मत आओ।"

“मुझे माफ़ करना। मैंने कुछ कहा तो था, लेकिन तुम्हारे चेहरे पर ऐसा भाव था जैसे तुम गहरी सोच में डूबे हुए हो।” ताकानो अपना सिर खुजा रहा था, मानो उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि मैं उससे नाराज़ क्यों हूँ। मुझे शर्मिंदगी महसूस हुई क्योंकि मुझे एहसास हुआ कि मैं अपना गुस्सा उस पर निकाल रहा था।

गला साफ करने और खुद को संभालने के बाद, मैंने पूछा, "क्या आपको किसी चीज की जरूरत है?"

मैंने अपने बॉस से सुना है कि आप परसों से दुकान संभाल रहे हैं।

"यह सही है।"

"तो, मैं आपसे किसी बात पर चर्चा करना चाहता था।"

“इसीलिए तो मैं पूछ रहा था। यह क्या है?”

"खैर, इसका संबंध टोमोको ऐहारा से है।"

“टोमो?”

क्या यह पहले भी हो चुका था? हम निश्चित रूप से पहले भी ठीक इसी स्थिति में थे। मैं दुकान में अकेला था, ताकानो अंदर आया, उसने टोमो का जिक्र किया...

जी हाँ। ताकानो को टोमो से बेहद प्यार था। उस समय, ताकानो ने मुझसे बीच-बचाव करने को कहा था क्योंकि मैं टोमो का अच्छा दोस्त था। लेकिन जैसे ही वे करीब आने लगे, टोमो ने कॉफी शॉप में अपनी पार्ट-टाइम नौकरी छोड़ दी और एक स्थायी नौकरी ढूंढने लगी, और उसके बाद उनके रिश्ते में कोई प्रगति नहीं दिखी।

मैं काउंटर पर सिर हाथ में रखकर बैठी रही। “सच में? अब क्या बात है?” मैंने पूरी बेपरवाही से कहा। सच कहूँ तो, मेरा दिमाग पहले से ही मेरी अपनी स्थिति के बारे में सोचते-सोचते थक चुका था। मुझे ताकानो की बातों में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

“क्या आप इतनी नाराज़गी भरी आवाज़ में बात नहीं कर सकते?” ताकानो ने कहा, मानो उसका धैर्य टूट रहा हो। “आपको पता नहीं कैसा लगता है। आपकी ज़िंदगी तो बस एक के बाद एक खुशियों भरे दिनों से भरी है।”

“एक मिनट रुको। तुम दुकान पर मुझे कुछ बताने आए हो। बस यूं ही मत बैठो और रूठ जाओ।”

“जो कुछ हुआ उसके बाद तो मैं उदास होने से खुद को रोक ही नहीं पा रहा,” ताकानो ने कहा और खुद पर थोड़ा हँस पड़ा। कितना उदास आदमी है, मैंने सोचा। वह इतनी बुरी तरह से उदास था कि मुझे खुद थोड़ा पीछे हटना पड़ा। शायद बेहतर यही होगा कि मैं उसे यह न बताऊँ कि टोमो पिछली रात आया था।

“लेकिन क्या मैं आपको कुछ बता सकता हूँ?” यह सवाल पूछने के बाद ताकानो ने एक उदास आह भरी। फिर उसने मुझे यह कहानी सुनाना शुरू किया।

तोमो के कॉफी शॉप में काम छोड़ देने के बाद भी, वे एक-दूसरे को मैसेज करते रहे (ज़्यादातर किताबों के बारे में)। फिर भी, ताकानो ही हमेशा उसे पहले मैसेज करता था, इसलिए उसे परेशान न करने के लिए, वह मैसेज के बीच पर्याप्त समय का अंतराल रखता था। लेकिन लगभग दो महीने पहले, उसने काफी समय बाद उसे मैसेज भेजा, और न केवल उसे जवाब नहीं मिला, बल्कि मैसेज उस तक पहुँचा ही नहीं। उसके बाद, उसने उसे दर्जनों बार मैसेज करने की कोशिश की, लेकिन हर बार उसे एरर मैसेज ही मिला, और मैसेज उस तक कभी नहीं पहुँचा।

“इसका मतलब है कि उसने मेरा नंबर ब्लॉक कर दिया होगा? मतलब, अगर ऐसा नहीं होता तो मेरे मैसेज तो उसे पहुँचने चाहिए थे, है ना?”

मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि टोमो ऐसा कुछ कर सकती है। मान लीजिए कि उसने ऐसा किया था, तो क्या इसका मतलब यह था कि ताकानो ने सच में कुछ भयानक किया था? एक परीक्षण के तौर पर, मैंने उसी समय उसे एक संदेश भेजने की कोशिश की: कल रात आने के लिए धन्यवाद। जल्द ही मिलते हैं।

जैसा कि उम्मीद थी, मेरे फोन की स्क्रीन पर "ट्रांसमिशन पूरा हुआ" संदेश दिखाई दिया। मैंने अपना फोन ताकानो को दिखाया, जो उसे ऐसे घूर रहा था मानो उसे अपनी आँखों से ही खा जाएगा। वह एक पल के लिए चुप रहा, फिर उसने छत की ओर देखा और चिल्लाया, "क्यों!?!?"

"ताकानो, क्या तुम्हें याद है कि तुम उसके घर के बाहर पहरा दे रहे थे, या शायद उसके कचरे की छानबीन कर रहे थे, या, मुझे नहीं पता, उसके कमरे में जासूसी कर रहे थे?"

मैंने ऐसे लोगों के बारे में बहुत सी कहानियाँ सुनी थीं जो अपने प्रिय व्यक्ति के साथ कभी साझा न कर पाने वाले प्रेम के तनाव में आकर ऐसा व्यवहार करने पर मजबूर हो जाते हैं। लेकिन ताकानो का चेहरा लाल हो गया और उसने सब कुछ नकार दिया।

"आपको ऐसा क्यों लगता है कि मेरा ऐसे किसी अपराध से कोई संबंध हो सकता है? मेरे बॉस हमेशा कहते हैं कि मुझे बातों का छिपा हुआ अर्थ समझने में दिक्कत होती है, लेकिन मैं टोमो के साथ इतना घिनौना काम कभी नहीं करूँगा, पीछा करने जैसी बात तो दूर की है।"

“आप सही कह रहे हैं। मुझे खेद है। उसका ऐसा करना इतना अजीब था कि मुझे जाँच करनी पड़ी। आप जैसे डरपोक व्यक्ति के लिए ऐसा करना असंभव है।”

“बिल्कुल!” ताकानो ने थोड़ा और सीधा खड़े होते हुए कहा।

ठीक उसी समय टोमो का तुरंत जवाब आया। शायद वह लंच ब्रेक पर थी। मैसेज में लिखा था, "कल रात के खाने के लिए धन्यवाद। अगली बार मेरे घर आना।"

मुझे खुशी हुई और मैंने जवाब दिया, अगले हफ्ते कैसा रहेगा?

ताकानो ने निराशा भरी निगाहों से मुझे देखा।

“क्यों? लेकिन क्यों? सिर्फ़ तुम ही क्यों?” उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा। उसकी आवाज़ में बेचैनी थी। पर चाहे वह कितनी ही बार मुझसे पूछे, मेरे पास उसके लिए कोई जवाब नहीं था। फिर भी, जैसे ही मुझे याद आया कि पिछली रात टोमो कितनी सुंदर लग रही थी, मुझे ताकानो पर तरस आया। अगर मैं मर्द होती, तो शायद मैं भी टोमो से प्यार कर बैठती। और अगर एक दिन वह मेरा नंबर ब्लॉक कर देती, तो शायद मैं पूरा हफ़्ता बिस्तर पर ही बिताती। कल तक मैं सिर्फ़ वाडा के साथ अपने रिश्ते के बारे में सोच रही थी, लेकिन अब ताकानो की बातें सुनकर, मेरा ध्यान फिर से वाडा की कही बातों पर अटक गया।

"तो, ताकानो, तुम क्या करने वाले हो?"

मैं एक किताब ढूंढने जा रहा हूँ।

“हेह?”

उसका जवाब इतना बेतुका और अप्रत्याशित था कि मैं लगभग उस पर चिल्ला ही पड़ी। किताब ढूंढने का टोमो के साथ जो हो रहा था उससे क्या लेना-देना हो सकता है? “एक किताब है जो टोमोको चाहती है। बहुत समय पहले की बात है, वह सेवूर के मालिक से बात कर रही थी और उसने उसे बताया कि एक किताब है जो वह हमेशा से पाना चाहती थी, लेकिन उसे कभी मिल नहीं पाई। मैं, उम्म, पास ही में सुन रही थी।”

“कौन सी किताब?”

मुझे लगता है कि शीर्षक 'द गोल्डन ड्रीम' है। मैं लेखक का नाम भूल गया हूँ, लेकिन यह किसी पुराने जापानी ग्रंथ जैसा लग रहा था, शायद कोई उपन्यास।"

तो आपकी योजना उस किताब को ढूंढकर उसे उपहार के रूप में देने की है?

“अगले महीने की चौदह तारीख को उसका जन्मदिन है, है ना? अगर मुमकिन हो तो मैं उसे तब देना चाहूँगी। मुझे किताबों के बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं है, लेकिन मुझे लगा कि शायद आपको ज़्यादा पता हो।”

ताकानो ने जो कुछ भी कहा था, उसके बावजूद मैंने दुकान में उस शीर्षक वाली कोई किताब कभी नहीं देखी थी।

"अच्छा, मान लीजिए कि आप उसे किताब देते हैं, तो आप उससे क्या करवाना चाहेंगे?"

मुझे बदले में कुछ नहीं चाहिए। ये सिर्फ मेरी अपनी संतुष्टि के लिए है। मैं उसका ध्यान खींचने या उसे जीतने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। अगर वो मुझसे बच रही है, तो हम ये मान लेंगे कि ये तुम्हारी वजह से है।

ताकानो की बात मुझे सराहनीय लगी। उनकी आवाज़ के लहजे से मैं समझ गया कि वे सचमुच टोमो के बारे में सोच रहे थे। उन्होंने मुझे बचपन में सीखे उस गीत "डोना डोना" की याद दिला दी, जिसमें एक बछड़े को उसकी माँ से अलग किया जा रहा था। मुझे यकीन है कि उस समय ताकानो की आँखों में वही भाव थे जो गीत के बोल में वर्णित "दुख भरी आँखों वाले" बछड़े के थे।

“तोमोको शायद मुझे बस एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखती है जिसके साथ उसने अपनी पुरानी पार्ट-टाइम नौकरी की थी, लेकिन मेरे लिए, उसकी मुस्कान ही वह वजह है जिसके कारण मैंने कॉफी शॉप का काम नहीं छोड़ा। उसी की वजह से मैं काम करता रहा। इसलिए मैं उन सालों के लिए अपना आभार व्यक्त करने का कोई तरीका ढूंढना चाहता हूं। बस इतना ही काफी है कि वह खुश रहे।”

“ठीक है, मैं समझ गया।” उसकी बात सुनकर मेरे लिए उसकी मदद करने से इनकार करना नामुमकिन था। “तो फिर, मैं किताब ढूंढने में तुम्हारी मदद करूँगा। हम दोनों के साथ, कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए। मैं टोमो को भी खुश करना चाहता हूँ।”

"बहुत-बहुत धन्यवाद।" और इसके साथ ही ताकानो के चेहरे पर थोड़ी सी चमक आ गई।

उस रात, दुकान बंद करने से पहले मेरी चाची और चाचा थोड़ी देर के लिए दुकान का हालचाल जानने आए। उनके लिए कुनिताची में अपने घर सीधे चले जाना बेहतर होता, लेकिन मेरे चाचा खुद को रोक नहीं पाए। मैंने उन्हें गर्व से बताया कि दुकान में कोई समस्या नहीं थी। गर्म पानी के झरने के असर से मोमोको की त्वचा पहले से भी ज़्यादा चमकदार हो गई थी। "बहुत मज़ा आया," उसने मुझे गर्म पानी के झरने में बने स्टीम्ड बन्स का एक उपहार बॉक्स देते हुए कहा। हालाँकि, मेरे चाचा पास ही खड़े थे, उदास दिख रहे थे।

“यह सुनकर मुझे याद आया। तुमने दूसरे दिन के बाद फोन करना बंद कर दिया था,” मैंने कहा।

मेरे चाचा ने जवाब में बस इतना ही कहा, "हाँ।" वे थोड़े अस्वस्थ लग रहे थे।

मैं चिंतित हो गई और मोमोको की ओर देखा, जिसने समझाने की कोशिश की। “हमें यात्रा किए हुए बहुत समय हो गया है। मुझे लगता है हम थोड़े थके हुए हैं। उसकी चिंता मत करो। उसे तो बहुत मज़ा आया।”

“हम्म... सचमुच?” मुझे थोड़ा अजीब लगा, लेकिन मैंने इस मामले को आगे नहीं बढ़ाया। अगर दोनों ने कहा कि उन्हें मज़ा आया, तो मेरे लिए इतना ही काफी था।

ठीक है, मैं इसे बंद कर देता हूँ। बाकी काम मुझ पर छोड़ दीजिए।

मैं अपनी जिम्मेदारियों को अंत तक निभाना चाहता था, इसलिए मैंने उन्हें पहले घर भेज दिया।

मुझे अगले दिन भी काम पर जाना था। मोरिसाकी बुकशॉप में मेरे दिन समाप्त हो गए थे। मैं दुकान में ही रहना चाहता था, लेकिन इसके बजाय मैंने शटर कसकर बंद किया और अपने घर और सामान्य जीवन में लौट आया।

9

अगले सप्ताह, ठंडी हवा छंट गई और कुछ समय के लिए गर्म दिन लौट आए। दोपहर के समय जैकेट पहनने पर भी गर्मी महसूस हो रही थी।

मैंने ताकानो से किए वादे के मुताबिक, टोमो की मनचाही किताब, 'द गोल्डन ड्रीम', को ढूंढने की कोशिश की।

मैंने सबसे पहले अपने चाचा से इसके बारे में पूछा, क्योंकि मुझे लगा कि किसी भी किताब को ढूंढने का यही सबसे सुरक्षित तरीका है।

लेकिन मेरे चाचा ने कहा कि उन्होंने वह किताब न तो कभी देखी थी और न ही उसके बारे में कभी सुना था। मैंने तो यही मान लिया था कि अगर वह कोई पुरानी जापानी किताब है तो उन्हें तो पता ही होगा, लेकिन मेरा यह अनुमान बिल्कुल गलत था। और तो और, उन्होंने उसमें ज़रा भी दिलचस्पी नहीं दिखाई, जो उनके स्वभाव के बिल्कुल विपरीत था। आम तौर पर, मेरे चाचा तो बहुत उत्साहित हो जाते और किताब को ढूंढ-ढूंढ कर निकाल लेते। आजकल मेरे चाचा कुछ अजीब से लग रहे थे (वे पहले भी अजीब थे, लेकिन इस तरह नहीं)। ऐसा लग रहा था जैसे वे बहुत थके हुए हों। जब मुझे चिंता हुई और मैंने उनसे पूछा कि क्या वे ठीक हैं, तो उन्होंने बात को पलटकर मुझसे ही पूछ लिया कि मैं किस बारे में बात कर रही हूँ, इसलिए मुझे लगा कि चिंता की कोई बात नहीं है।

कोई और विकल्प न होने के कारण, मैं काम से घर लौटते समय पुरानी किताबों की दुकानों के चक्कर लगाता रहा और उस किताब की तलाश जारी रखी। ताकानो ने अनुमान लगाया था कि यह कोई उपन्यास होगा, लेकिन अगर मेरे चाचा को इसके बारे में पता नहीं था तो शायद उसका अनुमान भी गलत था, इसलिए मैंने कुछ ऐसी दुकानों में भी जाकर देखा जो सचित्र पुस्तकों में विशेषज्ञता रखती थीं।

हजारों पुरानी किताबों के ढेर में, मैं एक अकेली किताब की तलाश कर रहा था, बस एक मामूली सी जानकारी के सहारे। मुझे यह खोज आश्चर्यजनक रूप से मजेदार लगी—जैसे कोई खजाना ढूंढ रहा हो। मैं इसे ताकानो के लिए ढूंढना चाहता था, लेकिन साथ ही साथ उस किताब के बारे में भी मेरी जिज्ञासा बढ़ गई थी। तोमो को आखिर किस तरह की किताब की इतनी चाहत थी? क्या वह हास्यप्रद थी? शायद वह ऐसी किताब थी जो जीवन के प्रति आपका नजरिया ही बदल दे? पिछले हफ्ते से वाडा के

साथ कुछ बातों को लेकर मैं थोड़ा असहज महसूस कर रहा था, जिसकी वजह से मुझे वह किताब और भी ज्यादा चाहिए थी। लेकिन यह खोज उम्मीद से कहीं ज्यादा मुश्किल साबित हुई। हर जगह ढूंढने के बाद भी, मुझे न सिर्फ वह किताब नहीं मिली, बल्कि कोई ऐसा व्यक्ति भी नहीं मिला जिसे उसके अस्तित्व के बारे में पता हो। और जब मैंने वाडा से पूछा, तो उसने भी कहा कि उसे भी नहीं पता। ऐसा लग रहा था कि तोमो जिस किताब को ढूंढना चाहता था, वह सिर्फ सच्चे पाठकों के लिए ही थी।

लेकिन किताब को ढूंढना जितना मुश्किल होता गया, उसमें मेरी दिलचस्पी उतनी ही बढ़ती गई।

मेरा अगला कदम अपने चाचा से यह अनुरोध करना था कि वे मुझे जिम्बोचो के रेयर बुक हॉल में आयोजित होने वाली नीलामी में शामिल करवा दें।

जब आप पुरानी किताबों की दुकान चलाते हैं, तो नीलामी बड़ी मात्रा में किताबें खरीदने का सबसे अच्छा मौका होता है। आप यह भी कह सकते हैं कि अगर आप नियमित रूप से नीलामी में भाग नहीं लेते हैं, तो दुकान चलाना लगभग नामुमकिन है। इसलिए, ज़ाहिर है, जिम्बोचो के सभी दुकान मालिक दुर्लभ किताबों के हॉल में होने वाली नीलामी में मौजूद थे। वहाँ से जानकारी जुटाना आसान था, और आपको सभी दुकानों पर जाने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी।

सच कहूँ तो, नीलामी मेरे लिए उतनी दिलचस्प नहीं थी। हालाँकि वहाँ का माहौल अपेक्षाकृत दोस्ताना था क्योंकि मैं वहाँ बहुत से लोगों को जानता था, फिर भी वहाँ एक तरह की गंभीरता छाई हुई थी जो मुझे तनावपूर्ण लगी।

मुझे पता था कि नीलामी शुरू होते ही मैं वहाँ बेमेल लगूँगा। इसलिए, शुरुआती खुले समय में, जो लोगों को नीलामी की वस्तुओं को देखने का मौका देने के लिए था, मैं अपने चाचा के पास ही बैठा रहा और किताब की तलाश करता रहा। यही एकमात्र मौका था जब मेरे चाचा ध्यान लगाकर वस्तुओं को देख रहे थे और नोट्स बना रहे थे। उनके काम में दखल देना ठीक नहीं लगा, इसलिए मैंने चुप रहकर अपने सामने रखी सभी किताबों के शीर्षक पढ़े। अंत में, मुझे वह नहीं मिली जिसकी मुझे तलाश थी। जब मैंने अपने जान-पहचान के किताबों की दुकान के मालिकों से पूछा, तो सबने कहा कि उन्होंने उस किताब के बारे में कभी सुना ही नहीं।

मैं चुपके से कार्यक्रम स्थल से बाहर निकला और गलियारे में खड़ा होकर खुद से बड़बड़ाने लगा। इतनी खोजबीन के बाद भी अगर मुझे यह किताब इस इलाके में नहीं

मिली, तो आखिर कहाँ मिलेगी? बेशक, यह मुमकिन था कि मुझसे ही छूट गई हो, लेकिन ताकानो ने भी दुकानों में पूरी लगन से छानबीन की थी और ऑनलाइन भी जानकारी ढूंढी थी। लेकिन इन सब के बावजूद, उसे कुछ भी काम की चीज नहीं मिली थी।

सेवर में ताकानो से इस बारे में बात करने के बाद, हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि हमारे लिए सबसे अच्छा विकल्प बुक फेस्टिवल में जाना था।

अक्टूबर के अंत से नवंबर की शुरुआत तक आयोजित होने वाला पुस्तक महोत्सव जिम्बोचो का साल का सबसे बड़ा आयोजन था।

इस सप्ताह के लिए, यह इलाका, जहाँ समय हमेशा बड़ी शांति से बीतता हुआ प्रतीत होता था, पूरी तरह से बदल गया था। सड़कों पर पुरानी किताबों से भरी गाड़ियाँ और किताबों की अलमारियाँ सजी हुई थीं, और यहाँ तक कि याकिशोबा और मिठाई से ढके फलों के स्टॉल भी लगे हुए थे। बहुत सारे लोग आए, सभी किताबें ढूंढ रहे थे। साल के इस समय के आते ही, मैं उत्साहित हुए बिना नहीं रह सका। इतने सारे लोगों को किताबों से प्यार करते देखकर मुझे खुशी हुई। अक्सर ऐसा लगता था मानो केवल कुछ ही लोग जिम्बोचो को अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानते हों, लेकिन वास्तव में, इतने सारे लोग थे जो इससे प्यार करते थे। मैं मानता हूँ कि यह सब देखकर मैं बहुत भावुक हो गया।

स्वाभाविक रूप से, मोरिसाकी बुकशॉप हर साल इस उत्सव का हिस्सा होती थी। एक छोटी दुकान होने के नाते, हम सड़क के बड़े-बड़े स्टोरों से अलग तरीके से काम करते थे। मेरे चाचा दुकान के सामने आराम से खड़ी ठेलियों पर रखी किताबों पर सेल लगाते थे और अंदर एक रियायती कॉर्नर बनाते थे। इस साल मोमोको ने सारी तैयारियां कर ली थीं, इसलिए मुझे लगा कि मैं ज़्यादा मदद नहीं कर सकता। मेरे चाचा, जिन्हें त्योहार बहुत पसंद थे, साल के इस समय इतने व्यस्त रहते थे कि वे कारोबार के बारे में सोच भी नहीं पाते थे, लेकिन इस बार उन्होंने कहा, "मुझ पर भरोसा कीजिए, मैंने सब कुछ संभाल लिया है।"

काम की वजह से मैं सिर्फ़ एक दिन के लिए ही फ़ेस्टिवल में जा पाया। उस दिन भी मैंने अपना योगदान दिया और सुबह से ही दुकान पर मदद की। अंदर, मुख्य रास्ते से जोश भरा संगीत सुनाई दे रहा था, जहाँ इवेंट के स्टॉल लगे हुए थे। दूसरी तरफ़ से,

साकुरा स्ट्रीट से मीठी चटनी और भुने हुए मांस की खुशबू हवा के साथ बहकर हम तक आ रही थी, जहाँ खाने-पीने के स्टॉल लगे हुए थे।

दोपहर के भोजन के समय, हम तीनों बाहर खड़े होकर ओकोनोमियाकी और सॉसेज खा रहे थे जो मेरे चाचा ने खाने के स्टॉल से खरीदे थे। "यह बहुत स्वादिष्ट है," मेरे चाचा ने आनंद से कहा।

मोमोको ने शांत भाव से कहा, "इस तरह का खाना भावनाओं से जुड़ा होता है। इसका स्वाद तो कुछ खास नहीं होता।"

बाद में, सूरज ढलने के बाद, मैं ताकानो के साथ हो लिया, जिसका काम अब खत्म हो चुका था, और हम 'द गोल्डन ड्रीम' की तलाश में इधर-उधर भटकने लगे। हम भीड़-भाड़ में से जल्दी-जल्दी आगे बढ़े और सड़क के एक छोर से दूसरे छोर तक लगभग हर दुकान को खंगाला। ताकानो मेरे बगल में चलते हुए मुड़ा और उदास स्वर में बोला, "जब हमने तीन साल पहले यह किया था, तब तोमोको हमारे साथ थी।"

यह सच था: टोमो तब हमारे साथ थी। और अब उसने उसका नंबर ब्लॉक कर दिया था। शायद आप कह सकते हैं कि ताकानो के लिए वह दिन मानो एक सुनहरा सपना था।

समय सीमित होने और दुकानों की अधिकता को देखते हुए, सभी दुकानों पर जाना संभव नहीं लग रहा था, इसलिए हमने बीच में ही उन्हें आपस में बाँटने का फैसला किया और एक घंटे बाद मोरिसाकी बुकशॉप के सामने फिर से मिलने का तय किया। अंततः, मेरी खोज व्यर्थ रही। ताकानो की भी। उसके चेहरे पर भाव देखकर ही मैं समझ गया कि उससे पूछने का कोई फायदा नहीं है।

उस शाम, त्योहार समाप्त होने के बाद, ताकानो और मैं अपनी चाची और चाचा के साथ करी खाने बाहर गए।

“तो, तुम्हें वो नहीं मिला। लगता है ऐसा ही होता है,” मोमोको ने अपनी बीफ करी खाते हुए कहा, इस बात को नज़रअंदाज़ करते हुए कि ताकानो को भूख नहीं लग रही थी।

“यह कोई किताब नहीं है जिसके बारे में मुझे पता हो। मुझे खेद है कि मैं आपकी और मदद नहीं कर सका,” मेरे चाचा ने ताकानो के लिए दुख जताते हुए कहा। ज़ाहिर है, मेरे चाचा ने अपनी करी कम तीखी मंगवाई थी।

“माफी मांगने की कोई जरूरत नहीं है,” ताकानो ने कहा। वह तेजी से अपना सिर हिला रहा था, लेकिन उसके कंधों के झुकने के तरीके से साफ पता चल रहा था कि उसका दिल टूट गया था।

मैं थक चुका था, और मुझे यह सोचने लगा था कि क्या हमारी खोज जारी रखने का कोई फायदा है। क्या इस तरह का लंबा-चौड़ा रास्ता अपनाने के बजाय टोमो से पूछना बेहतर नहीं होगा? हमारे पास इस बात का कोई पक्का सबूत नहीं था कि टोमो के पास पहले से ही वह किताब नहीं थी। लेकिन ताकानो ने अपनी पूरी कोशिश की थी, भले ही वह व्यर्थ ही क्यों न रही हो। और यही उसका एक बेहतरीन गुण था, इसलिए मैंने उसे और परेशान न करने का फैसला किया।

"यह अफसोस की बात है कि हमें वह नहीं मिला, लेकिन आपने उसे ढूंढने की कोशिश की, इससे टोमो खुश होगा।"

“बिल्कुल सही। मायने तो यही रखता है कि आपने क्या किया।”

"आपको ऐसा लगता है?"

"इसके अलावा, आप सिर्फ एक किताब से किसी लड़की को रिझाने की उम्मीद नहीं कर सकते," मोमोको ने कहा।

ताकानो मेज के उस पार झुककर घबराते हुए बोला, "मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था। उसे बहकाना? यह ख्याल तो मेरे मन में कभी आया ही नहीं।"

"ओह, क्या यह सही है?"

मैंने ताकानो का बचाव करते हुए कहा, "हाँ, ऐसा ही है। वैसे भी, ताकानो के मैसेज ब्लॉक हो रहे हैं। हमें जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए।"

“क्या मतलब, वो तुम्हें इतना नापसंद करती है? ये तो बहुत दुखद है,” मोमोको ने नाटकीय अंदाज़ में आसमान की ओर देखते हुए कहा। उसकी ये बात ताकानो को किसी मौत की सज़ा जैसी लगी।

“बस करो,” मेरे चाचा ने डांटते हुए कहा।

“ताकाको...” पता नहीं क्यों, ताकानो मुझे घृणा भरी निगाहों से देख रही थी।

“ओह, माफ़ कीजिए, मुझसे यह गलती हो गई,” मैंने कहा और तुरंत अपने दोनों हाथों से अपना मुंह ढक लिया। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। उसका नंबर ब्लॉक होने की बात गुप्त रखनी थी।

“इससे सावधान रहना होगा। यह बहुत ज्यादा बोलती है,” मोमोको ने कहा।

“नहीं,” मेरे चाचा ने कहा। “ताकाको रहस्यों के बारे में चुप रहती है, ठीक वैसे ही जैसे वह पैसों के बारे में कंजूस है।”

ताकानो ने मेरी ओर मुड़कर सिर झुकाया और मेरी चाची और चाचा की बेतुकी बातों को अनसुना कर दिया। "खैर, ताकाको, तुम्हें इस सब में घसीटने के लिए मैं माफी चाहता हूँ।"

मैंने तुमसे कहा था कि माफी मांगने की कोई जरूरत नहीं है। मुझे मजा आया। आसपास घूमना अच्छा लगा।

"यह सुनकर मुझे खुशी हुई, लेकिन फिर भी मुझे आपसे माफी मांगनी चाहिए।"

मैंने अभी-अभी तुमसे कहा कि तुम्हें इसकी बिल्कुल ज़रूरत नहीं है। लेकिन अगर टोमो को कोई आपत्ति नहीं है, तो मैं देखूंगी कि क्या मैं तुम्हें उसकी जन्मदिन की पार्टी में आमंत्रित कर सकती हूँ,” मैंने कहा।

ताकानो चाहे कितना भी निराश क्यों न हो, उसका इतना दयालु स्वभाव वाकई सराहनीय था। वह ऐसा ही इंसान था। और मुझे लगता है कि यही वजह थी कि उसके आसपास के सभी लोग उसे प्यार करते थे। मेरे मन में ख्याल आया, काश हम टोमो और उसे कुछ समय के लिए एक साथ ला पाते...

उस रविवार को मैं नेज़ू में टोमो के घर गई। यह मेरा वहाँ पहला अनुभव था। सप्ताहांत में उनकी छुट्टी होती थी, इसलिए मैं कार्यालय से लौटते समय उनके घर रुक गई। उनका अपार्टमेंट रेलवे स्टेशन से पाँच मिनट से भी कम दूरी पर था, एक दो मंजिला इमारत की दूसरी मंजिल पर एक कोने का फ्लैट, जो केवल महिलाओं के लिए था। मैंने स्टेशन के पास एक दुकान से उपहार के रूप में खरीदा हुआ केक हाथ में लिए हुए इंटरकॉम का बटन दबाया। टोमो तुरंत मुस्कुराते हुए बाहर आईं और मेरा स्वागत किया।

तोमो का अपार्टमेंट वैसा ही था जैसा मैंने सोचा था: सादा, साफ-सुथरा और स्टाइलिश। गर्म रंगों के पर्दे, फर्नीचर और बेडशीट सब एक-दूसरे से मेल खा रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे किसी परिष्कृत रुचि वाली युवती का अपार्टमेंट हो। बस एक बात अलग थी: किताबों की अलमारियां बहुत बड़ी थीं। वे छत तक जाती थीं। मुझे पूछने का मन हुआ कि क्या उसने इन्हें किसी व्यापारी से मंगवाया है। ज़ाहिर है, वे किताबों से इतनी भरी हुई थीं कि कहीं जगह ही नहीं बची थी। ऐसा लग रहा था जैसे वह अपनी छोटी सी किताबों की दुकान खोलने जा रही हो। जब आप किसी दोस्त के

घर जाते हैं, तो उनकी किताबों की अलमारियों में रखी किताबों को देखने में दिलचस्पी होना स्वाभाविक है। जब तोमो हमारे लिए चाय बना रही थी, तो मैंने उन विशाल किताबों की अलमारियों को ध्यान से देखने का मौका लिया। उनमें ज़्यादातर पुराने जापानी उपन्यास थे, लेकिन बॉडेलेयर और रोडनबैक जैसे विदेशी लेखकों की किताबें और द लॉर्ड ऑफ द रिंग्स और द अर्थसी साइकिल जैसी फंतासी श्रृंखलाएं भी थीं। (जहां तक मुझे पता चला, जिस किताब को मैं और ताकानो ढूंढ रहे थे, वह वहां नहीं थी।)

मैंने किताबों की अलमारियों पर नज़र डालते हुए कहा, "ऐसा लगता है कि यहाँ आना मुश्किल रहा होगा।"

तोमो मेरी बात समझ गई। “ओह, बिलकुल!” उसने कहा। “इन किताबों से ही दस गत्ते के डिब्बे भर गए। अब मैं और किताबें नहीं खरीदूंगी। लेकिन ताकाको, तुम अपनी किताबों को व्यवस्थित करने या शिफ्ट होने पर पैक करने के लिए क्या करती हो?”

“मेरे पास अभी उतनी किताबें नहीं हैं। मुझे उन्हें संभालकर रखने की ज्यादा चिंता नहीं है, इसलिए मैं उन्हें इकट्ठा करके बेच देता हूँ।”

“मैं समझ गया।” टोमो चुप हो गया। “मुझे और किताबें बेचनी शुरू करनी होंगी, वरना मैं मुश्किल में पड़ जाऊंगा। लेकिन एक बार मुझे कोई किताब पसंद आ जाए, तो मैं उसे छोड़ नहीं पाता।”

चाय के बाद, जब हम टोमो द्वारा तैयार किया गया शानदार दक्षिण-पूर्वी एशियाई भोजन खा रहे थे, मैंने कहा कि चूंकि उसका छब्बीसवाँ जन्मदिन जल्द ही आने वाला है, इसलिए हमें जश्न मनाने के लिए फिर से बाहर डिनर पर जाना चाहिए। हैरानी की बात यह थी कि उसने अपने जन्मदिन के लिए लगभग कुछ भी योजना नहीं बनाई थी, इसलिए सब कुछ बहुत जल्दी तय हो गया।

मैंने बातचीत के इस मौके का फायदा उठाते हुए पूछा, "मुझे आश्चर्य है कि क्या हमें ताकानो को आमंत्रित करना चाहिए?"

उसका नाम सुनते ही, टोमो, जो अपनी चॉपस्टिक्स से एक ताज़ा स्प्रिंग रोल उठाने के लिए आगे बढ़ रही थी, अचानक रुक गई। वह मुड़ी और दर्द भरे चेहरे से मेरी तरफ देखा। "क्या तुमने ताकानो कहा?"

"हाँ, क्या यह एक बुरा विचार है?"

“यह बुरा विचार नहीं है, बस...” तोमो ने हिचकिचाते हुए कहा। उसकी आवाज़ के लहजे से मैं समझ गई कि वह कितनी परेशान थी, और मैं आगे कुछ कहने से हिचकिचाई। मामला जितना मैंने सोचा था उससे कहीं ज़्यादा गंभीर हो सकता था। लेकिन ताकानो की खातिर, मैं यह जानना चाहती थी कि उसने क्या गलती की है। जल्दी से बोलते हुए, मैंने उसे ताकानो से सुनी हुई बातें बताईं और विनम्रता से पूछा कि क्या कुछ हुआ है।

“लेकिन देखो,” टोमो ने और भी हिचकिचाते हुए कहा। “मैंने कॉफी शॉप में अपनी नौकरी छोड़ दी थी, और मुझे उम्मीद नहीं थी कि उसके बाद हम संपर्क में रहेंगे।”

यह मानना मुश्किल था कि टोमो इतनी मामूली वजह से उसका नंबर ब्लॉक कर देगी। टोमो और ताकानो की इतनी अच्छी बनती थी कि मुझे लगा था कि शायद उनके बीच प्यार का रिश्ता बन जाए। अगर ताकानो ने कोई अक्षम्य गलती न की हो, तो इसे समझाने का कोई तरीका नहीं था।

"क्या उसने गलती से भी कुछ ऐसा किया जिससे आपको बुरा लगा?"

“बिल्कुल नहीं,” टोमो ने हैरानी से ऊपर देखते हुए कहा। यही एक बात थी जिसे उसने साफ-साफ नकार दिया। और यह सुनकर मुझे राहत मिली। एक पल के लिए, मुझे ऐसा लगने लगा था जैसे मैं ताकानो की माँ हूँ।

“ऐसा कुछ नहीं हुआ। ताकानो सचमुच बहुत नेक दिल है। मैं उसकी इस बात की तारीफ़ करती हूँ। उसमें कोई कमी नहीं है। कमी मुझमें है,” तोमो ने कहा। उसने अपनी नज़रें नीचे झुका लीं और अपने होंठों को इतनी ज़ोर से सिकोड़ लिया कि वे एक सीधी रेखा बन गए। मैंने उसकी आँखों में आँसू भरते देखे और मैं खुद काँप उठी।

“यह सच नहीं है, टोमो। तुममें कोई कमी नहीं है। अगर तुम ताकानो जैसा महसूस नहीं करते, तो इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है।”

मुझे एहसास हुआ कि मैंने अनजाने में कुछ ऐसा कह दिया जो मुझे नहीं कहना चाहिए था। ताकानो ने उससे कभी एक शब्द भी नहीं कहा था कि वह उससे कितना प्यार करता है।

मुझे माफ़ करना, मैं, उम...

“कोई बात नहीं। मुझे अच्छी तरह पता था कि वह मेरी परवाह करता है। मुझे उस दिन इसका एहसास हो गया था जब हम तीनों बहुत समय पहले पुस्तक महोत्सव में गए थे। लेकिन जानते हुए भी, मैंने हमेशा अनदेखा करने का नाटक किया। मैंने इस

बात का फायदा उठाया कि ताकानो ने कभी कुछ नहीं कहा, और मैंने अनजान होने का नाटक किया, इसलिए हम दोस्त बने रहे।"

"इसीलिए मुझे नहीं लगता कि आपने कुछ गलत किया है।"

"यह सच नहीं है। मुझमें कुछ गड़बड़ है। जैसे ही मुझे विपरीत लिंग के किसी व्यक्ति से इस तरह का ध्यान मिलता है, मैं अचानक डर जाती हूँ और खुद को अलग-थलग करने की कोशिश करती हूँ। मुझे डर लगता है कि अगर मैंने भी वैसा ही ध्यान दिया तो मैं इसे संभाल नहीं पाऊँगी। मुझे पता है यह पागलपन है, लेकिन मैं कुछ नहीं कर सकती।"

तोमो ने मेज पर रखे खाने पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। वह चुप हो गई और बस नीचे देखती रही। उसकी आँखों में जो आँसू उमड़ रहे थे, वे अब बहने ही वाले थे। मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने अनजाने में उसे इस हालत में पहुँचा दिया हो। उसे देखकर मेरा दिल दुखने लगा। कमरा इतना शांत हो गया कि छत पर लगी फ्लोरोसेंट लाइट की हल्की सी भिनभिनाहट ही सुनाई दे रही थी।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं और कुछ पूछ सकूँ या नहीं। शायद यही महसूस करते हुए टोमो ने कहा, "क्या हम थोड़ी देर और बात कर सकते हैं? मुझे नहीं लगता कि मैं इसे अच्छे से शब्दों में व्यक्त कर पाऊँगा, लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूँ।"

"क्या मैं हमारे लिए चाय बना दूं?" मैंने उसे और उदास होने से बचाने के लिए खुशी से कहा। "कुछ गर्म पीने से तुम्हें थोड़ा बेहतर महसूस होगा।"

"ओह, मैं..."

टोमो उठने लगी, लेकिन मैंने उसे रोक दिया और रसोई में चली गई, जहाँ मैंने जल्दी से चायदानी और कप साफ किए जिनका हमने अभी इस्तेमाल किया था, और हम सबके लिए एक नई केतली में काली चाय बनाई।

"धन्यवाद," टोमो ने अपना कप लेते हुए कहा और धीरे से उसे अपने होठों तक ले गई। "ताकानो में कोई खराबी नहीं है। खराबी मुझमें है।" उसने कुछ देर पहले कहे शब्दों को दोहराया, लेकिन इस बार उसकी आवाज़ थोड़ी शांत थी। "मैंने आपको पहले भी बताया था कि मैंने पढ़ना कैसे शुरू किया।"

"उम, हाँ, आपने कहा था कि यह आपकी बहन का प्रभाव था।"

"हाँ, बिल्कुल। मेरी एक बहन थी जो मुझसे पाँच साल बड़ी थी। बचपन से ही मैं उसकी नकल करती थी, सिर्फ़ किताबों में ही नहीं, हर चीज़ में। मेरी बहन मुझसे

अलग, बुद्धिमान और सुंदर थी। वह हर काम कर सकती थी। उसका स्वभाव थोड़ा गुस्सैल था, लेकिन वह हमेशा मेरे प्रति दयालु थी।" टोमो ने एक पल के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं, मानो वह अपने जीवन के उस दौर की यादों को ताज़ा कर रही हो। फिर उसने बोलना शुरू किया। मेरी बहन का एक बॉयफ्रेंड था, जिसके साथ वो हाई स्कूल से ही रिलेशनशिप में थी। वो बहुत शांत स्वभाव का था, मेरी बहन से बिलकुल अलग। सच कहूँ तो, उसी के प्रभाव में आकर मेरी बहन ने किताबें पढ़ना शुरू किया। और फिर मैं भी उससे इतना प्रभावित हो गई कि मुझे भी उससे उतना ही प्यार हो गया जितना मेरी बहन को था। वो मेरा पहला प्यार था। तब मैं प्राइमरी स्कूल में थी और मुझे इस बात का एहसास नहीं था। मैं बस उनके साथ खेलती रहती थी। मिडिल स्कूल में आने पर मुझे इस बात का एहसास हुआ। लेकिन कोई भी देख सकता था कि वो दोनों एक-दूसरे के लिए कितने उपयुक्त थे, और लंबे समय तक मैंने अपने दिल की बात कहने के बारे में कभी सोचा भी नहीं। मैं बस इस बात से खुश थी कि वो मेरे साथ थे, और कभी-कभी वे मुझे अपनी छोटी सी दुनिया में आने देते थे।

तोमो ने चाय की एक घूंट ली और मेरी प्रतिक्रिया जानने के लिए मेरी तरफ देखा। मैंने चुपचाप सिर हिलाया, मानो कह रही हो कि मैं सुन रही हूँ, और उसने जवाब में उदास मुस्कान दी।

"सत्रह साल की होने के ठीक बाद, मेरी बहन की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई। जिस बस से वह हमेशा विश्वविद्यालय जाती थी, उसका चालक सो गया और सामने से आ रही एक कार से उसकी सीधी टक्कर हो गई।"

तोमो ने अपने होंठ सिकोड़ लिए और आँखें बंद कर लीं, मानो वह अपनी बहन की मृत्यु का शोक मना रही हो। मैंने कुछ कहना शुरू किया, लेकिन उसने सिर हिलाकर मेरी बात काट दी। "जब मेरी बहन की मृत्यु हुई, तो मैं इतनी दुखी थी कि मुझे लगा जैसे मैं भी मर जाऊँगी। सचमुच ऐसा लगा जैसे मेरा सीना फट जाएगा। लेकिन कुछ देर बाद, मैंने महसूस किया कि मेरे दिल में कहीं एक और भावना जाग रही थी। वह आशा थी, आशा कि जो कुछ हुआ उसके बाद शायद वह मेरी तरफ ध्यान दे। वह एक बहुत ही घिनौनी, भयानक, भयावह भावना थी।"

लेकिन टोमो...

तोमो अब भी नीचे देख रही थी, उसकी निगाहें ज़मीन पर एक बिंदु पर टिकी हुई थीं। मानो वह अपने नीचे एक विशाल, काले सागर को घूर रही हो। मैंने कितनी ही बार

इस बात पर विचार किया, लेकिन मुझे सही शब्द नहीं मिल रहे थे, कुछ ऐसा जो उस पर पड़े इस प्रभाव को कम कर सके।

“मैं उस तरह महसूस करने के लिए खुद को कभी माफ नहीं कर पाई। किसी ने भी मुझे कुछ समझाने की कोशिश की, उससे मेरा यह भाव नहीं बदला। अपनी प्यारी बहन को खोने के बाद मुझे जो दुख हुआ, उसके बावजूद मैं...” तभी टोमो अचानक चुप हो गई और ऊपर देखने लगी। “मुझे माफ करना। यह बहुत ही दुखद कहानी है,” उसने माफी मांगते हुए कहा।

मैं अपना सिर हिलाती रही। "और तुम्हारी बहन का बॉयफ्रेंड, उसने कैसे..."

“उसके अंतिम संस्कार के बाद से मैंने उसे बिलकुल नहीं देखा है। वह परिवार का दोस्त है, और मैंने सुना है कि वह अभी भी कभी-कभी मेरे माता-पिता से मिलने आता है। नई गर्लफ्रेंड मिलने के बाद भी वह आता रहता है। इतने समय बाद भी। और लोग कहते हैं कि वह मुझसे मिलना चाहता है। लेकिन मैं ज़िंदगी भर उसे फिर कभी नहीं देखूंगी। मैं उस समय जो महसूस करती थी, उसे कभी याद नहीं करना चाहती। और यही बात उन सभी पर लागू होती है जिनके लिए मैं शायद ऐसा ही महसूस करती हूँ।”

“तो जब आप देखते हैं कि ताकानो जैसे किसी व्यक्ति के मन में आपके लिए भावनाएं हैं...”

“मैं डर जाती हूँ और भाग जाती हूँ। मेरा मन करता है कि उस पर चिल्लाकर उसे रोक दूँ। मैं ऐसी इंसान नहीं हूँ जिसे प्यार किया जा सके। मैं अपनी ज़िंदगी इस बात से बचने की कोशिश करती हूँ कि कोई मुझसे प्यार न करे। लेकिन ताकानो हमेशा इतना दयालु और नेक है। मुझे डर है कि मैंने उसका थोड़ा सा फ़ायदा उठा लिया। और इसी वजह से मैंने उसकी भावनाओं को ठेस पहुँचाई। मैं कितनी बुरी हूँ। मुझे उससे मिलने पर माफ़ी माँगनी होगी।”

“मुझे नहीं पता, टोमो। क्या इस तरह जीना तुम्हें दुखी नहीं करता?”

“जब मैं उदास होती हूँ, तो पढ़ती हूँ। मैं घंटों पढ़ सकती हूँ। पढ़ने से मेरे अंदर का उथल-पुथल शांत हो जाता है और मुझे शांति मिलती है। क्योंकि जब मैं किताब की दुनिया में खो जाती हूँ, तो किसी को दुख नहीं पहुँचता,” टोमो ने मुस्कुराते हुए कहा। लेकिन उसकी मुस्कान ने उसे पहले से कहीं ज़्यादा उदास बना दिया था। या शायद जब मैंने शुरू में ही यह मान लिया था कि वह एक हंसमुख, मिलनसार लड़की है, तो मैंने कभी उसके अंदर छिपी सच्चाई को जानने की कोशिश ही नहीं की।

लेकिन अब जब मुझे पता चल गया था, तो क्या मैं कुछ ऐसा कह सकता था जिससे उसका जमा हुआ दिल पिघल जाए?

असल में, जब उसने मेरे लिए मुस्कुराते हुए कहा, "सुनने के लिए धन्यवाद। मुझे थोड़ा बेहतर लग रहा है," तो मैं जवाब में कुछ नहीं कह सका। यह एहसास करना बहुत दर्दनाक था कि यही वजह थी कि वह इतना पढ़ती थी। मैं बस उस दर्द को याद कर सकता था जो मानो मेरे सीने में गहराई तक समा गया था।

तोमो के घर जाने के दो दिन बाद, हल्की बूंदा-बांदी वाली शाम थी। मैं मोरिसाकी बुकशॉप से वापस घर आ रही थी। वाडा से मिलने का कोई प्लान नहीं था, इसलिए मैं अपनी दूसरी पसंदीदा कॉफी शॉप, किस्साकू में रुक गई। तोमो ने जो कहा था, वो अभी भी मेरे दिमाग में घूम रहा था और मैं उदास थी। मुझे सीधे घर जाने का मन नहीं कर रहा था।

वहाँ करीब एक घंटा यूँ ही समय बिताने के बाद, मैंने जाने का फैसला किया, इसलिए मैंने अपना छाता खोला और जिम्बोचो स्टेशन की ओर जाने वाली सड़क पर चलने लगा। तभी मेरी नज़र अपने से थोड़ा आगे चल रहे एक आदमी पर पड़ी। पीछे से उस जानी-पहचानी जैकेट में उसे देखकर... निस्संदेह वह वाडा ही था। वह काम के बाद घर जा रहा होगा।

मैं उसके पीछे-पीछे दौड़ा और उसका नाम पुकारने ही वाला था कि वाडा एक दवा की दुकान के ठीक सामने ट्रैफिक सिग्नल पर रुक गया। तभी एक युवती दौड़ती हुई आई और उसके सामने खड़ी हो गई। ऐसा लग रहा था मानो वे दोनों वहीं मिलने की योजना बना रहे थे।

मैंने लाल छाते के नीचे से बस एक झलक उसका चेहरा देखा, लेकिन मैं तुरंत समझ गया कि वह कौन है। निःसंदेह, वह वही महिला थी जिसके साथ वाडा मुझसे पहले डेट पर गया था। उसके पहनावे और उसके हाव-भाव से लग रहा था कि मोरिसाकी बुकशॉप में पिछली बार जब मैंने उसे देखा था, तब से उसमें ज़रा भी बदलाव नहीं आया था।

वे दोनों किसी बात पर चर्चा कर रही थीं। वाडा ने उसकी तरफ देखा और सिर हिलाया। मैं तुरंत एक रेस्टोरेंट के साइनबोर्ड के पीछे छिप गई। मुझे नहीं पता था कि मुझे छिपने की ज़रूरत क्यों महसूस हुई, लेकिन मैंने खुद को ऐसा करते हुए पाया। और जब मैं छिपी हुई थी, वे दोनों साथ-साथ चलते हुए चली गईं।

मैं क्या कर रहा था? मैंने खुद से यही सवाल पूछा, उनके पीछे चलते हुए, उनसे थोड़ी दूरी बनाए रखते हुए। क्या मैं बस उनका पीछा कर रहा था? मैंने इस बारे में सोचा। हालांकि, यह सच था। अगर मैं उनका पीछा नहीं कर रहा था, तो मैं अपने इस काम को क्या कहूँ? हल्की बारिश में, यासुकुनी स्ट्रीट पर इतने सारे पुरुष और महिलाएं छाते लिए काम से घर लौट रहे थे कि वाडा और उसकी पूर्व प्रेमिका के मुझे देखने की कोई वजह नहीं थी। वे दोनों सड़क पर चलते रहे, एक पल के लिए रुके, और फिर एक डोटोर कॉफी शॉप में चले गए जैसे कि यह बिल्कुल सही काम हो।

मैं कुछ देर तक प्रवेश द्वार के सामने इधर-उधर घूमता रहा, यह सोचकर कि शायद वे जल्द ही बाहर आ जाएँगे। जब मैं कॉफी शॉप के सामने यूँ ही बेमतलब घूम रहा था, तो काम से घर लौट रहे कुछ वेतनभोगी लोग वहाँ से गुज़रे और मुझे तिरछी नज़रों से देखते रहे, मानो मैं उनके रास्ते में रुकावट बन रहा हूँ।

मैं शायद दस मिनट तक वहीं रुका रहा। मन ही मन मैं शांत महसूस कर रहा था, लेकिन साथ ही साथ बुरी तरह उलझन में भी था। चारों ओर देखने पर मैंने पाया कि बारिश लगभग रुक चुकी थी। सड़क पर चल रहे लोगों ने अपने छाते बंद कर लिए थे।

छाता रखते समय मुझे अपने मन में कुछ बुदबुदाहट सुनाई दी। फिर मैं थके-हारे कदमों से वापस स्टेशन की ओर चल पड़ा।

10

उस शाम जो कुछ हुआ, उसका मुझ पर उम्मीद से कहीं ज़्यादा गहरा असर हुआ। दिन भर मुझे बेचैनी महसूस होती रही और रात को नींद नहीं आई। पढ़ने का मन भी नहीं करता था।

बात इतनी बिगड़ गई कि मैंने ऑफिस में एक बहुत बड़ी गलती कर दी, और उन्होंने मेरे द्वारा क्लाइंट को भेजे गए डेटा में एक बड़ी गड़बड़ी का पता लगा लिया। इस वजह से वाडा नंबर 2 ने मुझे बुरी तरह डांटा। लेकिन यह सब पूरी तरह से मेरी गलती थी।

मैं बिलकुल निकम्मा था। मैं किसी भी चीज पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा था।

रात में अपने अपार्टमेंट में, जब मैं अपने फ़्यूटन पर बिल्कुल अकेला था, तो मैं अपने दिमाग में इन मूर्खतापूर्ण बातों के बारे में सोचना बंद नहीं कर पा रहा था।

रिश्ते में होने का मतलब क्या होता है? मैं छत को घूरते हुए सोच रही थी। हम फ़िल्म देखने जाते थे, बाहर खाना खाने जाते थे, एक-दूसरे के घर सोते थे। लेकिन अगर मैं कभी उसके दिल में जगह नहीं बना पाई, तो क्या हम कभी सच में साथ रह पाएंगे? वाडा के लिए मेरी असल अहमियत क्या थी? उदाहरण के तौर पर, क्या मुझे उस रात जो हुआ उसके बारे में उससे सवाल करने का हक था? इस बारे में सोचना भी मुझे ऐसा महसूस करा रहा था जैसे मुझमें ही कुछ कमी है।

इन सब बातों की वजह से मुझे वाडा से बात करने में भी डर लगता था। पहले मुझे उसके फोन का बेसब्री से इंतज़ार रहता था, लेकिन अब जब भी मेरे फोन पर उसका नाम दिखता था, तो मेरा मन करता था कि मैं भाग जाऊं और छिप जाऊं।

उस रात के बाद भी वाडा की आवाज़ फ़ोन पर बिल्कुल वैसी ही सुनाई देती थी। हमेशा की तरह शांत और मधुर। पहले, जब भी मैं उसकी आवाज़ सुनता था, मुझे सुकून मिलता था। मानो मैं किसी शांत झील को निहार रहा हूँ। लेकिन अब, उसकी आवाज़ बहुत दूर से आती हुई लगती थी।

“क्या हुआ?” वाडा ने चिंतित स्वर में मुझसे पूछा। लेकिन मैं अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में कभी अच्छा नहीं था। “क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है?” उसकी आवाज़ से मुझे उलझन का एहसास हुआ।

नहीं। कुछ नहीं है। शुभ रात्रि।

फोन रखने से ठीक पहले, मैंने उसे बताया कि मुझे अगले हफ्ते की हमारी मुलाकात रद्द करनी होगी क्योंकि मुझे देर तक काम करना पड़ेगा।

जल्द ही, मैं अपने विचारों में उलझे रहने और उदास रहने की सीमा तक पहुँच गया। मैंने खुद को उस छोटे से रेस्तरां की ओर जाते हुए पाया जहाँ मोमोको काम करती थी।

"अरे बाप रे, तुम्हारा मतलब है कि वाडा इतनी बेशर्मी वाली हरकत करेगा?"

मैंने उसे बताया था कि यह सब मेरे एक दोस्त के साथ हुआ था, लेकिन मोमोको ने मेरी चाल को आसानी से समझ लिया। उसे धोखा देने का कोई तरीका नहीं था। जब वह सफेद एप्रन पहने मुझे देख रही थी, मैं साके पी रहा था, और फिर शब्द आसानी से निकल आए, मानो मेरे अंदर उलझा हुआ धागा आखिरकार खुल गया हो। मैंने पूरी कहानी सच-सच बता दी, जिसमें यह भी शामिल था कि मैं अब भी उस घटना से उबर नहीं पाया हूँ।

"हे भगवान, यह जगह तो रिलेशनशिप काउंसलिंग सेंटर में बदलती जा रही है।"

"मुझे माफ़ करें।"

“खैर, जब तक यह मेरी प्यारी भतीजी के लिए है,” मोमोको ने मुस्कुराते हुए कहा, हालांकि मुझे शक था कि क्या वह सचमुच ऐसा कह रही थी। “क्या तुम वाडा से इस बात की पुष्टि करने से डर रही हो?” उसने पूछा।

मैंने चुपचाप सिर हिलाया।

"लेकिन वाडा उस तरह का व्यक्ति नहीं है, है ना?"

"मुझे इस बात का बहुत डर है कि वह उस तरह का इंसान नहीं है। क्योंकि यह सोचकर ही मुझे बहुत डर लगता है कि वह मुझे धोखा दे सकता है।"

“हे, ताकाको।” मोमोको काउंटर के पीछे से आई और मेरे बगल में बैठ गई। “सुनो, मैं कोई बड़ी विद्वान नहीं हूँ। मैंने ज़्यादा पढ़ा-लिखा नहीं है। सटोरू जितने समय में दस किताबें पढ़ लेता है, उतने समय में मैं मुश्किल से एक किताब पढ़ पाती हूँ। लेकिन मुझे लगता है कि मैं लोगों को अच्छी तरह परख सकती हूँ। जहाँ तक मैं समझती हूँ, वाडा तुम्हें कभी जानबूझकर नुकसान नहीं पहुँचाएगा। यह उसकी आँखों में दिखता है। लेकिन मुझे लगता है कि शायद यहाँ असली समस्या वह दीवार है जो तुमने अपने चारों ओर बना ली है।”

“दीवार?” मैंने दोहराया।

मेरे बगल में बैठी मोमोको मुझे घूर रही थी, मानो मेरी आंखों में सीधे देखने की कोशिश कर रही हो।

आप समझ ही गए होंगे कि मेरा मतलब क्या है, है ना?

"मेरा मानना है कि मैं यह कर सकता हूं।"

मेरे पिछले बॉयफ्रेंड के साथ जो हुआ, उसके बाद से मैं अनजाने में ही किसी पर भी पूरी तरह भरोसा करने से बच रही थी। और मैं डरी हुई थी, डरी हुई थी क्योंकि मैंने पहले भी किसी पर भरोसा करने में लापरवाही बरती थी, फिर से चोट लगने से डरी हुई थी, अपनी मूर्खता के लिए खुद को कोसने और फिर से सब कुछ बर्बाद कर देने की इच्छा से डरी हुई थी।

इसीलिए मैं वाडा की कही या की गई हर बात पर हमेशा जरूरत से ज्यादा प्रतिक्रिया देता था, और यह सिर्फ इस बार की बात नहीं है।

“अगर तुम अपना दिल नहीं खोलोगे, तो दूसरे से यह उम्मीद करना स्वार्थपूर्ण है कि वह अपना दिल तुम्हारे लिए खोलेगा, क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता?” मोमोको ने कहा। “जब तक तुम पहला कदम नहीं उठाओगे, मुझे नहीं लगता कि कुछ बेहतर होगा। आखिर वाडा भी एक इंसान है। वह तुम्हारी इस लगातार अनिर्णय की स्थिति से तंग आ सकता है, और अगर ऐसा हुआ, तो पछतावा तुम्हें ही होगा।”

मोमोको की बात सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ। मैंने वाडा से बहुत कुछ माँगा था, लेकिन बदले में कुछ नहीं दिया था। और जैसा उसने कहा, मैंने वाडा के हर छोटे-बड़े काम और बात को समझने की बहुत कोशिश की थी, उसकी आँखों में छिपे भावों को जानने का प्रयास किया था।

जब मैं इस बारे में सोच रही थी, तभी मुझे रसोई से एक तेज़ चीख सुनाई दी। मालिक श्री नाकासोनो चिल्ला रहे थे, "मोमोको, मेरी मदद करो!"

“हां, अभी,” मोमोको ने चिल्लाकर जवाब दिया और अपनी कुर्सी से उठ गई।

“खैर, मुझे जाना होगा, लेकिन मेरी एक मदद करो और अपनी आंटी मोमोको को ज़्यादा परेशान मत करना। जल्दी करो और मुझे तसल्ली दो।” उसने मेरा गाल चुटकी से दबाया और मुझे जवाब देने का मौका दिए बिना पूरी रफ्तार से रसोई की ओर भागी, जहाँ श्री नाकासोनो अभी भी चिल्ला रहे थे, “मदद! मदद!”

कुछ दिनों बाद, गुरुवार की रात को हमने टोमो की जन्मदिन की पार्टी रखी। हमने इसे पार्टी कहा, लेकिन असल में यह हम तीनों के साथ एक आरामदायक शाम थी। टोमो के अनुरोध पर, हमने मोरिसाकी बुकशॉप की दूसरी मंजिल पर रात का खाना खाने का फैसला किया था, और गरमागरम सूप बनाने के लिए हमने वह लंबी मेज ऊपर ला दी थी जिसका इस्तेमाल आम तौर पर काउंटर के रूप में किया जाता था।

हमने अपने चाचा और मोमोको को आमंत्रित करने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने यह कहकर मना कर दिया कि पार्टी "उनके जैसे बूढ़े लोगों के लिए उपयुक्त जगह नहीं है।" ताकानो ने पहले तो आने से इनकार कर दिया, यह कहते हुए कि टोमो शायद उसे वहाँ नहीं चाहेगी, लेकिन मैंने उसे समझाया कि यह सच नहीं है, और लगभग ज़बरदस्ती उसे हमारे साथ आने के लिए मना लिया। वह घबराए हुए चेहरे के साथ आया, ज़ाहिर है, उसने हल्के कपड़े पहने थे, केवल एक नारंगी रंग की हुडी पहनी हुई थी। मैं यह सोचे बिना नहीं रह सकी कि उसे अपनी प्रेमिका के साथ इस रात के लिए थोड़ा और स्टाइलिश कपड़े पहनने चाहिए थे।

हालांकि तोमो को पता था कि ताकानो आ रहा है, फिर भी उन दोनों ने किताबों की दुकान के दरवाजे पर बस एक-दूसरे को नमस्ते कहा और उसके बाद वे अजीब तरह से घबराए हुए लग रहे थे। मैं यह तो नहीं कह सकती कि वाडा के साथ सब ठीक था, लेकिन यहाँ हालात वाकई बहुत खराब लग रहे थे, इसलिए मैंने खुद को खुश रहने के लिए मजबूर किया। हालांकि मेरी खुशी सिर्फ दिखावटी थी, और अंततः इससे माहौल और भी खराब हो गया।

इस उदास वातावरण में, हम गरमागरम सूप को थोड़ा-थोड़ा करके खा रहे थे, लगभग एक शब्द भी नहीं बोल रहे थे। ताकानो और मैं बीयर पी रहे थे, जबकि टोमो, जो शराब नहीं पीता था, संतरे का रस पी रहा था। टोमो ने सिर्फ सब्जियां खाईं; ताकानो ने सिर्फ टोफू खाया।

लेकिन हमने ये सब तोमो के जन्मदिन के लिए किया है, मैंने मन ही मन सोचा। उन दोनों को चुपचाप बैठे हुए, सिर्फ चॉपस्टिक हिलाते हुए देखकर, मेरी झुंझलाहट बढ़ती ही गई। और ज़ाहिर है, मेरी झुंझलाहट का सबसे ज़्यादा असर ताकानो पर पड़ा।

“ताकानो, क्या तुम सिर्फ टोफू खाना छोड़ सकते हो? कुछ सब्जियां और चिकन भी खाओ।”

ताकानो ने अभी-अभी टोफू के दो बड़े, गोल टुकड़े लिए थे और उन्हें अकेले ही खा रहा था।

“क्या? ओह, मुझे माफ़ करना। मुझे लगा कि बहुत सारा टोफू बच गया है। मैंने सोचा कि आप दोनों को यह पसंद नहीं आया।” ताकानो घबरा गया, लेकिन मैंने उससे सवाल पूछना जारी रखा।

“यह फैसला खुद मत लो। मैं संतुलित भोजन करने की कोशिश कर रहा हूँ। टोमो, तुम्हें भी टोफू चाहिए ना?”

टोमो अचानक बातचीत में शामिल हो जाने से चौंक गई। उसने हमारी तरफ देखा और कहा, "नहीं, मैं ठीक हूँ। ताकानो, तुम इसे खा सकते हो।"

“टोमो, तुम ज्यादा विनम्र नहीं हो सकते। आज तुम्हारा जन्मदिन है,” मैंने कहा।

ताकानो ने सहमति में तेज़ी से सिर हिलाया। "बिल्कुल सही। मैं वादा करता हूँ कि अब टोफू का एक टुकड़ा भी नहीं छूऊँगा। आप जितना चाहें उतना खा सकते हैं।"

वह टोफू के टुकड़ों को वापस रखने ही वाला था, इसलिए मैं उसे रोकने के लिए दौड़ पड़ा।

उसके बाद, हमने अपनी नायिका को अकेला छोड़ दिया और टोफू को लेकर आपस में बहस करने लगे। टोमो हमें देखती रही, मानो उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि क्या करे। अंत में, जब मैंने शिकायत की कि ताकानो तो मौसम के हिसाब से कपड़े भी नहीं पहनता, तो टोमो का सब्र टूट गया और उसने बीच में दखल दिया।

“उम, टोफू कोई समस्या नहीं है। ज़्यादा ज़रूरी ये है कि मुझे ताकानो से माफ़ी माँगनी है,” उसने उसकी ओर मुड़ते हुए कहा। “मैंने तुम्हारे साथ बहुत बुरा बर्ताव किया। ये पूरी तरह मेरी गलती है। मुझे माफ़ कर दो,” उसने झुककर गहरी संवेदना व्यक्त की।

जैसा कि उम्मीद की जा सकती थी, ताकानो घबरा गया और जिस क्षण उसने खड़े होने की कोशिश की, उसी क्षण उसका घुटना मेज के कोने से टकरा गया।

“नहीं, कृपया, मुझे माफी मांगनी चाहिए,” उसने अपने दर्द भरे घुटने से कराहते हुए कहा। टोमो ने फिर से माफी मांगी। जब मैं ताकानो द्वारा मेज पर फैलाई गई गंदगी को साफ कर रहा था, तो मैंने उन दोनों से कहा, “चलिए बात यहीं खत्म करते हैं, ठीक है?”

ताकानो की आंखों में आंसू थे, शायद टोमो के लिए उसकी भावनाओं के कारण या उसके घुटने के दर्द के कारण, और ऐसा लग रहा था कि वह कुछ और कहना चाहता था, लेकिन वह अनिच्छा से बैठ गया और बोलना बंद कर दिया।

खैर, उसके बाद माहौल में छाई उदासी छंटने लगी। मैंने तोमो को जन्मदिन के तोहफे देने का मौका लपक लिया। मेरा तोहफा लिली के आकार का एक ब्रोच था, जो मुझे लगा कि उसे पसंद आएगा; ताकानो का तोहफा रंगीन कांच का एक लैंप था। लैंप को प्रकाशस्तंभ के आकार में बड़ी बारीकी से तराशा गया था। यह वाकई एक अद्भुत वस्तु थी, ऐसी चीज जो मौसम के हिसाब से कपड़े पहनने वाला कोई लड़का चुन सकता है। तोमो आखिरकार मुस्कुराई और बोली कि दोनों तोहफे बहुत अच्छे हैं।

“दरअसल, ताकानो तुम्हें कुछ और तोहफ़ा देना चाहता था,” मैंने ताकानो के रोकने की कोशिशों को नज़रअंदाज़ करते हुए कहा। अब इसे गुप्त रखने की कोई ज़रूरत नहीं थी। “लेकिन हमें वो किताब नहीं मिली, तोमो। 'द गोल्डन ड्रीम'। तुम उसे इतने समय से ढूंढ रहे हो, है ना?”

टोमो का मुंह खुला रह गया। वह अचंभित लग रही थी। उसने मेरी तरफ मुड़कर हैरानी से पूछा, "क्या? आप उस किताब को ढूंढ रहे थे?"

“हाँ, ठीक है, लेकिन...”

“मैं माफी मांगता हूं। मुझे हमेशा याद था कि आपने सेवूर में इसके बारे में क्या कहा था। मुझे लगता है कि मैंने कुछ ज्यादा ही बोल दिया,” ताकानो ने कहा। “मुझे खेद है।”

ताकानो की बात सुनकर टोमो एक बार फिर अचंभित हो गई। "नहीं, ताकानो, ऐसी बात नहीं है। वह किताब असल में मौजूद ही नहीं है।"

अब चौंकने की बारी हमारी थी।

“क्या? सचमुच? लेकिन...”

मुझे खेद है। मैंने इसे इस तरह से वर्णित किया जिससे यह गलतफहमी पैदा हुई।

“लेकिन जब ताकानो ने इसे ऑनलाइन खोजा, तो उसे ऐसे लोगों की पोस्ट मिलीं जो इसे खोज रहे थे।” ताकानो ने मेरी सहमति में सिर हिलाया।

“ऐसा लगता है कि और भी लोग थे जो मानते थे कि यह मौजूद है। कुछ हद तक, यह लगभग एक अफवाह बन गई है। आप इसे एक काल्पनिक किताब मान सकते हैं,” टोमो ने माफी मांगते हुए कहा।

उस स्थिति में, दुनिया के सबसे बेहतरीन किताबों के इलाके में भी खोजने पर भी वह किताब हमें नहीं मिल सकती थी। इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि मेरे चाचा को भी इसके बारे में पता नहीं था। ताकानो से ऐसी जल्दबाजी में निष्कर्ष निकालने की उम्मीद करना स्वाभाविक था। जब ताकानो वहाँ अचंभित बैठा था, तो मैंने उसे घृणा भरी निगाहों से देखा। वैसे, मुझे कभी ज़रा भी शक नहीं था कि वह किताब मौजूद नहीं होगी, इसलिए मैं सारा दोष ताकानो पर नहीं डाल सकता था।

बहरहाल, टोमो ने हमें उस किताब का विस्तृत विवरण दिया जो अस्तित्व में ही नहीं थी।

शोवा युग के आरंभिक वर्षों में, मित्सुको फुयुनो नामक एक अज्ञात लेखिका ने 'अ मोमेंट ऑफ ट्वाइलाइट' नामक पुस्तक प्रकाशित की। यह एक एकांतप्रिय और अंधे बूढ़े व्यक्ति की कहानी है, जो मृत्यु के कगार पर है, और उस अधेड़ उम्र की महिला की कहानी है जिसे वह अपने लिए पढ़ने के लिए नियुक्त करता है। शायद कहानी कुछ ज़्यादा ही रोमांटिक थी, क्योंकि प्रकाशन के समय न तो साहित्यिक जगत और न ही आम जनता ने इस पर ध्यान दिया। 'द गोल्डन ड्रीम' वह उपन्यास है जिसे वह महिला बूढ़े व्यक्ति को उसकी मृत्युशय्या पर पढ़कर सुनाती है। यही पाठ पूरी पुस्तक की कुंजी है। उस समय, कई लोग इसे खोजने के लिए जुनूनी हो गए थे, और उनके बीच

यह एक तरह का जुनून बन गया था। लेकिन कई वर्षों बाद, यह पता चला कि पुस्तक वास्तव में लेखिका की ही रचना थी।

"अ मोमेंट ऑफ ट्वाइलाइट" में, "द गोल्डन ड्रीम" को एक अद्भुत कृति के रूप में वर्णित किया गया है। पुस्तक पढ़े जाने के बाद, उपन्यास का अंत इस बात से होता है कि वह बूढ़ा व्यक्ति, जिसने तब तक कभी प्रेम का अनुभव नहीं किया था, यह महसूस करता है कि उसके बगल में बैठी वह महिला, जिसने कई वर्षों तक उसकी आँखों का काम किया था, वही वह व्यक्ति है जिससे वह प्यार करता है।

“मेरी बहन ने ही सबसे पहले मुझे उपन्यास 'द गोल्डन ड्रीम' के बारे में बताया था। उसने कहा था कि यह एक अद्भुत किताब है और मुझे इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। यह दुर्घटना से लगभग छह महीने पहले की बात है। मैं हमेशा अपनी बहन की हर बात पर विश्वास करती थी। इसलिए मैं उस किताब को ढूंढने के लिए पूरी तरह से जुट गई थी। लेकिन फिर मुझे पता चला कि ऐसी कोई किताब वास्तव में मौजूद ही नहीं थी...”

टोमो मेरी तरफ मुड़ा और ऐसे हँसा जैसे यह सब एक मजाक हो।

"ऐसा लगता है कि मेरी बहन को शुरू से ही पता था कि वह किताब मौजूद नहीं है। मेरा मतलब है कि उसने कहा कि उसने वह किताब अपने प्रेमी से उधार ली थी और उसे पढ़ा था।"

“मेरी बहन मुझसे झूठ क्यों बोलेगी? मेरी बहन तो छोटी-मोटी बातों पर झूठ बोलने वाली नहीं थी। तो फिर क्यों? क्या वह सिर्फ मेरा मज़ाक उड़ाना चाहती थी? या शायद उसने मेरे उस प्यार को भांप लिया था जो मैं उसके प्रेमी के लिए छिपा रही थी, और वह मुझसे बदला लेना चाहती थी? खैर, अब जब मेरी बहन मर चुकी है, तो मुझे कभी पता नहीं चलेगा।”

“और भले ही कोई किताब न हो, फिर भी जब भी मैं किसी पुरानी किताबों की दुकान में जाता हूँ, तो मैं उसे ही ढूंढता रहता हूँ। जब भी कोई मुझसे पूछता है कि क्या मुझे कोई किताब चाहिए, तो मैं सबसे पहले उसी का ज़िक्र करता हूँ। मेरे मन में कहीं न कहीं यह उम्मीद है कि अगर मुझे कभी वह किताब मिल गई, तो मेरे अंदर कुछ बदल जाएगा, जैसे उस किताब में उस बूढ़े अंधे आदमी के साथ हुआ था। मुझे पता है कि यह सोचना बेहद बचकाना है, लेकिन फिर भी...”

“मुझे बिल्कुल भी पता नहीं था कि आप उस किताब को ढूंढ रहे थे। मुझे बहुत खेद है।” अंत में, टोमो ने हमसे फिर से माफी मांगी।

“माफी मांगने की कोई जरूरत नहीं है। आखिरकार, इसे ढूंढने का जिम्मा हमने खुद उठाया था।”

सोचिए, हमने दो हफ्ते उस किताब को ढूंढने में बिताए, जबकि हमें उसके पीछे की असली कहानी का ज़रा भी पता नहीं था। अब सब कुछ सरासर बेमानी लग रहा था। टोमो सिर्फ उस किताब को नहीं ढूंढ रही थी। अपने भीतर, वह एक ऐसे जवाब की तलाश में थी जो उसे कभी नहीं मिलेगा। और यह सब उसकी बहन की मौत से जुड़ी घटनाओं से संबंधित था। या यूं कहें कि वह इसे उन घटनाओं से जोड़ने की कोशिश कर रही थी।

जब टोमो अपनी बहन के बारे में बात करती थी तो उसके चेहरे पर हमेशा एक उदास मुस्कान आ जाती थी। वह बहुत दुखी लगती थी।

“जन्मदिन मुबारक हो!” ताकानो अचानक खड़ा हो गया और चिल्लाया। “तुम्हारी मुस्कान हमेशा मुझे हिम्मत देती थी। मैंने अपनी नौकरी नहीं छोड़ी और कॉफी शॉप में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की कोशिश की, सिर्फ इसलिए कि मैं तुम्हारी मुस्कान देख सकूँ।” ये लड़का अचानक क्या कह रहा था? मैं अभी भी सदमे में थी, इसलिए मैंने उसकी आस्तीन ज़ोर से खींची, लेकिन वह इतना उत्साहित था कि मैं उसे रोक नहीं पाई।

“मेरा मतलब है, मैं ये कहना चाहता हूँ कि भले ही आपको इसका एहसास न हुआ हो, आपने किसी की मदद की है, और वो इंसान अभी आपके साथ है। कोई ऐसा इंसान जो आपके जन्मदिन पर आपके साथ होने से सचमुच खुश है, वो अभी आपके साथ खड़ा है। मैं चाहता हूँ कि आप ये बात याद रखें, अगर रख सकें तो। बस यही कहना चाहता था।” ये सब कहने के बाद, बिना साँस लिए, उन्होंने एक और धीमी आवाज़ में “जन्मदिन मुबारक” कहा। फिर उनका चेहरा गुस्से से लाल हो गया, और धड़ाम से बैठ गए। अचानक कमरा एकदम शांत हो गया। वो टोमो को खुश करना चाहते थे, लेकिन मुझे लगता है, चाहे जैसे भी देखें, ये सब एक साथ बहुत ज़्यादा हो गया था।

हमारे सामने गरमागरम बर्तन में पानी उबलने लगा था, इसलिए मैंने चूल्हे की आंच बंद कर दी। टोमो ने अपना मुंह नहीं खोला था। वह अभी भी नीचे देख रही थी, अपनी गोद में टकटकी लगाए हुए थी।

फिर वह धीरे-धीरे उठी। उसने किताबों के ढेर के नीचे दबे कमरे का स्लाइडिंग दरवाजा खोला, अंदर गई और अचानक अंदर से दरवाजा बंद कर दिया।

"कुछ गलत बोला?"

बगल वाले कमरे से कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। हमने थोड़ी देर इंतज़ार किया, लेकिन ऐसा लगा जैसे वह बाहर नहीं आ रही हो। मुझे चिंता हुई, इसलिए मैंने दरवाज़े पर दस्तक दी और अंदर झाँका। मुझे पता नहीं क्यों, लेकिन वहाँ मंद रोशनी में, टोमो सीधी बैठी हुई, पूरी एकाग्रता से पढ़ रही थी। हालाँकि मैंने दरवाज़ा खोल दिया था, उसने मेरी तरफ देखने की ज़रा भी कोशिश नहीं की।

“उम, टोमो?” मैंने उससे कहा, जबकि उसकी पीठ मेरी तरफ थी।

"हाँ?"

"आप क्या कर रहे हो?"

“तुम्हारा क्या मतलब है? मैं पढ़ रही हूँ,” उसने पूरी तरह शांत स्वर में उत्तर दिया।

"हाँ, लेकिन अभी क्यों?"

“मुझे अचानक पढ़ने की तीव्र इच्छा हुई,” उसने किताब से नज़रें उठाए बिना कहा। क्या यह वास्तविकता से बचने का उसका तरीका था? क्या यह वास्तविकता थी कि ताकानो के भाषण को प्रेम की घोषणा के रूप में देखा जा सकता था?

जैसे ही ताकानो पीछे से उसके पास आई, टोमो ने अपना चेहरा अपनी किताब के और करीब कर लिया, मानो वह पढ़ने में और भी मग्न होना चाहती हो। ताकानो और मैं एक-दूसरे की ओर मुड़े, लेकिन हमें बिल्कुल समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें।

फिर इससे पहले कि मुझे कुछ पता चलता, ताकानो अचानक टोमो के बगल में बैठ गया, पास पड़ी एक किताब उठाई और चुपचाप पढ़ने लगा।

एक पल के लिए टोमो ने ऊपर देखा और ताकानो को देखा, फिर बिना कुछ कहे वह अपनी किताब में वापस डूब गई।

“क्या? . . . तुम मुझे डरा रहे हो . . .” अनजाने में ही मेरे मुंह से ये शब्द निकल गए। दोनों में से किसी ने भी कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। मुझे थोड़ी चिंता होने लगी कि अगर मुझे सुबह तक इसी तरह उनका इंतज़ार करना पड़ा तो मैं क्या करूँगी।

ताकानो ने अचानक बोलना शुरू किया, “उम... टोमोको, मैं अपनी बात अच्छे से समझा नहीं पाता। मुझे शायद यह कहना नहीं आता, लेकिन मैं बिना बोले भी तुम्हारे

साथ रह सकता हूँ। जब भी तुम्हें मेरी ज़रूरत हो, मुझे बुला लेना। मैं तुरंत आ जाऊँगा।”

तोमो ने अपनी किताब से नज़र नहीं हटाई, लेकिन परछाई में हल्की सी हलचल हुई। ऐसा लगा जैसे उसने हल्का सा सिर हिलाया हो। जब ताकानो ने यह देखा, तो वह थोड़ा मुस्कुराया और फिर चुपचाप पढ़ने में लग गया।

यह भले ही अजीब लगे, लेकिन शायद ताकानो ही टोमो को, या शायद आम तौर पर इंसानों को, मुझसे कहीं बेहतर समझता था। जब मैं उन दोनों को मिलाने की चिंता कर रहा था, तब वह टोमो को बेहतर महसूस कराने के बारे में सोच रहा था। जिस दरवाजे को वह अपने पीछे बंद रखना चाहती थी, उसे जबरदस्ती खोलने की कोशिश करने के बजाय, उसे खुद दरवाजा खोलने के लिए प्रेरित करना ज़्यादा सही लग रहा था। शायद वह सही कह रहा है, मैंने सोचा। जब मैंने उन दोनों को चुपचाप अगल-बगल बैठे देखा, तो ऐसा लगा कि शायद जल्द ही टोमो खुद ही दरवाजा खोल देगी।

मैंने पास पड़ी एक किताब उठाई और दीवार से टिक गई। पन्ने पलटते हुए मैंने एक फैसला किया। मैं वाडा को फोन करूंगी। मैं उसे बताऊंगी कि मैं उससे जल्द ही मिलना चाहती हूं। मुझे खुद ही अपने द्वारा बनाई गई दीवार को तोड़ना होगा।

टोमो की जन्मदिन की पार्टी की रात जैसे-जैसे देर होती गई, पन्नों के पलटने की आवाज के अलावा और कोई आवाज नहीं सुनाई दे रही थी।

11

पश्चिमी जापान में आए एक तूफान के कारण कई दिनों तक तेज बारिश और हवाएं चलीं। सड़कों पर लगे पेड़ों के लगभग सारे पत्ते झड़ गए। आसमान की ओर उठी उनकी नंगी शाखाओं को देखकर ऐसा लग रहा था मानो वे थोड़े शर्मिंदा हों।

वाडा कुछ समय तक काम में बहुत व्यस्त था, और टोमो की जन्मदिन पार्टी के चार दिन बाद ही हमारी मुलाकात हो पाई। आम तौर पर उस दिन उसकी छुट्टी होती, लेकिन वाडा को जल्दी काम पर जाना पड़ा और वह दोपहर तक रुका रहा। जब हमारी मुलाकात हुई तब शाम के करीब का समय हो चुका था।

वाडा को लगा कि मैं आजकल कुछ अजीब व्यवहार कर रहा हूँ। जैसे ही हम साथ हुए, उसने घबराकर मुझसे पूछा कि क्या कुछ गड़बड़ है। मैंने पहले उससे उस रात

की घटना के बारे में पूछने का फैसला किया।

मैंने जो कुछ देखा था, वह सब बताने के बाद वाडा ने धीरे से कहा, "तो क्या यही वजह है कि तुम इतने उदास लग रहे हो?" आखिरकार उसे समझ आ गया। "इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है," उसने कहा। उसने एक लंबी साँस ली, मानो उसे एहसास हो गया हो कि उसने एक बहुत बड़ी गलती कर दी है। फिर वह आँखें बंद करके वहीं बैठा रहा, बिल्कुल भी नहीं हिला।

उस दिन भी सेवर रेस्टोरेंट खचाखच भरा हुआ था। हमारे बगल में सूट पहने एक आदमी आराम से अखबार फैलाकर अपनी कॉफी की चुस्की ले रहा था। हमारे सामने एक युवा जोड़ा बातें कर रहा था। उस सुबह बारिश जल्दी ही रुक गई थी और आखिरकार सूरज बादलों से बाहर झाँक रहा था। खिड़की से शाम की हल्की रोशनी मंद रोशनी वाले अंदरूनी हिस्से में धीरे-धीरे फैल रही थी।

वाडा ने अपनी कॉफी को छुआ तक नहीं था। वह गंभीर चेहरे के साथ वहीं बैठा रहा। खिड़की के पास वाला उसका कंधा धूप में सुनहरा चमक रहा था। वह इतनी देर से हिला तक नहीं था कि मुझे चिंता होने लगी। "क्या तुम ठीक हो?" मैंने पूछा।

वाडा ने अपनी आँखें खोलीं और हमेशा से भी ज़्यादा गंभीर स्वर में बोला, “मैं ठीक हूँ... मैंने तुम्हें इसके बारे में न बताकर गलती की। यह लापरवाही थी। मुझे नहीं पता। मैंने बस तुम्हारे नज़रिए से सोचा और मुझे लगा कि तुम्हें बुरा लगेगा। लेकिन लगता है कि तुम्हें न बताकर मैंने तुम्हें और परेशान कर दिया। मुझे सच में बहुत अफ़सोस है।” वाडा ने यह सब बहुत तेज़ी से कहा। उसने उन घटनाओं का क्रम बताने की कोशिश की जिनकी वजह से उसकी मुलाकात उससे हुई... उस शाम जब वह काम पर था, उसने अचानक उससे संपर्क किया और कहा कि वह उसकी एक किताब लौटाना चाहती है। एक साल में यह पहली बार था जब उसने उससे बात की थी। उसने कहा कि वह किताब रख सकती है, लेकिन उसने कहा कि वह पहले से ही पास में है और उसने किताब लौटाने पर ज़ोर दिया। जब वह उससे मिला, तो उसने उससे वापस आने का आग्रह किया...

लेकिन इससे पहले कि वाडा कुछ और कह पाता, मैंने उसे बीच में ही रोक दिया। "बस करो।"

“काफी है?” उसने आश्चर्य से आँखें चौड़ी करते हुए कहा।

“मतलब, कोई बात नहीं। मुझे साफ दिख रहा है कि कुछ हुआ ही नहीं,” मैंने मुस्कुराते हुए कहा। मुस्कान अपने आप आ गई; उसे ज़बरदस्ती दिखाने की ज़रूरत नहीं थी। सच कहूँ तो, वाडा से दोबारा मिलने को लेकर मैं काफी घबराई हुई थी। लेकिन उसे अपने सामने देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा और ऐसा लगा जैसे सब ठीक हो गया हो।

“क्या? लेकिन...” वाडा ने अपनी भौंहें सिकोड़ीं। उनके चेहरे के भाव से पता चल रहा था कि उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि मैं इतनी जल्दी कैसे मान गया। जब भी उन्हें कोई बात समझ नहीं आती थी, वे हमेशा ऐसा ही चेहरा बना लेते थे। हमारे बगल में बैठा आदमी शायद वाडा की आवाज़ सुनकर अखबार से नज़रें उठाकर हमारी तरफ देखा। लेकिन जल्दी ही उसकी दिलचस्पी खत्म हो गई और वह अपनी ही दुनिया में खो गया।

“मैंने आज आपसे मिलने का अनुरोध इसलिए नहीं किया था कि मैं आपसे उस बारे में जानना चाहता था। सच तो यह है कि मैं बस आपसे मिलना चाहता था।”

लेकिन आप तो इसके बारे में चिंतित थे।

मैंने सिर हिलाया। “इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह एक झटका तो था ही, लेकिन मेरे लिए सबसे बड़ा झटका यह था कि इससे मुझे एहसास हुआ कि मुझे तुम पर भरोसा नहीं था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि आज तुम्हारा सामना कैसे करूँ... तो, देखो, गलती मेरी थी, तुम्हारी नहीं।”

“समस्या क्या है?” वाडा ने फिर से भौंहें चढ़ाईं। ऐसा लग रहा था मानो वह दिन भर से यही चेहरा बनाए हुए है।

“हाँ, बिल्कुल। क्योंकि मैं डरपोक था। मैं तुमसे अपने दिल की बात कहने से हिचकिचा रहा था। अनजाने में ही सही, मुझे चोट लगने का डर था। मोमोको के बताने पर ही मुझे समझ आया। इसीलिए मैंने यह सब खत्म करने का फैसला किया है।”

जब मैंने अपनी बात शब्दों में कही, तो ऐसा लगा जैसे मेरे शरीर में जमा सारी बेवजह की चिंता अचानक दूर हो गई हो। मुझे सुकून मिला। सब ठीक था। सचमुच। वाडा को ध्यान से देखने पर मुझे यह एहसास हुआ। मैंने पहले कभी ऐसा नहीं किया था। हमारे रिश्ते के पूरे समय में एक बार भी नहीं।

वाडा काफी देर तक मेरी ओर देखता रहा, बार-बार पलकें झपकाता रहा, फिर अंत में धीरे से बोला, "क्या यह सच है?" उसकी आवाज़ में गहरी भावना झलक रही

थी।

“हम्म?” मैंने पूछा।

"मैं बस यही सोच रहा था कि तुमने यह सब मेरे लिए सोचते हुए पूरा हफ्ता बिताया," उसने कहा और अंत में कॉफी को अपने होठों से लगाया।

“हम्म,” मैंने सिर एक तरफ झुकाते हुए सोचा। “शायद यह तुम्हारे लिए था, या शायद यह वास्तव में मेरे लिए था। अगर मैंने ऐसा नहीं किया होता, तो मुझे लगता है कि किसी समय मैं खुद से नफरत करने लगती। अगर ऐसा होता, तो मैं तुम्हारे साथ नहीं रह पाती। और मैं ऐसा नहीं होने दे सकती थी।”

वाडा मेरी बात ध्यान से सुन रहा था और अपना सिर खुजा रहा था। उसने शर्मिंदा होकर हंसते हुए कहा, "मुझे ऐसा लग रहा है जैसे आज मैं रोलर कोस्टर पर सवार था।"

"मुझे खेद है। मुझे लगता है कि यह सब अजीब लग रहा होगा," मैंने कहा और अपनी कॉफी का आखिरी घूंट खत्म किया, जिससे यह संकेत मिला कि बातचीत का वह हिस्सा यहीं समाप्त होता है।

कॉफी शॉप से निकलने से पहले, हद से ज़्यादा ज़िम्मेदार वाडा ने थोड़ा बेचैन होते हुए एक आखिरी बात कही: “सच में, ये मेरी गलती है। खैर, उसके साथ कुछ भी नहीं चल रहा है। मैं उसे दोबारा नहीं देखूंगा। यकीन मानो।” मैं अपनी हंसी नहीं रोक पाया। उसके बाद, वाडा और मैं शाम ढलते ही मोहल्ले में टहलने निकल पड़े। हम उसके घर जा रहे थे। सुबह हमें काम पर जाना था, लेकिन आज रात हम साथ रहना चाहते थे।

वाडा हमेशा की तरह सीधे पीठ और सिर ऊंचा करके चल रहा था, तभी अचानक उसने कहा, "क्या मैं कुछ कबूल कर सकता हूँ? मुझे तुमसे बहुत जलन हो रही है, ताकाको।"

“मैं? क्यों?” मैंने पूछा। उसने जो कहा वह इतना अप्रत्याशित था कि मैं दंग रह गया।

"आपके पास इतने सारे लोग हैं जिन पर आप भरोसा कर सकते हैं, इतने सारे लोग हैं जिन पर आप विश्वास कर सकते हैं।"

"आपका मतलब मेरे चाचा सटोरू जैसे लोगों से है?"

“हां,” उसने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया। “यह तो स्पष्ट है। आप सबके लिए बहुत मायने रखते हैं।”

“क्या तुम्हें ऐसा लगता है?” ऐसा नहीं है कि मैंने पहले ऐसा महसूस नहीं किया था, हालांकि मुझे यह महसूस होता था कि बहुत से लोग मेरा मजाक उड़ाना पसंद करते थे। खासकर मोमोको और साबू।

“ऐसा इसलिए है क्योंकि आप इन सभी लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। आपमें वो आकर्षण है। और इसलिए भी क्योंकि आप उनका सम्मान करते हैं।”

“चुंबकत्व के बारे में तो मुझे पक्का पता नहीं,” मैंने शर्मिंदा होकर कहा। “लेकिन यह सच है कि टोक्यो आने के बाद मेरी ज़िंदगी में ऐसे बहुत कम लोग बचे जिन्हें मैं लंबे समय से जानती थी। घर पर भी यही हाल था। मेरे पास कोई ऐसा नहीं था जिससे मैं खुलकर बात कर सकूँ, जैसे मैं अपने चाचा, मोमोको या टोमो जैसे लोगों से करती हूँ। मैं खुद भी इस बात से हैरान हूँ।”

जब मैं पहली बार अपने चाचा की किताबों की दुकान पर गई थी, तब मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि मुझे इन सभी लोगों से मिलने का मौका मिलेगा। वाडा भी उनमें से एक है। अगर मेरा दिल इतना टूटा हुआ न होता, तो मैं कभी मोरिसाकी किताबों की दुकान पर न आती, आज भी अपने चाचा से मेरा रिश्ता ठीक नहीं होता, और शायद मैं वाडा से कभी न मिलती। ये सब सोचकर मुझे अजीब सा लगा। सब कुछ आपस में जुड़ा हुआ था, और अब हम शाम के धुंधलके में जिम्बोचो की गलियों में कंधे से कंधा मिलाकर चल रहे थे।

लेकिन यह सोचना कि वाडा मुझसे ईर्ष्या करता था, अब भी अविश्वसनीय था। और वाडा ऐसा व्यक्ति था जो हम जहाँ भी जाते, बहुत से लोगों का दिल जीत लेता था। वह ऐसा व्यक्ति था जो हर किसी के साथ आसानी से घुलमिल जाता था।

जब मैंने वाडा को अपने विचार बताए तो उन्होंने मुझसे कड़ा विरोध जताया। “यह बिल्कुल सच नहीं है। बचपन से ही लोग मुझसे कहते आए हैं कि मैं बहुत गंभीर रहता हूँ। यह सच है कि मैं जहाँ भी जाता हूँ, लोगों के साथ आसानी से घुलमिल जाता हूँ, लेकिन दूसरी तरफ, मैं हमेशा खुद को एक बाहरी व्यक्ति की तरह पेश करता हूँ, और लोगों से बातचीत करने के अलावा मैं कुछ नहीं कर पाता। मेरा मन हमेशा शांत रहता है। मुझे बचपन से ही खुशी के ज्यादा पल याद नहीं हैं। मुझे नहीं पता ऐसा क्यों है। मुझे लगता है कि यह भावनात्मक रूप से दूर रहने वाले घर में बड़े होने का असर हो सकता है। मैं कभी-कभी अपने माता-पिता से दूर हो जाता था, लेकिन मुझे नहीं लगता कि यही एकमात्र कारण था। शायद मैं जन्म से ही ऐसा हूँ। मैं बस ऐसा ही इंसान हूँ।” वाडा

अपनी दाहिनी हथेली पर टकटकी लगाए बोलते रहे, मानो वह यह जानने की कोशिश कर रहे हों कि वह किस चीज से बने हैं। “ऐसे व्यक्ति के साथ रहने से हर कोई थक जाता है, भले ही शुरुआत में यह कितना भी नया लगे। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह कौन है। इसीलिए अंत में सब लोग दूर चले जाते हैं। जब आपने पहली बार मेरा घर देखा था, तो वह बहुत बुरी हालत में था, है ना? मुझे नहीं पता। मुझे लगता है कि इससे पता चलता है कि मैं किस तरह का इंसान हूँ। मैंने दिखावे के लिए चाहे जो भी तरीके अपना लिए हों, अंदर से मैं पूरी तरह बिखरा हुआ हूँ। और मैं इसके बारे में कुछ नहीं कर सकता।”

“लेकिन जब मैं तुम्हें और मोरिसाकिस को देखता हूँ, तो मुझे अंदर ही अंदर उस दुनिया का हिस्सा बनने की चाहत होती है। यही मेरी दिली तमन्ना है। मैंने तुम्हें जो विचार बताया था—किताब की दुकान पर आधारित एक उपन्यास लिखना—मुझे लगता है कि वह उस दुनिया का हिस्सा बनने की मेरी अपनी एक छोटी सी कोशिश थी।” वाडा ने ये शब्द कहते हुए मेरी तरफ देखा। वह थोड़ा शर्मिंदा लग रहा था। मैंने भी उसकी तरफ देखा, उसके चेहरे को निहारने लगा। इस पल तक मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि वह ऐसा महसूस करता है। मुझे लगा जैसे अब मुझे समझ आ गया है कि जब उसने उपन्यास लिखने की बात कबूल की थी, तब वह इतना चिंतित क्यों दिख रहा था।

“मैं चाहती हूं कि आप सब मुझे स्वीकार करें। मैं आप सबके साथ अपनी खुशी और दुख बांटना चाहती हूं। सच में, यह मेरे जीवन में पहली बार है जब मैंने ऐसा महसूस किया है।”

मैंने धीरे से वाडा के गर्म हाथ को अपने हाथ में दबाया।

“बिल्कुल, हम करेंगे। मेरा मतलब है, आप एक अद्भुत व्यक्ति हैं।”

"क्या तुम्हें ऐसा लगता है?" वाडा ने बिना किसी दृढ़ विश्वास के बुदबुदाया।

मैंने उसकी ओर मुड़कर देखा और दृढ़ता से कहा, "तुम हो। मैं वादा करता हूँ।"

वाडा ने मेरी तरफ थोड़ा आश्चर्य से देखा और प्यार से मुस्कुराया। "धन्यवाद," उसने कहा। लेकिन मुझे लगा कि मुझे ही उसका धन्यवाद करना चाहिए। मैं खुश थी कि वाडा ने मुझे अपने दिल की बात बताई। मैं खुश थी कि वह मेरी और मेरे करीबियों की परवाह करता है। मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे इनाम मिल रहा हो। अपने दिल की बात उससे कहने का साहस जुटाने के लिए।

किसी से अपने विचार साझा करना बहुत आसान लगता है, लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक रूप से कठिन हो सकता है। खासकर तब जब वह कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसकी आप बहुत परवाह करते हों। यही बात मेरे मन में तब आई जब मैं उसके बगल में चल रहा था। लेकिन अगर आप हिम्मत जुटाकर ऐसा कर सकें, तो यह आप दोनों को और करीब लाएगा।

हम मोड़ मुड़े और वाडा की अपार्टमेंट बिल्डिंग नज़र आने लगी। हम हाथ में हाथ डालकर सीधे उसी ओर चल पड़े।

कुछ ही दिनों में ऐसा लगा जैसे सर्दी आ गई हो और मेरा पसंदीदा मौसम खत्म हो गया हो। लेकिन यह इतना बुरा भी नहीं था।

क्योंकि अब से, चाहे सर्दी हो या बसंत या कोई भी मौसम आए, मुझे विश्वास था कि ये सुहावने दिन ऐसे ही बने रहेंगे। और मेरे सभी प्रियजन इन दिनों को एक साथ हँसते-हँसते बिताएंगे।

जब हम गोधूलि बेला में सड़क पर चल रहे थे, तो मैंने खुद से यही कहा, हालांकि मेरे पास इस पर विश्वास करने का कोई आधार नहीं था।

12

मुझे आपको कुछ बताना है।

दिसंबर के मध्य का समय बीत चुका था जब अंकल सटोरू ने अचानक यह घोषणा की। मैं अपनी छुट्टी के दिन सुबह मोरिसाकी बुकशॉप में आया था। किसी न किसी कारणवश मैं दो सप्ताह से वहाँ नहीं गया था। दुकान बंद होने से पहले का समय शांतिपूर्वक बीत गया, लेकिन जैसे ही मैं जाने की तैयारी कर रहा था, मेरे अंकल ने मुझे बुलाया। "क्या आपके पास एक मिनट है?" मेरे अंकल ने बेचैनी भरे लहजे में कहा।

“हाँ, ठीक है, लेकिन...” हाल ही में मेरे चाचा पहले से कुछ कम बोलने लगे थे। मुझे चिंता हो रही थी, हालांकि मुझे इसका कोई कारण नहीं पता था। सच कहूँ तो, वाडा और टोमो के साथ चल रही बातों और रोज़मर्रा की भागदौड़ में, मैंने इस पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया था। फिर भी, मेरे चाचा हाल ही में कुछ अजीब से लग रहे थे। सबसे अजीब बात तो यह थी कि उन्होंने मुझसे कुछ कहने को कहा। अगर उन्हें मुझसे कुछ कहना होता, तो वे सीधे-सीधे कह देते।

हमने फैसला किया कि पहले हम दोनों मिलकर काम करेंगे और जल्दी से दुकान बंद कर देंगे, और फिर हम बाहर जाएंगे।

जैसे ही हम बाहर निकले, ठंडी हवा हमारे गालों पर महसूस होने लगी। एकदम शुद्ध, निर्मल सर्दियों की रात। ऐसी रात जिसमें सब कुछ शांत लगता है और हवा से कंपकंपी छूट जाती है। काले आसमान में तारे चमक रहे थे।

“क्या हम थोड़ी देर टहलें?” मैंने सुझाव दिया। मुझे लगा कि बाहर की ताज़ी हवा में सांस लेने और थोड़ा घूमने से हमें अच्छा महसूस होगा।

लेकिन क्या आपको ठंड नहीं लग रही?

"इसीलिए मैं थोड़ा चलना चाहता हूँ।"

"ठीक है, तो चलिए इसे साथ मिलकर करते हैं।"

हम सकुरा स्ट्रीट से निकले, एवेन्यू पर आकर मुड़े और फिर सड़क पर चलने लगे। मेरे चाचा छोटे पैरों वाले होते हुए भी काफी तेज़ चलते हैं, और किसी कम फुर्तीले व्यक्ति की बराबरी करने की उनकी कोई कोशिश नहीं थी। नतीजतन, जब हम साथ चलते थे, तो हमारे बीच का फासला कदम-दर-कदम बढ़ता जाता था। लेकिन मुझे पता था कि एक निश्चित दूरी तय करने के बाद, वह हमेशा रुककर मेरा इंतज़ार करेंगे, इसलिए मुझे कभी जल्दी करने की ज़रूरत नहीं पड़ी। मैं अपनी आरामदेह गति से अपने चाचा के पीछे-पीछे चलता रहा, उनकी पीठ मेरी तरफ थी। यह बिल्कुल पुराने दिनों जैसा था। जब मैं बच्चा था, तब जब भी हम सैर पर जाते थे, मैं उनकी पतली सी पीठ को अपने आगे बढ़ते हुए देखता रहता था।

जब हम शाही महल की खाई के पास पहुंचे, तो हमने वापस जाने से पहले थोड़ा आराम करने का फैसला किया।

खाई में, स्ट्रीटलाइट की हल्की रोशनी पानी की सतह पर पड़ रही थी, जहाँ एक काली, धुंधली सी चिड़िया बड़ी खूबसूरती से तैर रही थी। झाड़ियों के पीछे, शाही महल अंधेरा और सुनसान दिख रहा था। मेरे चाचा ने हमारे लिए हॉट लेमन की दो बोतलें खरीदीं और उनमें से एक मुझे देते हुए कहा, "यह इसलिए ताकि तुम्हें सर्दी न लग जाए।"

एक और बात जो पुराने दिनों से नहीं बदली थी: उसे अभी भी हॉट लेमन पसंद था।

"ओह, बाप रे!" मेरे चाचा ने थके हुए स्वर में कहा और खाई के किनारे लगी बेंचों में से एक पर बैठ गए।

मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "क्या तुम्हारा पिछवाड़ा ठीक है?"

“अरे, ये तो कुछ भी नहीं है।” उसने मुझे अंगूठा ऊपर करके इशारा किया।

वहाँ से हमें रात के आकाश का अच्छा नज़ारा दिखाई दे रहा था। हम पतले अर्धचंद्राकार चाँद को देख सकते थे, और उसके थोड़ा आगे, ओरियन के टिमटिमाते तारे नज़र आ रहे थे। शाही महल के सामने अख़बार की इमारत में अभी भी कई बत्तियाँ जल रही थीं। खाई के समानांतर सड़क पर धावक हाँफते हुए दौड़ रहे थे। मेरे चाचा और मैं अपनी गर्म नींबू चाय की चुस्कियाँ ले रहे थे, और बीच-बीच में किसी दौड़ते हुए धावक को देखते जा रहे थे।

“वैसे, यात्रा के लिए धन्यवाद। कुल मिलाकर, मुझे खुशी है कि हम गए। मोमोको खुश थी। जब मैं इसके बारे में सोचता हूँ, तो शायद दस साल नहीं हुए थे जब हम ऐसी यात्रा पर गए थे।”

यात्रा को एक महीने से अधिक समय हो गया था, लेकिन मेरे चाचा ने मुझे यह बात अभी बताई।

आपका स्वागत है। मेरा हमेशा ख्याल रखने के लिए धन्यवाद।

नहीं, मैं इतना कुछ नहीं करता।

मैंने रात के आकाश की ओर देखा और कहा, "आप बचपन से ही मेरी देखभाल करते आ रहे हैं।" यह सोचकर मुझे थोड़ी शर्मिंदगी हुई कि वह मुझे बचपन से कितनी अच्छी तरह से जानते थे।

“क्या सच में? लगता है हम एक-दूसरे को बीस साल से भी ज़्यादा समय से जानते हैं।” मेरे चाचा और मैं दोनों अब आसमान की ओर देख रहे थे, पुरानी यादों में खोकर आँखें सिकोड़ रहे थे। “समय कितनी जल्दी बीत जाता है, है ना?”

“खैर, हम काफी समय से एक-दूसरे से नहीं मिले थे। सच कहूँ तो, किशोरावस्था में पहुँचने के बाद, मैं तुम्हें बिल्कुल बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। मुझे समझ नहीं आता था कि तुम क्या सोच रहे हो। तुम इतने बड़े हो चुके थे कि तुम्हें बेहतर समझना चाहिए था, लेकिन तुम हमेशा बस टालमटोल करते रहते थे।”

“ये तो बहुत बुरा हुआ। मैं सदमे में हूँ।” मेरे चाचा ने हमेशा की तरह वही बेजान हंसी हंसी, उनकी सांसों से हवा में रुई जैसे सफेद गोल-गोल आकृतियाँ बन रही थीं।

"माफ़ करना। लेकिन जब मैं बच्ची थी, तो मैं आपको बहुत पसंद करती थी। जब मैं उन दिनों को याद करती हूँ, तो मुझे सिर्फ़ सुखद यादें आती हैं। अब मुझे समझ आता

है कि आप मेरे प्रति कितनी दयालु थीं।"

वह हँसा। “लेकिन तब तुम मुझसे नफरत करती थी और मुझे इसका एहसास नहीं हुआ। और शायद इसीलिए तुम काफी लंबे समय तक मुझसे मिलने नहीं आई।”

“मुझे तुमसे नफरत नहीं थी। मुझे बस तुम्हारे साथ व्यवहार करने में दिक्कत होती थी। लेकिन अब मुझे ऐसा बिल्कुल भी महसूस नहीं होता।”

“मुझे लगता है कि यह अच्छी बात है, लेकिन...”

बातचीत के दौरान, किसी कारणवश मुझे वह असहज एहसास फिर से याद आ गया। मेरे बगल में बैठे मेरे चाचा हमेशा की तरह हंस रहे थे और हमेशा की तरह बातें कर रहे थे। उनकी मधुर आवाज हमेशा की तरह थी। लेकिन कुछ तो ज़रूर अलग था। वे किसी बात को लेकर परेशान थे। इस तरह एक शांत शाम साथ बिताते हुए, मैं इसे स्पष्ट रूप से महसूस कर सकता था, और इसने मुझे बहुत चिंतित कर दिया। और फिर, मेरे सीने में गहराई से, वह एहसास थोड़ा और तीव्र हो गया।

“उम, अंकल, आप मुझे क्या बताना चाहते थे?” मैंने यह सवाल पूछने में हिचकिचाहट महसूस की, लेकिन ऐसा नहीं लग रहा था कि मेरे अंकल खुद ही मुद्दे पर आएंगे।

"आह हाँ।"

"मुझे लगता है शायद यह कोई अच्छी खबर नहीं है?"

मुझे एहसास हुआ कि मैंने प्लास्टिक की बोतल को अपने हाथ में कसकर पकड़ रखा था। मेरा शरीर ठंडा था, फिर भी मेरे हाथों में पसीना आ रहा था। मेरे चाचा ने तिरछी नज़र से मेरी तरफ देखा और फिर हल्के से सिर हिलाया।

"खैर, मुझे नहीं लगता।"

तो, यह क्या है?

मेरे चाचा ने फिर सिर हिलाया। “दरअसल,” उन्होंने गंभीर चेहरे के साथ कहा। “मेरी बवासीर फिर से बहुत दर्द कर रही है। जी हाँ, सच में, यह एक गंभीर समस्या बन गई है।”

मैं इतनी चिंता करके मूर्ख बन गई थी। बिना कुछ कहे, मैंने दोनों हाथों से उसे ज़ोर से धक्का दिया। जैसे ही वह बेंच से गिरने वाला था, उसने एक अजीब सी चीख मारी। “ता... ताकाको, तुम क्या कर रही हो? मैं तुमसे विनती करता हूँ, कृपया मेरे नितंबों को और उत्तेजना मत दो।”

"झटका देना।"

मैंने एक गहरी साँस ली, मानो मेरे अंदर जमा सारा तनाव निकल गया हो। मुझे एक साथ बहुत गुस्सा और बहुत राहत महसूस हुई। क्या सच में? ये सब तुम्हारे बवासीर की वजह से है? मैंने मन ही मन सोचा। इनमें दर्द होता है। मुझे यकीन है ये बहुत तकलीफदेह है, लेकिन अगर बस यही बात है, तो हम बहुत भाग्यशाली हैं। सचमुच बहुत भाग्यशाली।

मैंने कहा, "कल तुम्हें हर हाल में अस्पताल जाना होगा।"

ठीक है, मैं कर दूंगा।

"बिल्कुल।"

मैं झट से खड़ा हो गया और बोला, “चलें?” अगर हम जल्दी घर नहीं पहुँचे तो हमें सच में सर्दी लग जाएगी। लेकिन मेरे चाचा ने बेंच से उठने की कोई कोशिश नहीं की। क्या उनके बवासीर में इतना दर्द था? शायद यही होता है। मैंने उन्हें उठाने की कोशिश में अपना दाहिना हाथ बढ़ाया।

लेकिन मेरे चाचा बस वहीं बैठे मेरी हाथ को घूरते रहे; उन्होंने उसे पकड़ने की कोई कोशिश नहीं की। जब मैं अधीर हो गई और "हे" कहकर पुकारा, तो उन्होंने बुदबुदाते हुए कहा, "यह मोमोको के बारे में है।"

“हं?” मैंने अचंभित होकर जवाब दिया।

“दरअसल, उसने मुझे उस यात्रा के दौरान बताया था।” फिर उसने अपने होंठ सिकोड़े, मानो एक पल के लिए रुक गया हो। फिर उसने धीरे से अपना मुंह खोला और आगे बोला, “उसने कहा कि कैंसर इन सब से पहले ही वापस आ गया था। उसे अपने डॉक्टर से बहुत पहले ही पता चल गया था। लेकिन वह लंबे समय तक इसके बारे में कुछ नहीं कह सकी। और, उसने, उम, कहा कि यह काफी बढ़ चुका है।”

मेरे चाचा की सांस सफेद हो गई, आसमान में ऊपर उठी और फिर गायब हो गई।

“अभी तक सिर्फ मुझे ही पता है, लेकिन देर-सवेर सबको पता चल ही जाएगा। इससे पहले कि ऐसा हो, मैंने सोचा कि मैं आपको बता दूं...”

तभी मुझे एक अजीब सी अनुभूति हुई जैसे अचानक मेरे पैरों तले ज़मीन खिसक गई हो। मुझे खड़े होने में परेशानी हो रही थी। मेरे हाथ-पैर अचानक ठंडे पड़ गए। जो हाथ मैं अब भी अपने चाचा की ओर बढ़ा रहा था, वह अब बिना मेरी इच्छा के ही ढीला पड़ गया और नीचे लटक गया।

“यह सच नहीं हो सकता, है ना? ऐसा हो ही नहीं सकता। मेरा मतलब है, वह तो बहुत स्वस्थ दिखती है...”

मैं चाहती थी कि यह सच न हो। मैं उससे विनती कर रही थी। लेकिन यह सच था। उसकी आँखों में दिख रही पीड़ा ने सब कुछ बयां कर दिया।

13

प्रवासी पक्षियों का एक झुंड निर्मल शीतकाल के आकाश में उड़ता हुआ दिखाई दिया। वे एक पंक्ति में बने हुए थे और अपने काले पंखों को फड़फड़ाते हुए आगे बढ़ रहे थे। जब ऐसा लगा कि वे आकाश में काफी ऊपर पहुँच गए हैं, तो वे चक्कर लगाते हुए दूर चले गए, हवा के झोंकों के साथ बहते हुए अंत में वे बादलों में गायब होते हुए छोटे-छोटे काले धब्बों में बदल गए।

वे कहाँ जा रहे थे?

अस्पताल की खिड़की से पक्षियों को निहारते हुए मैं इस प्रश्न पर विचार कर रहा था।

आज हवा बहुत तेज़ चल रही थी। अस्पताल में एक बड़ा सा आंगन बनाया गया था, जहाँ मरीज़ टहल सकते थे। गर्म दिनों में अक्सर वहाँ लोग दिखते थे, लेकिन आज कोई भी बाहर नहीं था। तेज़ हवा चीड़ के पेड़ों की कतारों से गुज़र रही थी, उनकी डालियाँ झुककर ज़ोर से चरमरा रही थीं। मैंने खिड़की थोड़ी सी खुली छोड़ दी थी, जिससे ठंडी हवा अंदर आ रही थी।

"क्या आपको कुछ दिलचस्प दिखा?"

जब मैंने देखा तो मोमोको बिस्तर पर बैठी शांति से बुनाई कर रही थी और खिड़की पर खड़े मुझे देख रही थी। मैंने खिड़की धीरे से बंद कर दी।

नहीं, मैं बस यह देख रही थी कि आज कितनी तेज़ हवा चल रही है। क्या मैं खिड़की बंद कर सकती हूँ?

कोई बात नहीं। धन्यवाद।

मोमोको की बुनाई की सुइयाँ एक मधुर लय में धीरे-धीरे आगे-पीछे चल रही थीं। आजकल वह अपनी बुनाई में मग्न सी लग रही थी, उसकी निगाहें हमेशा अपने हाथों पर टिकी रहती थीं।

“तुम क्या बुन रही हो?”

"दस्ताने।"

"फरवरी का अंत होने के बावजूद?"

कोई बात नहीं। मैं तो बस अपने मनोरंजन के लिए कर रहा हूँ। समय बिताने का यह एकदम सही तरीका है।

“हम्म...” मैं उसके बगल में रखी तह वाली कुर्सी पर बैठ गया, और हम दोनों उसके हाथों को बुनते हुए देखते रहे।

“ताकाको? क्या मैं तुम्हें ये दे सकती हूँ? मुझे दस्तानों की ज़रूरत नहीं है।”

“ज़रूर। मुझे इनकी ज़रूरत पड़ सकती है। लेकिन इन्हें तैयार होने में कितना समय लगेगा?”

“मार्च में मेरा काम खत्म हो सकता है? लेकिन आप इन्हें अगले साल भी पहन सकते हैं, है ना?”

अगले साल।

मैंने मन ही मन उस शब्द को दोहराया। यह सोचना नामुमकिन था कि मोमोको अगले साल हमारे साथ नहीं होगी। या यूँ कहूँ कि मैं यह सोचना ही नहीं चाहती थी। उस अप्रिय विचार को मन से निकालने की कोशिश करते हुए मैंने प्रसन्नता से कहा, "जी हाँ, ज़रूर।"

"समझ गया।"

उसने एक पल के लिए अपना सिर उठाया और मुझे मुस्कुरा कर देखा। एक बिल्कुल मासूम मुस्कान, स्नेह से भरी हुई। वह शहर के एक सामान्य अस्पताल में चार लोगों के कमरे में रह रही थी। इसी अस्पताल में उसकी पहले भी सर्जरी हुई थी। उस समय उसका कमरा अलग था, लेकिन जाहिर तौर पर वह उसी मंजिल पर था। उस समय वह मेरे चाचा से अलग थी, इसलिए उसके साथ कोई नहीं था। कितना अकेलापन रहा होगा!

कमरे में दवाइयों और अस्पतालों में इस्तेमाल होने वाले एंटीसेप्टिक की गंध थी, साथ ही पसीने की हल्की सी महक भी थी। क्रीम रंग के पर्दे के पीछे दीवारें एकदम सफेद थीं। थोड़ी ठंडी और उदासीन। "अस्पताल ऐसे ही होते हैं," मोमोको ने झुंझलाहट भरे चेहरे से कहा, मानो कह रही हो, "हालात ऐसे ही होते हैं।"

“अच्छा, तुम्हें घर जाना चाहिए। मैं तुम्हें यहाँ हमेशा बैठे हुए नहीं देख सकती।” मोमोको ने ठुड्डी से दरवाजे की ओर इशारा किया। उसके हाथ लगातार हिलते रहे। जब भी मैं उससे अस्पताल में मिलने आती थी, वह हमेशा मुझे एक घंटे के अंदर इसी तरह घर भेज देती थी। मुझे समझ नहीं आता था कि वह मेरे लिए ऐसा करती थी या मैं उसे सच में परेशान कर रही थी।

“आपको मेरी इस तरह देखभाल करने की ज़रूरत नहीं है। जैसा कि आप देख सकते हैं, मैं ठीक हूँ,” वह हमेशा मेरी मुलाकातों के अंत में थोड़ा सा नाक सिकोड़ते हुए कहती थी। मैं अस्पताल से ऐसे निकलता था जैसे मुझे भगा दिया गया हो।

लेकिन मोमोको का रंग-रूप अच्छा था और उसकी त्वचा तनी हुई थी—वह सेहतमंद दिखती थी। उसने सारा खाना खा लिया, और बिस्तर पर भी उसकी मुद्रा हमेशा की तरह अच्छी थी। यह कहना अजीब लग सकता है, लेकिन उसके रूप-रंग में इतना कम बदलाव आया था कि यह लगभग अप्रत्याशित सा लग रहा था।
जिस रात मैं अपने चाचा के साथ उस लंबी सैर पर गई थी, वापसी के पूरे रास्ते वो लगातार बुदबुदाते रहे, "ये तो बड़ी मुसीबत खड़ी करने वाली है!" और हर बार एक हल्की सी आह भरते रहे। हम स्टेशन तक सड़क पर कंधे से कंधा मिलाकर धीरे-धीरे चल रहे थे, मानो इससे तेज़ चलना गैरकानूनी हो। मुझे शाही महल से आने वाले रास्ते की बिल्कुल भी याद नहीं है। लेकिन बाद में भी, मुझे उनकी दबी हुई आह की आवाज़ सुनाई देती रही, मानो वो अपने अंदर उमड़ते हुए भावों को रोक नहीं पा रहे हों।

फिर मुझे कुछ ऐसी बातें पता चलीं जिनकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि वे सच हो सकती हैं।

मोमोको का कैंसर काफी बढ़ चुका था; डॉक्टरों ने पाया था कि यह उसके लसीका ग्रंथियों में फैल चुका था, जिसका मतलब था कि सर्जरी मुश्किल होगी। डॉक्टरों ने उसे यही बताया था। मोमोको ने यह बात मान ली थी और वह दूसरी सर्जरी नहीं करवाना चाहती थी। पहले तो मेरे चाचा ने इसका कड़ा विरोध किया, लेकिन डॉक्टर से बार-बार मिलने के बाद उन्हें लगने लगा कि शायद यही बेहतर है। उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण बात मोमोको की इच्छा का सम्मान करना था।

उनके बगल में चलते हुए, मैं केवल बेजान भाव से "हाँ" या "क्या यह सच है?" कह सका। इस अचानक मिली खबर से मैं स्तब्ध रह गया और अपने विचारों को संजो नहीं

पाया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या सोचूँ। अपने चाचा की बातें सुनते हुए, मुझे बस इतना समझ आया कि मामला मेरी सोच से कहीं ज़्यादा गंभीर था।

मेरे चाचा की आह की आवाज़ गुजरती गाड़ियों की आवाज़ में घुलमिल गई। कुछ देर तक मैं चुपचाप सड़क को देखता रहा।

"आपने कहा था कि उसने आपको यात्रा के दौरान बताया था, है ना?" मैंने अचानक इस संभावना के बारे में सोचते हुए पूछा।

"हाँ, उसने अचानक ही मुझे यह बात बता दी। मैं हैरान रह गया। मतलब, आप जानते ही हैं कि वह अक्सर मज़ाक करती है, लेकिन वह कभी ऐसी बात पर मज़ाक नहीं करेगी। मुझे जल्द ही एहसास हो गया कि वह गंभीर थी।"

“तो, आपको तो बहुत पहले से पता था।” मेरी बस यही इच्छा थी कि वो यात्रा उन दोनों के लिए आराम करने का मौका हो। ये सोचकर कि शायद वे इसी बारे में बात कर रहे थे। अब याद आता है तो मुझे एहसास होता है कि उस यात्रा के बाद ही मेरे चाचा एकदम शांत हो गए थे। उन्होंने उस राज़ को लंबे समय तक अपने दिल में छिपाए रखा, बिना कुछ कहे। मैं समझ सकती थी कि मुझे बताना उनके लिए कितना मुश्किल था। इसे ज़ोर से कहने का मतलब था सच्चाई को पूरी तरह स्वीकार करना। ये तो वाकई डरावना रहा होगा।

मैंने कहा, "यह जानना सिर्फ आपके लिए ही मुश्किल रहा होगा।"

“नहीं, ऐसा नहीं है।” वह बेजान हंसी हंसा।

जैसा कि मैंने आपको बताया, यह तुरंत नहीं होने वाला है। थोड़ी देर में, शायद उसे अस्पताल जाना पड़ेगा। और फिर उन्हें देखना होगा कि आगे क्या होता है।

“ओह, मैं समझ गया...” तो जब उन्होंने कहा कि वे ऑपरेशन नहीं करेंगे, तो इसका मतलब यह नहीं था कि वह पूरी तरह से ठीक हो जाएगी—इसका मतलब था कि उसके पास ज्यादा समय नहीं बचा है।

यह मेरे लिए सबसे बड़ा सदमा था। यह सोचकर कि उसके भीतर छिपी बीमारी जल्द ही उसे जकड़ लेगी और हमें उससे दूर ले जाकर दूसरी दुनिया में ले जाएगी। कि कुछ ही समय में मोमोको इस दुनिया से चली जाएगी। ऐसी बात पर विश्वास करना असंभव था। मैंने तो कल्पना कर ली थी कि एक दिन वह कितनी प्यारी बुढ़िया बनेगी। और मैंने सोचा था कि वह मेरे चाचा के साथ हमेशा के लिए मोरिसाकी बुकशॉप चलाएगी, जो उसकी तरह ही बूढ़े हो जाएंगे।

मुझे एहसास हुआ कि मैं भी अपने चाचा की तरह धीरे-धीरे आहें भर रहा था। मानो इशारा मिलते ही, मेरे चाचा ने बुदबुदाते हुए कहा, “मैंने हार मान ली है। जब मुझे लगा कि पाँच साल बाद वो घर लौट आई है, तभी पता चला कि वो बीमार है। और इससे भी बुरी बात ये है कि हम लगभग अंतिम चरण में हैं। वो ऐसे बर्ताव कर रही है जैसे कुछ हुआ ही नहीं, इसलिए उसे अभी तक पूरी तरह से समझ नहीं आया है। अगर वो थोड़ा और मरीज़ की तरह बर्ताव करे तो अच्छा होगा।”

मेरे चाचा ने हताशा से अपना सिर हिलाया और एक और छोटी सी आह भरी।

“हां,” मैंने कहा।

मैं उसके साथ जीत नहीं सकता।

जब तक हम स्टेशन नहीं पहुंच गए, उसने बार-बार यही बात दोहराई।

लेकिन उसके बाद काफी समय तक दिन ऐसे ही बीतते रहे मानो कुछ हुआ ही न हो, बिल्कुल वैसे ही जैसे मेरे चाचा ने कहा था। किताबों की दुकान पर मोमोको हमेशा की तरह ग्राहकों का ख्याल रखती थी और हफ्ते में कुछ दिन पास के छोटे से रेस्तरां में मदद करने जाती थी। साबू और बाकी नियमित ग्राहक मोमोको की विनम्र मुस्कान की तलाश में हमेशा किताबों की दुकान पर आते रहते थे। ऊपरी तौर पर देखा जाए तो कुछ भी नहीं बदला था।

जब मुझे उसकी बीमारी के बारे में पता चला और मैं उससे किताबों की दुकान पर मिलने गई, तब भी उसकी प्रतिक्रिया सामान्य और व्यावहारिक थी।

"खैर, ऐसा ही होता है," उसने बेफिक्री भरे लहजे में कहा।

लेकिन, उम...

मैं कुछ कहना चाहता था, लेकिन इससे पहले कि मैं कुछ बोल पाता, उसने कहा, “हम इसके बारे में कुछ नहीं कर सकते। मैं तैयार हूँ। और लगभग तैयार हूँ। इसलिए कृपया मुझे उस उदास चेहरे से मत देखो। इससे मैं भी निराश हो जाऊँगा,” उसने मुस्कुराते हुए कहा और मेरी पीठ थपथपाई। ऐसा लगा जैसे वही मुझे हिम्मत दे रही हो।

चूंकि वह खुद ऐसा व्यवहार कर रही थी, इसलिए मुझे उदास होना उचित नहीं लगा।

वो दिन आने वाला था, लेकिन उसके आने से पहले, मैं दिल से चाहती थी कि जितना हो सके उतना समय मोमोको की भतीजी और दोस्त बनकर बिताऊं, चाहे

हमारी उम्र में कितना भी अंतर क्यों न हो। और मुझे अपने चाचा-चाची की हर संभव मदद करनी थी।

और फिर, कुछ समय बाद, उन्होंने फैसला किया कि मोमोको को अस्पताल में भर्ती कराने का समय आ गया है। यह घटना नए साल की शुरुआत के बाद हुई।

पहले तो यह अस्थायी बताया गया था, लेकिन उन्होंने कहा कि उसकी हालत के आधार पर यह दीर्घकालिक भी हो सकता है। उसने श्री नाकासनो को स्थिति समझाई और जनवरी के बाकी दिनों के लिए रेस्तरां से छुट्टी ले ली। श्री नाकासनो ने ही सुझाव दिया था कि इसे नौकरी से बर्खास्तगी के बजाय अवकाश के रूप में लिया जाए, लेकिन हालांकि उन्होंने कहा था कि यह एक महीने के लिए होगा, यह आखिरी बार था जब उन्होंने मोमोको को एप्रन पहने देखा था।

मेरे चाचा ने मोमोको को खुश करने वाली हर छोटी-छोटी चीज़ के बारे में सोचने की कोशिश की। उन्होंने अस्पताल में भर्ती होने से पहले उसे कहीं घूमने ले जाने की भी कोशिश की। लेकिन मोमोको तो बस घर पर आराम करना चाहती थी।

मेरे चाचा को शक था कि वह उनके बारे में चिंतित थी, क्योंकि वह जानती थी कि वह किताबों की दुकान से छुट्टी लेने में कितना हिचकिचाते थे। “एक चक्कर ही काफी है,” उसने उनसे सख्ती से कहा। “दुकान का ख्याल रखना। मैं तुम्हें दिन भर दुकान संभालते हुए देख सकती हूँ।” यह सुनने के बाद, मेरे चाचा ने फिर कभी इस बारे में बात नहीं की।

लगभग उसी समय जिम्बोचो में उनके सभी जान-पहचान वालों को मोमोको की हालत के बारे में पता चला। मेरी तरह, जब उन्होंने पहली बार यह खबर सुनी, तो उन्हें यकीन नहीं हुआ। "हमारी मोमोको को क्या हो गया?" साबू जैसे लोगों ने और जानकारी के लिए दबाव डाला—उन्होंने तो मुझे फोन भी किया और लगभग गुस्से में मुझसे और जानकारी देने की मांग की। फिर भी, मोमोको की इच्छा के अनुसार कि हम सब कुछ पहले जैसा ही रखें, किसी ने भी ऐसा व्यवहार नहीं किया जैसे उन्हें उसकी विशेष चिंता हो, कम से कम ऊपरी तौर पर तो नहीं, और किसी ने भी उसे अपना दुख नहीं दिखाया।

अस्पताल में भर्ती होने से पहले, मोमोको के पास रेस्टोरेंट की नौकरी से छुट्टी होने के कारण काफी खाली समय था, इसलिए वह अक्सर सेवूर रेस्टोरेंट जाया करती थी। कई बार वह मालिक साबू और यहां तक कि ताकानो से भी बातचीत करती थी।

मोमोको वहां भी खुशमिजाज रहती थी और इतनी सहज थी कि साबू और बाकी लोगों को उनके उदास स्वभाव के लिए चिढ़ाती भी थी। उसे मालिक द्वारा बनाए गए मिल्कशेक बहुत पसंद थे और जब भी वह उन्हें पीती थी, वह हमेशा खुश नजर आती थी।

एक बार हम दोनों ने वाडा के साथ चाय पी। तभी मोमोको ने जानबूझकर पूछा, "आजकल वाडा नंबर 2 कैसा है?" वह जवाब से बेहद खुश लग रही थी और आराम से बैठकर वाडा को देखती रही, जिसने बड़ी गंभीरता से पूछा, "वाडा नंबर 2? कौन है? क्या मैं वाडा नंबर 1 हूँ?"

फिर मानो कुछ याद आने पर, मोमोको ने वाडा की ओर मुड़कर अचानक कहा, "ताकाको का ख्याल रखना, ठीक है? वह कभी-कभी अनिर्णायक हो जाती है, लेकिन अच्छी बच्ची है।" यह मोमोको की आवाज़ से बिल्कुल अलग लग रहा था।

मैं अचंभित रह गया और आश्चर्य से आंखें फाड़कर वहीं बैठा रहा, जब मेरे बगल में बैठे वाडा ने जवाब दिया, "बेशक।"

इस दौरान मेरे चाचाजी हमेशा उदास रहते थे। किसी तरह वे मोमोको से भी ज्यादा दुखी लग रहे थे। फिर भी, वे हमेशा की तरह किताबों की दुकान चलाते रहे, और मैं कभी-कभी उनसे मिलने जाता था।

“चाचा जी, आप ठीक हैं ना?” मैं चिंतित होकर पूछता था।

वह हमेशा जवाब देता था, "ओह, मैं ठीक हूँ।"

लेकिन वह जरा भी ठीक नहीं लग रहा था।

अगर मैं कुछ और कहता तो वह नाराज हो जाता और बुरा मान जाता, इसलिए मैंने इसके बजाय एक ऐसा विषय उठाया जिससे मुझे लगा कि उसे अच्छा महसूस हो सकता है।

"क्या आपके पास सिफारिश करने के लिए कोई किताबें हैं?"

“हम्म? ओह, सही कहा। अभी तो मुझे कुछ सूझ नहीं रहा, लेकिन अगली बार मैं आपके लिए कुछ ढूंढ लूंगा।”

यहां तक कि जब बात ऐसे विषय की आई जिस पर वह आम तौर पर बात करने के लिए उत्सुक रहता था, तब भी वह केवल यही बेरुखी भरी प्रतिक्रिया दे पाया। और फिर, ज़ाहिर है, उसने दोबारा आहें भरना शुरू कर दिया।

“उम, क्या मैं कुछ कर सकता हूँ?” यह एक नेक प्रस्ताव था। मेरे चाचा के चेहरे पर उदासी देखना मेरे लिए असहनीय था।

अगर किसी भी तरह से मैं मदद कर सकती, तो मैं हर हाल में मदद करना चाहती थी। लेकिन मेरे चाचा ने हैरानी से मेरी तरफ देखा, मानो कह रहे हों, तुम क्या कह रही हो? “तुमने हमारे लिए पहले ही बहुत कुछ किया है। तुम तो उसके साथ अस्पताल भी गई थी। मैं तुमसे इससे ज़्यादा कुछ करने के लिए नहीं कह सकता। यह बहुत ज़्यादा है,” उन्होंने कहा। फिर उन्होंने हल्की सी हंसी हंसी और बात खत्म हो गई।

उस क्षण, मोरिसाकी बुकशॉप, जो कभी मेरे चाचा की हंसमुख आवाज से गूंजती थी, अब एक भयानक रूप से सुनसान जगह लग रही थी।

फरवरी की शुरुआत में, मोमोको को अस्पताल में भर्ती कराए जाने के एक हफ्ते बाद, डॉक्टर ने बताया कि उसके पास जीने के लिए सिर्फ छह महीने बचे हैं। लेकिन मेरे चाचा के यह बताने के बाद भी, मुझे यह बात बिल्कुल भी सच नहीं लगी। वे शब्द मेरे लिए बेमानी थे। मेरे लिए यह कल्पना करना नामुमकिन था कि इतने कम समय में मोमोको हमें छोड़कर चली जाएगी। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि मोमोको में मुझे इसका जरा सा भी संकेत नहीं मिला, जो इस समय सांस ले रही थी और मुस्कुरा रही थी।

मृत्यु तो मानो सुदूर भविष्य में थी। यह मोमोको थी—क्या वह इसे हँसकर टाल नहीं सकती थी? उसे देखकर तो ऐसा लगता था मानो यह लगभग संभव ही था।

जब मैं मोमोको को अस्पताल में देखने गई, तो मुख्य रूप से यही पुष्टि करने के लिए गई थी। जब मैंने देखा कि वह बिल्कुल पहले जैसी दिख रही थी, तो मन ही मन मुझे तसल्ली मिली। मैंने मन ही मन कहा, "अरे वाह, वह कितनी अच्छी दिख रही है, वह ज़रूर स्वस्थ होगी। अक्टूबर में, या सितंबर में भी—जब बाहर ठंडक हो जाए, तो हमें फिर से माउंट मिटाके साथ चलना चाहिए।"

उसी महीने एक दिन, जब मोमोको हमेशा की तरह बुनाई में मग्न थी, मैंने उससे मेरे साथ चलने को कहा। हम दोनों पिछली बार की तरह ही फ्यूनिक्युलर से पहाड़ पर चढ़ सकते थे और उसी पहाड़ी सराय में रुक सकते थे जो असल में एक हॉस्टल जैसा था। हारू और सराय का मालिक अभी भी वहीं होंगे। चलो उनसे फिर मिलते हैं। फिर हम व्यूइंग प्लेटफॉर्म से उस खूबसूरत नज़ारे में फैले पहाड़ों को निहार सकते थे और रात को अपने फ़्यूटन एक साथ बिछाकर अगल-बगल सो सकते थे।

“यह एक अच्छा विचार है, है ना? आपने खुद ही कहा था कि आपने अच्छा समय बिताया,” मैंने कहा, अब मैं अपनी कुर्सी के किनारे पर बैठा हुआ था।

“हाँ...” मोमोको ने अपने कंधे झुका लिए, मानो उसे यह पूरा विचार बहुत झंझट भरा लग रहा हो। “लेकिन ताकाको, तुम तो पूरे समय यही शिकायत करती रही कि तुम थकी हुई हो और तुम्हारे पैरों में दर्द हो रहा है।”

मुझे अब कोई शिकायत नहीं है।

आप शिकायत कर रहे थे।

"हो सकता है मैंने थोड़ी बहुत शिकायत की हो, लेकिन अगर मैं कहूँ कि इस बार मैं शिकायत नहीं करूँगा तो क्या होगा?"

“संभावना कम है। तुम तुरंत शिकायत करना शुरू कर दोगे।”

मैं कसम खाता हूँ कि ऐसा नहीं करूँगा, ठीक है?

“यह सुनकर मुझे याद आया, ताकाको। याद है जब तुम पहाड़ से सीधे अपने नितंबों के बल गिरी थीं? वह तो कमाल था,” मोमोको ने शरारती मुस्कान के साथ कहा।

अंततः, बातचीत इस बात पर बिना कोई निश्चित जवाब दिए समाप्त हो गई कि वह कहाँ जाएगी या नहीं जाएगी।

अस्पताल की खिड़की के दूसरी ओर आंगन में मैंने देखा कि चेरी के शुरुआती फूल पहले ही गिरने लगे थे। उनकी पंखुड़ियाँ छोटे-छोटे घेरे में घूम रही थीं, मानो रास्ते के किनारे नाच रही हों।

14

बसंत से गर्मी का मौसम शुरू होने के बाद भी मोमोको पहले की तरह ही स्वस्थ लग रही थी। मुझे चिंता थी कि भीषण गर्मी में उसकी हालत बिगड़ सकती है, लेकिन उसकी भूख में कोई बदलाव नहीं आया था; यहाँ तक कि उसका रंग-रूप भी अच्छा था। वह कुछ समय तक अस्पताल आती-जाती रही, लेकिन बीच-बीच में आराम करने के लिए रुकते हुए वह मोरिसाकी बुकशॉप भी जाती रही। एक रात जब टोमो मिलने आई, तो हम तीनों श्री नाकासोनो के यहाँ खाना खाने गए।

लेकिन, पतझड़ की शुरुआत में, जब दोपहर में ठंडी हवा चलने लगती थी, तो उसकी हालत अचानक बिगड़ गई। घर पर आराम करते समय मोमोको बेहोश हो

गई। घर पर आराम करने का उसका एक सप्ताह का समय रद्द कर दिया गया, और डॉक्टरों ने तुरंत फैसला किया कि उसे उसी दिन अस्पताल वापस जाना होगा।

"अंत की तैयारी करने का समय आ गया है। डॉक्टरों ने कल हमें यही बताया था," मेरे चाचा ने फोन पर सख्त स्वर में मुझसे कहा। "ताकाको, जब तुम्हें समय मिले, तो क्या तुम उससे दोबारा मिलने जा सकती हो?"

मेरे चाचा की उस संक्षिप्त फोन कॉल ने मेरी उस क्षणिक आशा को पूरी तरह से मिटा दिया जिसे मैं पिछले छह महीनों से थामे हुए था। और उसी क्षण सब कुछ स्पष्ट हो गया, वे पहलू जिन पर मैं प्रकाश नहीं डालना चाहता था, वह वास्तविकता जिससे मैं जी-जान से मुंह मोड़ रहा था।

अगले दिन, मैंने अपनी छुट्टी का एक दिन इस्तेमाल किया और अस्पताल में मोमोको के कमरे की ओर दौड़ पड़ी। जैसे ही मैंने उसके कमरे का दरवाजा खोला, चिंता और घबराहट मुझे अंदर से तोड़ रही थी।

"ओह, ताकाको।" उसकी आवाज़ सुनकर मैं चौंक गया। "तुम फिर से आ गई?" ये वही बात थी जो वो हमेशा कहती थी। लेकिन उसकी आवाज़ में पहले और अब की बेबसी थी। उसकी आवाज़ में कोई ताकत नहीं थी। इससे पहले मैंने उसे बिस्तर पर लेटे हुए बहुत कम देखा था, लेकिन आज, शायद दर्द के कारण, मेरे कमरे में आने पर भी वो नहीं उठी। और एक हफ़्ते पहले तक तो वो बिल्कुल स्वस्थ लग रही थी।

जब उसकी नजरें मेरी नजरों से मिलीं, तो वह खिलखिलाकर हंस पड़ी, मानो कोई शर्मीली छोटी बच्ची हो।

"मोमोको..." अनजाने में ही मैंने उसका नाम ऐसे लिया जैसे मैं रोने ही वाली थी। लेकिन मैंने तुरंत खुद को संभाला और मुस्कुराने की पूरी कोशिश की। "मेरे चाचा का फोन आया था। मुझे डर लग गया।"

मैं काफी बदसूरत दिख रही हूँ, है ना?

उसका नया कमरा एक सिंगल रूम था। मोमोको अकेली थी, एक सफेद पलंग के बीचोंबीच लेटी हुई। कमरा अपेक्षाकृत बड़ा था, लेकिन इसकी विशालता के कारण अजीब तरह से घुटन महसूस हो रही थी। बहुत से लोग इस कमरे में, इसी पलंग पर सो चुके थे, और अब वे जा चुके थे। कमरे में मौजूद होते ही यह बात स्पष्ट रूप से महसूस हो रही थी।

"अंकल सटोरू?"

“वह कुछ देर पहले कपड़े बदलने के लिए घर वापस गया था। यह इतना अचानक हुआ कि हमने कुछ भी तैयार नहीं किया था।”

"ओह । । ।"

मैं अपने चाचा के लौटने तक वहीं इंतजार करता रहा। पहले की तरह नहीं, मोमोको ने मुझे जल्दी घर जाने के लिए नहीं कहा। वह चुपचाप वहीं लेटी रही।

जब मैं जाने लगी, तो उसने धीरे से कहा, "ताकाको, मुझसे मिलने हमेशा आने के लिए धन्यवाद। क्या तुम फिर आओगी?"

"मोमोको, ये तो तुम्हारी आवाज़ नहीं है।"

"मेरा मतलब है, यह शर्मनाक है, क्या आपको नहीं लगता? मैं इस तरह तभी बात करती हूं जब मैं कमजोर महसूस करती हूं।"

“ईमानदारी अधिक शोभा देती है।”

"अरे, तुम एक बूढ़ी औरत से बात कर रहे हो, तुम्हें पता है ना।"

मैं जल्द ही वापस आऊंगा। इसलिए, आप लोग थोड़ा आराम कर लीजिए। ठीक है?

मोमोको ने मेरी तरफ सिर घुमाया, मुस्कुराई और धीमी आवाज़ में "हाँ" कहा। मुझे अंदर एक अजीब सी गर्माहट महसूस हुई। यह मेरे सीने में कहीं धड़क रही थी। मैं इसे अपने अंदर उठते हुए महसूस कर सकती थी, जैसे यह बाहर निकलने का रास्ता खोज रही हो। मैं कमरे से बाहर निकली और गलियारे में दीवार से टिक गई। मैंने ऊपर देखा और छत पर लगी फ्लोरोसेंट लाइटों को तब तक देखती रही जब तक वह एहसास शांत नहीं हो गया।

उसके बाद से, चूंकि मेरे चाचा अक्सर अस्पताल में मेरी चाची के साथ रहने जाते थे, इसलिए मोरिसाकी बुकशॉप अक्सर बंद रहने लगी। मोमोको को इस पर आपत्ति थी, लेकिन चाहे वह उन्हें कुछ भी समझाती, मेरे चाचा हठपूर्वक अस्पताल आना बंद करने से इनकार करते रहे।

मुझे दिख रहा था कि मेरे चाचा दुबले होते जा रहे हैं। वैसे भी वे दुबले थे, लेकिन अब तो वे हद से ज्यादा दुबले हो गए थे; उनका शरीर इतना सिकुड़ गया था कि उन्हें देखना भी कष्टदायक था। उनकी आँखों के नीचे काले घेरे पड़ गए थे और गाल धंस गए थे; ऐसा लग रहा था मानो कुछ ही महीनों में उनकी उम्र पाँच साल बढ़ गई हो।

वह हमेशा ही भुलक्कड़ रहता था—यहां तक कि कई बार ग्राहक उसके सामने किताब पकड़े खड़ा होता था, और वह उस पर ध्यान भी नहीं देता था।

“चाचा जी, आपके पास एक ग्राहक आया है,” मैं धीरे से उनके कंधे को धक्का देते हुए कहता।

“ओह, मुझे माफ़ कर दीजिए। मुझे खेद है,” वह जल्दी से किताब लेते और बिल बनाते हुए कहता। लेकिन काम खत्म होते ही वह फिर से खाली जगह में घूरने लगता।

दुकान के रूप में कोई बदलाव नहीं आया था। किताबें मेरे चाचा की वर्गीकरण प्रणाली के अनुसार अलमारियों पर सही जगह पर रखी थीं, और जगह बेहद साफ-सुथरी थी। फिर भी मुझे यह महसूस हो रहा था कि अब दुकान में घुटन सी महसूस हो रही है।

मैंने अपने चाचा को प्यार से समझाने की कोशिश की कि वे थोड़ा आराम कर लें। लेकिन उन्होंने मेरी बात नहीं सुनी। उन्होंने मुझसे कहा, "अगर मैं काम कर रहा हूँ, तो मुझे हर चीज़ के बारे में सोचने की ज़रूरत नहीं है।"

लेकिन अगर तुम यही करते रहे तो तुम ढह जाओगे।

मैं ठीक हूँ। मैं इतना कमजोर नहीं हूँ।

हालांकि वह आम तौर पर इतना नाजुक होता था कि हमेशा शिकायत करता रहता था, लेकिन इस समय वह सख्त होने का नाटक कर रहा था।

“आपको पता है, मोमोको मुझसे उन सभी बातों के लिए माफी मांग रही थी जो उसने मुझे झेलने पर मजबूर किया। उसे ये सब कहते हुए सुनकर मैं एकदम हिल गई। मुझे समझ नहीं आया कि क्या जवाब दूं। इसीलिए मुझे उसे ये साबित करना होगा कि मैं बिल्कुल ठीक हूं।”

“चाचा जी...” मुझे कहने के लिए शब्द नहीं मिल रहे थे।

“मैं किसी काम का नहीं,” मेरे चाचा मन ही मन बुदबुदाए। वे रॉय की गोद में बैठे थे, अभी भी कहीं खोए हुए, शोक में डूबे हुए। “पिछले छह महीनों से, मैं उसे जाने देने की बात मान चुका था, पर कोई फायदा नहीं। जैसे-जैसे वो पल करीब आ रहा है, मैं बस उसके साथ जितना हो सके उतना समय बिताना चाहता हूँ। मैं स्वार्थवश यही दुआ करता रहता हूँ कि वह अभी न मरे। उसने तो इसे स्वीकार कर लिया है। आखिर में, मैं ही हूँ जो इसे स्वीकार नहीं कर पा रहा। मैं बस लालची हो रहा हूँ।”

मैंने दृढ़ता से कहा, "तुम लालची नहीं हो।"

मेरे चाचा ने सिर हिलाया।

“नहीं, मैं हूँ। आजकल मुझे ऐसा लगता है कि अगर वो थोड़ी देर और जी जाए तो मैं कुछ भी कुर्बान कर दूंगा।” मेरे चाचा ने उदास मुस्कान के साथ कहा, “मैं हद से ज़्यादा स्वार्थी हूँ,” और फिर अचानक जैसे वो संभल गए और मेरी तरफ देखने लगे।

मुझे खेद है। मैं बस शिकायत कर रहा हूँ।

कोई बात नहीं। मैं आपकी मदद करने के लिए बस इतना ही कर सकता हूँ कि आपकी बात सुनूँ।

यही एकमात्र उपाय था जो मैं कर सकता था। अपनी इस बेबसी से मेरा दिल टूट गया।

मेरे चाचा ने मेरी निराशा को अनदेखा करते हुए अचानक "ओह" कहा और खड़े हो गए। उन्होंने कहा, "यहाँ से मीठे जैतून के फूलों जैसी खुशबू आ रही है," और गहरी साँस लेकर अपनी आँखें बंद कर लीं।

मैं भी उत्साह में डूबकर गहरी सांस लेने लगा।

मैंने कहा, "मुझे लगता है कि साल का वह समय आ ही गया है।"

मेरे चाचा ने दिन में पहली बार खुलकर मुस्कुराया।

“मोमोको को यह खुशबू हमेशा से पसंद रही है। मुझे उम्मीद है कि वह अस्पताल में भी इसे सूंघ सकेगी।” मेरे चाचा ने काफी देर तक अपनी आंखें बंद रखीं, मानो कोई दुआ मांग रहे हों।

दिन बीतते गए और समय आगे बढ़ता रहा। इसे कोई रोक नहीं सकता।

मोमोको से मेरी आखिरी मुलाकात अक्टूबर की शुरुआत की एक शांत दोपहर में हुई थी। खुली खिड़की से आती शरद ऋतु की हवा सुहावनी लग रही थी और कमरे में मीठे जैतून के फूलों की खुशबू फैली हुई थी। हवा के झोंके से पर्दे हल्के-हल्के हिल रहे थे। इस शांति के बीच, कपड़ों की सरसराहट की हल्की सी आवाज सुनाई दे रही थी। बस, वैसी ही एक सुहावनी दोपहर थी।

जब उन्होंने मुझे अंदर आते देखा, तो मेरे चाचा ने कुछ बुदबुदाते हुए कहा कि उन्हें कोई काम है और जल्दी से कमरे से बाहर चले गए। अब पीछे मुड़कर देखता हूँ तो लगता है कि शायद यह उनका हमें कुछ समय अकेले देने का एक विचारशील तरीका था, क्योंकि उन्हें पता था कि मोमोको और मैं शायद आखिरी बार एक-दूसरे को देख रहे हैं।

“हे, क्या मैं तुमसे कुछ बात कर सकती हूँ?” मोमोको ने थोड़ी देर झपकी लेने के बाद आँखें खोलते हुए कहा। “आज मैं बहुत बेहतर महसूस कर रही हूँ। और मुझे कहानी सुनने का मन कर रहा है।”

“किस तरह की कहानी?”

“कोई भी तरह की। आपके बचपन की कोई याद कैसी रहेगी?”

अचानक मिले इस अनुरोध से मैं थोड़ा घबरा गया और सोचने लगा कि इस स्थिति में किस तरह की याददाश्त सबसे उपयुक्त रहेगी। कोई मज़ेदार कहानी अच्छी रहेगी। कुछ ऐसा जिससे वह हंस सके। कुछ ऐसा जिससे वह अपने दर्द को कुछ पल के लिए ही सही, भुला सके।

"अब जब आपने इसका जिक्र किया है, तो एक बार मेरे चाचा मुझे एक ग्रीष्मकालीन उत्सव में ले गए थे। यह आप दोनों की शादी से पहले की बात है।"

“सच में? सटोरू ने ऐसा किया?”

“यह मेरे दादाजी के घर पर हमारी गर्मियों की छुट्टियों की आखिरी रात थी। दूर से, उनके पड़ोस में चल रहे उत्सव का संगीत सुनाई दे रहा था। मैं ज़िद कर रही थी क्योंकि मुझे वहाँ जाने की बहुत इच्छा थी। मेरी माँ ने कहा कि अगली सुबह हमारी फ्लाइट है, इसलिए हमें जल्दी सो जाना चाहिए, लेकिन मुझे अपने चाचा के साथ रहना बहुत अच्छा लगता था, और यह सोचकर कि हम अगले दिन वहाँ नहीं होंगे, मुझे उनकी बहुत याद आ रही थी। इसलिए वे मुझे उत्सव में ले गए। मेरे चाचा भी बहुत खुश थे, ज़ाहिर है। आखिरकार, हमारे पहुँचने के तुरंत बाद ही उत्सव समाप्त हो गया, लेकिन मुझे इस बात की तसल्ली थी कि मैं वहाँ जा सकी। यह एक अद्भुत एहसास था, जैसे मैंने कुछ जीत लिया हो। हम स्टॉलों पर कुछ भी नहीं खरीद सके, इसलिए मेरे चाचा ने पास की एक दुकान से हमारे लिए आइसक्रीम खरीदी, और हम दोनों आइसक्रीम खाते हुए और उदास होते हुए साथ-साथ वापस आ गए।”

जब मैं बात कर रही थी, मुझे धुंधली सी याद आ रही थी कागज़ की लालटेन की रोशनी, लोगों की भीड़ की बातें और यहाँ तक कि शाम की हवा में दोपहर की गर्मी का हल्का सा एहसास भी। मैं यह सब भूल चुकी थी, लेकिन अब यह एक बेहद अनमोल याद लग रही थी।

बस इतना ही। मुझे खेद है। काश मैंने कोई और दिलचस्प कहानी सोची होती।

जब मैंने माफी मांगी तो मोमोको छत की ओर देख रही थी। उसने धीरे से अपना सिर हिलाया। “मैं इसकी कल्पना कर सकती हूँ। वह दृश्य... कितना अद्भुत है। काश मैं वहाँ होती। काश मैं तुम्हारे साथ बचपन में सटोरू और तुम्हारे साथ किसी उत्सव में गई होती।”

“बिल्कुल नहीं, मोमोको। मैंने तुमसे कहा था कि हम बड़ी मुश्किल से वहाँ पहुँच पाए थे।”

“लेकिन ये तो बिल्कुल तुम दोनों की तरह है ना?” मोमोको ने हंसते हुए कहा, और मैं भी हंस पड़ी। कम से कम मैं हंसना तो चाहती थी, लेकिन तभी मुझे अपने हाथ के पीछे कुछ ठंडा सा महसूस हुआ। इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाती, ऐसा लगा जैसे मेरे चेहरे से बारिश की बूँदें मेरे हाथों पर गिर रही हों। नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकती, मैंने सोचा, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

मैंने तय कर लिया था कि मैं मोमोको के सामने नहीं रोऊँगी। मुझे लगा कि यह शर्मनाक होगा, क्योंकि सबसे ज़्यादा तकलीफ़ तो उसी को हो रही थी। हालाँकि मैंने रोने से मना कर दिया था, पर उस दोपहर अकेले में इसका कोई फ़ायदा नहीं था। एक बार जब मैंने अपने आँसू रोक लिए, तो उन्हें रोकना नामुमकिन हो गया। मेरे सीने में पनप रहा वो दर्द बाहर निकलने का रास्ता ढूंढ ही लिया।

“मुझे माफ़ कर दो,” मैंने आँसू रोकने की कोशिश करते हुए माफी मांगी। लेकिन एक बार जब भावनाओं को बाहर निकलने का रास्ता मिल गया, तो उन्हें रोकना नामुमकिन था, आँसू लगातार बहते रहे।

“मुझे माफ़ कर दो। मुझे बहुत अफ़सोस है।” मैंने अपना सिर झुका लिया और बार-बार यही शब्द दोहराती रही, और मोमोको ने अपना हाथ बढ़ाकर मेरे बालों को छुआ और मेरे सिर को ऐसे सहलाया जैसे उसे अपनी बाहों में ले रही हो।

“कोई बात नहीं,” उसने लगभग मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा। “माफी मत मांगो।”

मोमोको को इस तरह धीरे से मेरे कान में फुसफुसाते हुए सुनकर मुझे और भी ज्यादा रोना आ गया।

लेकिन... मुझे खेद है।

"ताकाको, माफी मत मांगो, ठीक है?"

आँसुओं के बीच मैंने किसी तरह सिर हिलाया। मोमोको ने कमज़ोरी से मेरा गाल चुटकी से दबाया। उसकी उंगलियाँ बहुत ठंडी थीं। अचानक ही मैंने उसका पीला, ठंडा हाथ अपने हाथ में ले लिया और कसकर पकड़ लिया। कितना छोटा हाथ! मोमोको के हाथ हमेशा से छोटे थे, किसी नन्ही बच्ची की तरह। लेकिन अब वे और भी छोटे लग रहे थे। जैसे ही मैंने उसका हाथ पकड़ा, ऐसा लगा जैसे वह सिकुड़ रहा हो, और ऐसा लग रहा था जैसे वह सिकुड़ता ही चला जाए, मानो बर्फ की एक परत की तरह गायब हो जाए।

"मेरे लिए रोने के लिए धन्यवाद," मोमोको ने कहा। "जब आप दुखी हों, तो उसे दबाने की कोशिश न करें। जी भर के रोना ठीक है। आंसू इसलिए आते हैं क्योंकि आपको जीना है। आप जीते रहेंगे, जिसका मतलब है कि रोने के और भी कारण आएंगे। वे हर तरफ से आप पर आएंगे। इसलिए कभी भी उदासी को छिपाने की कोशिश न करें। जब उदासी आए, तो खुलकर रोएं। उस उदासी के साथ आगे बढ़ते रहना ही बेहतर है; यही जीने का असली मतलब है।"

हां, मैंने सिर हिलाया और उसका हाथ कसकर पकड़ लिया। कमरे में मीठे जैतून के फूलों की हल्की-हल्की खुशबू फैली हुई थी। रोते-रोते भी मुझे वह खुशबू महसूस हो रही थी।

"हे ताकाको, मुझे किसी बात का पछतावा नहीं है। मुझे लगता है कि मैं बहुत भाग्यशाली था कि मुझे साटोरू से दोबारा मिलने का मौका मिला, और उसके साथ अपना बचा हुआ समय बिताने का मौका मिला, और मुझे अलविदा कहने का समय भी मिला। इतना ही नहीं, मुझे तुम्हारे साथ और भी करीबी रिश्ता बनाने का मौका मिला। इससे ज़्यादा मैं और क्या चाह सकता हूँ?"

बस यही बात थी। मोमोको मेरे चाचा के पास वापस आई थी क्योंकि वह अलविदा कहना चाहती थी। शायद बीमारी दोबारा होने का पता चलने के बाद भी उसमें कोई बदलाव नहीं आया, इसका कारण यही था कि उसकी इच्छा पहले ही पूरी हो चुकी थी। और अस्पताल में भर्ती होने के बाद भी, जब वह अपने आसपास के लोगों की निगरानी में थी, तब भी वह हमेशा गरिमापूर्ण दिखती थी। क्योंकि उसे सचमुच कोई पछतावा नहीं था।

यह बताने के बाद, वह बोलती रही। "लेकिन, उम... मरने के बाद मुझे बस एक बात की चिंता सताती है," उसने अचानक कहा। "मुझे आपसे यह पूछते हुए बुरा लग

रहा है क्योंकि मैंने पहले ही आप पर बहुत बोझ डाल दिया है, लेकिन मेरी एक आखिरी गुजारिश है। क्या मैं आपसे एक और बात पूछ सकती हूँ?"

"एक अनुरोध?" मैंने बहती नाक और आँसुओं से भीगे चेहरे के साथ उसकी ओर देखा। उसने भी दृढ़ निश्चय से मेरी ओर देखा।

"तुम्हें पता है, जब से सटोरू को पता चला है कि मेरा कैंसर दोबारा हो गया है, उसने मुझे एक बार भी अपना दुख ज़ाहिर नहीं करने दिया। वो मुस्कुराता है, और मैं उसके चेहरे पर देख सकती हूँ कि सारा बोझ वो खुद ही उठा रहा है। लेकिन मुझे इस बात का गहरा एहसास है कि मुझे इस हालत में देखकर वो कितना दुखी होता है। बेशक, वो इस बात से इनकार करता है। लेकिन मेरी चिंता ये है कि मेरे जाने के बाद, वो खुद को रोने नहीं देगा, किसी पर निर्भर नहीं रहेगा, और इस दुख का बोझ खुद ही ढोता रहेगा। क्योंकि वो बहुत दयालु और बहुत नासमझ इंसान है।"

"अच्छा ऐसा है।"

मेरे मन में मेरे चाचा की दर्द भरी मुस्कान की छवि उभर आई, और इससे मेरा दिल टूट गया।

"इसलिए अगर ऐसा लगे कि मेरे मरने के बाद सटोरू रो नहीं पा रहा है, तो मैं चाहती हूँ कि तुम उसके साथ रहो। हमारे कोई बच्चे नहीं थे, इसलिए मैं सिर्फ तुमसे ही मदद माँग सकती हूँ। अगर सटोरू खुद को दुनिया से अलग कर ले, तो उस पर चिल्लाना और उसे रुला देना। मेरी सबसे बड़ी उम्मीद यही है कि अगर वह रोएगा, तो वह आगे बढ़ पाएगा।"

मोमोको ने मेरा हाथ कसकर पकड़ लिया। उसका चेहरा दर्द से कराह रहा था।

मुझे खेद है। आपसे यह पूछना स्वार्थपूर्ण है।

मैंने मोमोको की आंखों में देखकर कहा, "मैं यह करूँगी। मैं वादा करती हूँ।" मैं चाहती थी कि उसे पता चले कि मैं समझ गई हूँ।

"धन्यवाद। इससे मुझे बहुत राहत मिली," उसने कहा और उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई। यह एक कोमल मुस्कान थी जो दर्शाती थी कि उसे अब कितनी गहरी राहत महसूस हो रही है। फिर उसने धीरे से अपने रुमाल से मेरे चेहरे से आंसू पोंछे। माँ से लिपटे बच्चे की तरह, मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और जब तक उसने मेरे सारे आंसू पोंछे, मैं बिल्कुल नहीं हिला। हम काफी देर तक उसी स्थिति में रहे।

वह सचमुच एक शांत दोपहर थी। क्रीम रंग के पर्दे हवा में धीरे-धीरे लहरा रहे थे।

मोमोको की मृत्यु तीन दिन बाद, सुबह तड़के हुई।

15

अंतिम संस्कार मेरे चाचा के घर पर हुआ। अक्टूबर का वह दिन धूप से जगमगा रहा था, जो मोमोको के लिए बिल्कुल उपयुक्त था। मोमोको के माता-पिता का देहांत उसके बचपन में ही हो गया था, और उपस्थित रिश्तेदारों में मेरे माता-पिता जैसे लोग तो थे ही, लेकिन वास्तव में वहाँ जिम्बोचो से उसके कई परिचित लोग मौजूद थे: साबू और किताबों की दुकान के अन्य नियमित ग्राहक, सेवूर और ताकानो के तत्कालीन मालिक, श्री नाकासोनो और रेस्तरां के जाने-पहचाने चेहरे, साथ ही सराय का मालिक और वे लोग जिनके साथ उसने पहाड़ी सराय में काम किया था... और निश्चित रूप से, वाडा और टोमो। टोमो और सराय का मालिक तुरंत अंतिम संस्कार की तैयारियों में मदद करने के लिए आ गए, और जब मेरी माँ और मुझे मदद की कमी महसूस हुई, तो उन्होंने हमारी बहुत सहायता की।

बस इसी से मुझे समझ आ गया कि मोमोको को सब कितना प्यार करते थे, वो कितनी अनमोल थी, और इससे मुझे बहुत खुशी हुई। और सब इस बात से सहमत थे कि उसे खुशी-खुशी विदाई दी जानी चाहिए। अंत तक मोमोको अपने दिल को सुकून देने वाले, खिले हुए फूल की तरह चमकते हुए, मुस्कुराती रही। ज़ाहिर है, ऐसे व्यक्ति को उदास माहौल में विदाई देना गलत होता।

जब हम शोक सभा में मोमोको के ताबूत के चारों ओर इकट्ठा हुए, तो हम हमेशा की तरह एक साथ हँसे। साबू, जो काफी नशे में था, तीस मिनट से भी अधिक समय तक एक लंबा भाषण देता रहा कि वह मोमोको से किया अपना वादा पूरा नहीं कर पाया - अपनी एक प्रतिभा उसके साथ साझा करना - उसके लिए कुछ पारंपरिक नानीवाबुशी गीत गाना। अंत में, उसकी पत्नी ने उसे शर्मिंदा न होने के लिए कहा। मोमोको की एक दूर की रिश्तेदार महिला ने हमें घूरकर देखा, मानो कह रही हो कि हमारा इस तरह व्यवहार करना अनुचित है, लेकिन उसने स्थिति को पूरी तरह से गलत समझा। इसमें उदासी भी थी। हम बस अपने दुख को इस तरह व्यक्त करना चाहते थे जिससे मोमोको खुश हो जाए।

मुझे लगता है कि यह एक अच्छा अंतिम संस्कार था, एक ऐसा अनुभव जो हमेशा हमारे साथ रहेगा। मुझे अब भी पूरा यकीन है कि इससे मोमोको खुश हुई होगी। मोमोको अपने ताबूत में शांत और प्रसन्न लग रही थी। हमने इस बारे में बात की। हमने कहा, "मोमोको अच्छी लग रही है; ऐसा लग रहा है जैसे वह हमारे साथ इसका आनंद ले रही हो"; "बिल्कुल।"

लेकिन एक बात थी जो मुझे चिंतित कर रही थी।

ये अंकल सटोरू थे। अंतिम संस्कार के दौरान उन्होंने मुश्किल से ही कुछ बोला। उन्होंने खाने-पीने की किसी भी चीज़ को हाथ नहीं लगाया। वे बस सबके सामने झुककर सभी उपस्थित लोगों का अभिवादन करते रहे और बार-बार अपना आभार व्यक्त करते रहे। यहाँ तक कि जब मोमोको का अंतिम संस्कार हुआ, तब भी वे आकाश की ओर देखते रहे, जबकि साबू और सेवर के मालिक अपने आँसू पोंछ रहे थे। उनकी आँखों में एक ऐसी उदासी थी, मानो वे पृथ्वी के वायुमंडल की सबसे दूर की सीमाओं को देखने की कोशिश कर रहे हों। अगर उस समय वे टूटकर रो पड़ते, तो हम उन्हें सहर्ष अपने साथ शामिल करने के लिए तैयार थे। सच कहूँ तो, मैं यही चाहता था। मैं यही चाहता था कि वे हम पर भरोसा करें। हमारे साथ शोक मनाएँ, और यदि संभव हो, तो हमें उन्हें कुछ सांत्वना के शब्द कहने दें। लेकिन मेरे अंकल दूसरों के सामने अपनी कोई कमजोरी नहीं दिखाते थे।

मोमोको के अंतिम समय में मेरे चाचा उनके साथ थे। मुझे नहीं पता कि उस समय क्या हुआ होगा। मुझे नहीं पता कि उस पल उन्होंने क्या सोचा या क्या कहा होगा। फिर भी, अंतिम संस्कार में उनके हावभाव से मुझे ऐसा लगा कि वे अपनी भावनाओं को छिपाने की कोशिश कर रहे थे, ठीक वैसे ही जैसे मोमोको को डर था।
मुझे लगता है कि मैं कुछ समय के लिए दुकान बंद करने जा रहा हूँ।

अंतिम संस्कार के कुछ ही समय बाद मेरे चाचा ने अपनी घोषणा की। मैं काम से लौटते समय मोरिसाकी बुकशॉप पर रुका क्योंकि मुझे उनकी चिंता थी। लेकिन दुकान बंद थी, जबकि दुकान का समय चल रहा था। मैं चिंतित हो गया और तुरंत घर पर अपने चाचा को फोन किया; मुझे कुछ देर इंतजार करना पड़ा, तब जाकर उन्होंने जवाब दिया। जब मैंने उनसे इसके बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा, "मैंने कुछ समय के लिए दुकान बंद करने का फैसला किया है," उनकी आवाज़ में बहुत थकान झलक रही थी।

मैं असमंजस में था, और साथ ही, मेरे मन के एक हिस्से ने सोचा, "हाँ, बिल्कुल।" मुझे हल्का सा आभास था कि वह जल्द ही कुछ ऐसा कह सकता है।

मैंने पूछा, "क्या आपको शारीरिक दर्द हो रहा है?"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है," उसने फोन के दूसरी तरफ से बेजान आवाज में कहा।

“क्या आप ठीक से खाना खा रहे हैं? क्या मैं आकर आपके लिए कुछ बना सकती हूँ?”

मैं ठीक हूँ। बस थोड़ी सी थकान महसूस हो रही है। तो...

और इसी के साथ ही फोन कट गया।

लेकिन मेरे चाचा एक महीने में ही इतने कमजोर हो गए थे कि मैंने उन्हें कुछ समय आराम करने की सलाह दी। मैंने सोचा, थोड़ा आराम कर लीजिए और जब आप ठीक हो जाएं तो दुकान पर वापस आ जाइए। मेरे चाचा ने पहले ही तय कर लिया था कि यही बेहतर होगा।

मुझे लगा था कि यह कुछ दिनों तक ही चलेगा, एक हफ्ते से ज़्यादा तो बिल्कुल नहीं। लेकिन चाहे मैं कितना भी इंतज़ार करता, मोरिसाकी बुकशॉप के शटर बंद ही रहे। कुछ समय बाद, एक सफेद कागज़ पर हाथ से लिखा एक संदेश शटर पर चिपका दिया गया, जिस पर लिखा था, "हम कुछ समय के लिए बंद हैं।" हवा और बारिश से भीगने के बाद अब वह कागज़ लटक रहा था।

“साटोरू दुकान खोलने से पहले कब तक इंतजार करने की योजना बना रहा है?” साबू, जो कभी लगभग हर दिन आता हुआ प्रतीत होता था, अब अपना ठिकाना खो देने से दुखी लग रहा था।

“मैं तुम्हारी भावना समझता हूँ, लेकिन फिर भी मैं चाहता हूँ कि सटोरू दुकान खोले। हम भले ही ज़्यादा ग्राहक न हों, लेकिन नियमित ग्राहक होने के नाते हम उसका समर्थन कर सकते हैं। लेकिन अगर वह आसपास नहीं होगा, तो उसे खुश करने का हमारे पास कोई तरीका नहीं होगा।”

फोन पर साबू ने मुझसे कहा कि जब मैं अपने चाचा से मिलूं तो उन्हें यह संदेश दे दूं।

वह सही था। दुकान खुलने का इंतज़ार करने वाले और भी लोग थे। लेकिन मुझे लगता है कि मेरे चाचा को यह पहले से ही पता होगा...

दुकान अभी भी बंद थी, और मेरे चाचा ने इसे लगभग एक महीने तक बंद ही रहने दिया था। इतने समय में वो क्या कर रहे थे? उन्होंने खुद को लगभग घर के अंदर ही बंद कर लिया था। मोमोको के निधन तक, वो हर हाल में दुकान चलाने पर अड़े रहते थे। शायद उन्होंने खुद पर बहुत ज़्यादा दबाव डाल दिया था, और अब अचानक सब कुछ बिगड़ गया।

मैं कुनिताची स्थित उनके घर यह देखने गया कि वे कैसे हैं। फोन पर वे हमेशा कहते थे कि वे ठीक से खा रहे हैं, लेकिन उनकी आवाज़ इतनी बेजान लग रही थी कि मैंने रास्ते में सुपरमार्केट से कुछ किराने का सामान खरीदने का फैसला किया ताकि मैं उन्हें कुछ खिला सकूँ।

मैं रेलवे स्टेशन के पास एक बड़े सुपरमार्केट में रुकी, जहाँ मैं मोमोको के साथ कई बार गई थी। उसे वह जगह बहुत पसंद थी, क्योंकि जब वहाँ सेल लगती थी तो आस-पास की दूसरी दुकानों के मुकाबले दाम बहुत कम होते थे। जब हम साथ जाते थे तो मुझे हँसी आती थी जब मैं देखती थी कि वह अपने छोटे, फुर्तीले शरीर का पूरा भार शॉपिंग कार्ट पर डालकर तेज़ी से गलियारे में कैसे निकल जाती थी। उसकी मृत्यु के बाद ऐसी ही छोटी-छोटी यादें बार-बार मेरे मन में आती रहीं। उन पलों में ऐसा लगता था जैसे मेरे दिल में एक गहरा खालीपन आ गया हो। किसी प्यारे इंसान को खोने का यही दर्द होता है। अब मैं इसे कई अलग-अलग जगहों पर और कई अलग-अलग तरीकों से महसूस कर रही हूँ।

खरीदारी पूरी करने के बाद, मैं अपने चाचा के घर की ओर चल पड़ा। दोनों हाथों में सुपरमार्केट के शॉपिंग बैग लिए, मैं उनके रिहायशी इलाके की गली से गुज़र रहा था। सूर्यास्त के समय आसमान में कुछ तितलियाँ उड़ रही थीं, जो अब चमकीले लाल रंग की दिख रही थीं। उनमें से एक मेरे पास आई और ऐसा लगा जैसे वह मेरे कंधे पर बैठने वाली हो, फिर वह आसमान में उड़ गई। चलते-चलते मुझे रोने जैसा महसूस हो रहा था। मैं तेज़ी से चलने लगा, मानो तेज़ कदमों से अपने चाचा के घर पहुँचने की जल्दी में था।

हालांकि मैंने उसे बताया था कि मैं उस शाम आ रहा हूँ, लेकिन घंटी बजाने पर उसने दरवाजा नहीं खोला। दरवाजा बंद नहीं था। जब मैं अंदर गया और ऊपर उसे आवाज़ दी, तो मेरे चाचा के कमरे से केवल "हाँ" की आवाज़ आई।

ऊपर जाने से पहले, मैंने बैठक में मोमोको के बौद्ध वेदी के सामने हाथ जोड़कर प्रार्थना की। वेदी पर लगी तस्वीर छह महीने पहले एक नियमित ग्राहक ने ली थी, जो शौकिया फोटोग्राफर था। तस्वीर में मोमोको मुस्कुरा रही थी और पृष्ठभूमि में मोरिसाकी बुकशॉप दिखाई दे रही थी। वह एक अद्भुत तस्वीर थी। उसे देखकर कई भावनाएं उमड़ आईं।

फिर मैं सीढ़ियाँ चढ़कर अपने चाचा के दरवाजे पर दस्तक दी और उसे खोला। हालाँकि सूरज डूबने लगा था, फिर भी मेरे चाचा स्वेटशर्ट और स्वेटपैंट पहने अपने फ़्यूटन पर लेटे हुए थे। उनके बाल बिखरे हुए थे और दाढ़ी इतनी कम थी कि वे किसी कार्टून चोर जैसे लग रहे थे। उनकी हालत इतनी दयनीय थी कि मैंने झट से कहा, "चाचा!"

उसने मेरी तरफ ऊंघते हुए देखा और बेवकूफी से "हे" कहकर मेरा अभिवादन किया।

क्या वह पूरा दिन इसी तरह बिता रहा था? कमरे में आलू के चिप्स के पैकेट और सुविधा स्टोर से लाए गए बेंटो बॉक्स बिखरे पड़े थे।

"आप क्या कर रहे हो?"

"सोना।"

कंबल में बने एक छेद से मेरे चाचा ने अपने दोनों हाथ बाहर निकालकर शांति का चिन्ह दिखाया।

“ये तो बिल्कुल भी शांति नहीं है!” मैंने कंबल खींचकर हटा दिए, और मेरे चाचा एक गोल-मटोल कीड़े की तरह सिकुड़कर बैठ गए। फिर भी, मैंने हिम्मत नहीं हारी और उनके द्वारा बंद किए गए पर्दे खोल दिए।

“रुको! अगर मुझ पर रोशनी पड़ी तो मैं राख हो जाऊंगा।”

“तुम बेवकूफ हो।” मुझे एहसास हुआ कि मेरी आवाज़ रोने जैसी लग रही थी। मुझे इतनी राहत क्यों महसूस हो रही थी? मेरे चाचा अभी भी पूरी तरह से जीवित थे, वे अभी भी यहीं थे। ऐसा नहीं था कि मुझे सच में विश्वास था कि वे मोमोको के साथ कब्र में चले जाएंगे। लेकिन जिस तरह से वे हाल ही में अकेले ही इस बोझ को उठा रहे थे, उससे ऐसा लग रहा था कि यह असंभव नहीं है। इसीलिए उन्हें वहाँ देखकर मुझे खुशी हुई—भले ही वे गोल-मटोल से लग रहे थे।

"माफ़ करना, ताकाको।"

कोई बात नहीं। अभी जो मायने रखता है वो ये है कि मैं तुम्हारे लिए खाना बना रही हूँ। क्या हम साथ में खाना खाएँ? मुझे यकीन है कि तुमने काफी समय से ठीक से खाना नहीं खाया होगा।

“अरे, धन्यवाद।” उसने आज्ञाकारी भाव से सिर हिलाया।

मैंने रसोई का जिम्मा संभाला और उनकी पसंदीदा करी बनाई। ज़ाहिर है, यह वर्मोंट करी ब्रांड की हल्की करी थी। रसोई देखकर लग रहा था कि इसका इस्तेमाल काफी समय से नहीं हुआ है। यह बेहद साफ-सुथरी थी।

मैं कुछ एग ड्रॉप सूप और करी व सलाद से भरी एक प्लेट लेकर लिविंग रूम में आया और फिर मैंने अपने चाचा को आवाज़ दी। जब मैंने उन्हें खाने से पहले चेहरा धोने और शेव करने के लिए कहा, तो वे आज्ञाकारी होकर बाथरूम की ओर चले गए। मैंने उनसे कहा कि उन्हें अपना स्वेटसूट भी बदल लेना चाहिए क्योंकि वह थोड़ा मैला लग रहा था, और वे दूसरी मंजिल पर गए और उसी रंग और स्टाइल का दूसरा स्वेटसूट पहन लिया।

लेकिन जब मैं बैठक में आई और अपने चाचा को देखा, तो मैं चीख पड़ी। उनके मुंह के आसपास का हिस्सा इतना खून से सना हुआ था कि वह चमकीला लाल दिख रहा था।

“हूँ, क्या?” मेरे चाचा का मुँह खुला रह गया। उन्होंने मेरी ओर आने की कोशिश की, और मैं चीख पड़ी।

“खून! खून!”

“अरे, मैंने तो बहुत दिनों से शेव नहीं की थी, शायद मैंने खुद को थोड़ा खरोंच लिया हो,” उसने स्तब्धता में कहा। उसने टिशू से अपना मुंह पोंछा, लेकिन जब उसने देखा कि वह खून से सना हुआ है, तो वह चिल्ला उठा, “ओह, ये तो अच्छा नहीं लग रहा।”

“वहाँ खड़े होकर ‘वाह’ मत कहो। आईने में खुद को देखने की कोशिश करो।”

मैं यह क्यों देखना चाहूँगी कि मैं कितनी बुरी दिखती हूँ?

ऐसा लग रहा था कि उसे इस बात का कुछ हद तक एहसास था कि वह कितना भयानक दिख रहा है। लेकिन ऐसे क्षणों में भी उसका व्यवहार कुछ ऐसा था जिसका अंदाजा लगाना मुश्किल था, इसलिए मैं सतर्क रहा।

आखिरकार, हम दोनों मेज पर बैठ गए। उसकी आँखें अब भी नींद से भरी हुई लग रही थीं, और उसका चेहरा भी पहले जैसा ही था, वह रोबोट की तरह बेमन से करी मुंह

में ठूँस रहा था। ऐसा बिल्कुल नहीं लग रहा था कि हम साथ में खाना खा रहे हैं। फिर भी, यह उसके बिल्कुल न खाने से बेहतर था।

“साबू और बाकी लोग तुम्हारे बारे में चिंतित हैं। वे तुम्हें फिर से दुकान संभालते हुए देखना चाहते हैं।” मैंने साबू का संदेश उन्हें बताया, और साथ ही वह करी खाई जो मुझे पर्याप्त तीखी नहीं लगी।

"अरे, सच में? मुझे इस बात का बुरा लग रहा है।"

सब लोग तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।

"ओह।"

अगली बार हम साथ चलें तो कैसा रहेगा? मैं तुम्हारी मदद करूँगा।

"मैं इसके बारे में सोचूँगा।"

उसकी बातों में कोई भावना नहीं थी। वह बस शब्दों को जोड़-तोड़ कर बोल रहा था। फिर उसने कहा, "माफ़ कीजिए, मेरा पेट भर गया है," और चम्मच नीचे रख दिया। उसने आधा भी नहीं खाया था। वह अभी भी काफ़ी कमज़ोर था। मैं उसे इस हालत में नहीं छोड़ सकती थी। मैंने मोमोको से वादा किया था, वादा कि मैं उसे आगे बढ़ने और जीने में मदद करूँगी। लेकिन मुझे बिल्कुल भी समझ नहीं आ रहा था कि मैं यह कैसे करूँ। मैं बस इतना ही कर सकती थी कि उसके लिए खाना बनाऊँ, कपड़े धोऊँ और उससे बात करूँ। अगर वह कम से कम दुकान खोल दे, तो मैं उसकी और मदद कर सकती हूँ।

मुझे इस बात की चिंता हुई, और फिर मैंने सावधानी से इस विषय को उठाया। "अंकल?"

"हाँ?"

“आप दुकान को यूं ही बंद छोड़ने के बारे में तो नहीं सोच रहे हैं, है ना? कुछ समय की छुट्टी लेना जरूरी है, बिल्कुल। आप बस कुछ समय की छुट्टी ले रहे हैं, है ना?”

मेरे चाचा ने ऊपर देखा मानो मेरी कही बात से उन्हें आश्चर्य हुआ हो। लेकिन उनकी आँखों में उदासी का भाव फिर लौट आया और उन्होंने दोबारा नीचे देख लिया।

"मुझें नहीं पता। । ।"

"चाचा। । ।"

“सच कहूँ तो मुझे नहीं पता। ऐसा नहीं है कि मैं दुकान चलाना नहीं चाहती। मुझे अच्छी तरह पता है कि हमारे ग्राहक मेरा इंतज़ार कर रहे हैं। बस ये बहुत मुश्किल है।

मोमोको और मैंने साथ-साथ किताबों की दुकान शुरू की थी। मोमोको के जाने के बाद भी, मैंने दुकान संभाली क्योंकि मुझे पता था कि वो ज़िंदा है, भले ही वो दूर कहीं रहती हो। क्योंकि मैं उसके लिए एक ऐसी जगह बचाकर रखना चाहती थी जहाँ वो वापस आ सके, चाहे कुछ भी हो जाए, अगर वो थक जाए या चोट लग जाए।"

जैसे-जैसे वह बोलता गया, मेरे चाचा के चेहरे पर फिर से तनाव आ गया। कभी-कभी, उनके चेहरे पर दर्द के भाव स्पष्ट दिखाई देते थे।

"लेकिन अभी वहां रहना बहुत मुश्किल है। बहुत सारी यादें हैं। और वे सभी यादें इस बात की याद दिलाती हैं कि वह मर चुकी है। मैं समय बीतने नहीं देना चाहता। क्योंकि अगर समय बीतता गया, तो मोमोको मुझसे और दूर होती चली जाएगी।"

मेरे चाचा सामने वाली दीवार पर लगी घड़ी को ऐसे घूर रहे थे मानो उसे गुस्से से देख रहे हों।

यह घड़ी मेरे दादाजी के ज़माने से इस्तेमाल हो रही थी और आज भी समय बता रही थी। मेरे चाचा को लगता था कि वे इस घड़ी की सुइयों को रोक सकते हैं।

"मैं समझती हूँ कि तुम कैसा महसूस कर रहे हो। कम से कम, मुझे लगता है कि मैं थोड़ा-बहुत समझती हूँ। मतलब, मैंने भी मोमोको से प्यार किया था। लेकिन तुम गलती कर रहे हो। तुम्हें पता है कि यह गलती है, है ना? हम ज़िंदा हैं। समय को कोई रोक नहीं सकता। इसलिए हमें आगे बढ़ते रहना होगा, एक-एक कदम करके, चाहे हमारे पैर कितने भी भारी क्यों न लगें।" मेरे गले में एक गांठ सी आ गई, लेकिन मैं बोलती रही। "भले ही इसका मतलब उस मरे हुए इंसान को पीछे छोड़ना ही क्यों न हो।"

"ताकाको..."

मैंने बात करते समय उनकी आँखों में देखने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने तुरंत नज़रें फेर लीं। फिर भी मैं बोलती रही। "आप समझते नहीं हैं, अंकल। आपने मुझे बहुत कुछ सिखाया है। आपने जो कुछ भी कहा है। इसीलिए भले ही मेरी समझ में सब कुछ स्पष्ट न हो, मैं आपको समझाने के लिए सही शब्द ढूंढने की कोशिश कर रही हूँ। यही तो आपने मुझे सिखाया है, है ना? आमने-सामने बात करना और अपनी बात कहना कितना ज़रूरी है।"

उनकी निगाहें पूरे समय झुकी रहीं, इसलिए यह बताना मुश्किल था कि वे सुन रहे थे या नहीं। लेकिन अंत में, उन्होंने कुछ शब्द बुदबुदाए। ऐसा लगा जैसे उन्होंने हार मान ली हो। "आप सही कह रहे हैं। मुझे समझ नहीं आया। लेकिन कोई बात नहीं।"

उसके बाद भी मोरिसाकी बुकशॉप बंद ही रही। मेरे दिमाग में बस एक ही उपाय आया कि दुकान को साफ-सुथरा रखूँ। अगर पुरानी किताबों को हवा के बिना किसी कमरे में बंद करके छोड़ दिया जाए, तो उनमें फफूंदी लग जाएगी और वे बिकने लायक नहीं रहेंगी। मैं दुकान को तब के लिए तैयार करना चाहता था जब मेरे चाचा उसे दोबारा खोलने के लिए तैयार हों। मुझे पता था कि मोमोको भी यही चाहती।

काम से लौटते समय, मैंने उस चाबी का इस्तेमाल किया जो मेरे पास तब से थी जब मैं इस इमारत में रहता था, और किताबों की दुकान के पिछले दरवाजे से अंदर चला गया। क्योंकि वह पूरे एक महीने से बंद था, इसलिए हवा भारी और घुटन भरी थी। उसमें सीलन भरी फफूंद की गंध फैली हुई थी। अंधेरे में, मैंने अपने हाथों से टटोलकर स्विच ढूंढ निकाला। जैसे ही मैंने उसे चालू किया, फ्लोरोसेंट लाइटें झिलमिला उठीं और अंदर अचानक रोशनी हो गई। धूल के कारण जब मुझे छींक आई, तो उसकी आवाज पूरे कमरे में गूंज उठी।

सबसे पहले, मैंने सारी खिड़कियाँ खोल दीं और कमरे में हवा आने दी। फिर मैंने झाड़ू से फर्श साफ करने में समय लगाया, और फिर किताबों की अलमारियों और फर्श को कपड़े से अच्छी तरह पोंछा। तेज़ सफेद रोशनी में दुकान एकदम खाली-खाली लग रही थी, मानो ज़मीन के नीचे कोई गोदाम हो। उस कमरे में रहते ही मुझे इतना दुख होने लगा कि असहनीय हो गया। यहाँ तक कि रॉय, डोनट के आकार का तकिया, जिसे उसके मालिक ने इतने लंबे समय से नज़रअंदाज़ किया था, वह भी कहीं न कहीं अकेला सा लग रहा था।

यह देखकर मेरा दिल दुख से भर गया कि जिस जगह से मेरे चाचा को इतना प्यार था, जो इतने सारे लोगों के लिए मायने रखती थी, उसे अब ऐसे त्याग दिया गया है मानो उसकी अब कोई जरूरत ही न हो।

मैं ऊपर दूसरी मंजिल पर गई और मोमोको के गमलों में लगे पौधों को उसकी पानी देने वाली छड़ी से पानी दिया। कई दिनों तक पानी न मिलने के कारण वे सब मुरझा गए थे और अब दुबके हुए लग रहे थे। "माफ़ करना दोस्तों," मैंने धीरे से कहा और हर पौधे को अच्छी तरह पानी दिया।

जब मैं दुकान से निकला तो रात के नौ बज चुके थे। रात की हवा शुष्क थी और इतनी ठंडी थी कि मानो मेरी त्वचा को भेद रही हो। मैं सिहर उठा। अंधेरे में, मेरे द्वारा छोड़ी गई हवा इतनी सफेद दिख रही थी कि मैं चौंक गया।

दुनिया सर्दियों का स्वागत करने की कोशिश कर रही थी।

एक सीज़न के बाद दूसरा सीज़न शुरू हो जाता था। एक व्यक्ति की मृत्यु से इसमें कोई बदलाव नहीं आ सकता था। यह बात स्पष्ट होनी चाहिए थी, लेकिन अब यह घोर अन्याय जैसा लग रहा था।

मैंने पीछे मुड़कर किताबों की दुकान की ओर देखा और फुसफुसाते हुए कहा, "चिंता मत करो। मैं वापस आऊंगा।" फिर मैं वहां से चला गया।

“ताकाको, तुम सही कर रही हो।” वाडा फोन पर मुझे दिलासा दे रही थी।

हाल ही में, मैं हर समय उदास महसूस कर रही थी। हालाँकि मुझे पता था कि यह गलत है, फिर भी मैं खुद को वाडा पर निर्भर पाती थी।

लेकिन मेरी बात उसे समझ नहीं आई। मैं असमंजस में हूँ...

मैं वास्तव में क्या कर सकता था जिससे मेरे चाचा मोमोको के कहे अनुसार अपने जीवन में फिर से आगे बढ़ सकें?

“आप बस इतना ही कर सकते हैं। आपके चाचा ने उस व्यक्ति को खो दिया जो उनके लिए सबसे ज़्यादा मायने रखता था। शायद मुझे यह नहीं कहना चाहिए, लेकिन अगर मैं होता, और मुझे पता होता कि मैं मोमोको को फिर कभी नहीं देख पाऊंगा, तो शायद मैं भी सब कुछ छोड़ देता।”

मैंने खुद को ठीक उलटी स्थिति की कल्पना करते हुए पाया। मैंने बस एक पल के लिए ही कल्पना की, लेकिन इसने मेरे दिमाग में सब कुछ अंधेरा कर दिया। वह सही था; मुझे मोमोको की मौत का सचमुच दुख था, लेकिन यह मेरे चाचा के दुख के आगे कुछ भी नहीं था। मुझे इस बात का पछतावा हुआ कि मैंने अपने चाचा के घर पर उनसे बड़े ही सजग होकर कहा था कि मैं उनकी भावनाओं को थोड़ा-बहुत समझता हूँ। मेरे चाचा के लिए, मोमोको वही थी जो साकुनोसुके ओडा के लिए काज़ुए थी।

"मुझे लगता है कि मेरे चाचा के लिए, मोरिसाकी बुकशॉप उन सभी पलों का प्रतीक भी है जो उन्होंने मोमोको के साथ बिताए थे।"

किताबों की दुकान में अनगिनत यादें बसी हैं। मुझे याद आया कि मेरे चाचा ने मुझसे ये कहते समय कैसे चेहरे पर भाव दिखाए थे। बीस वर्षों की यादें, सुख-दुख की, उस जगह पर परत दर परत जमा होती चली गई थीं।

वाडा ने कहा, “अभी उसे वे यादें असहनीय लग रही होंगी। लेकिन एक दिन ऐसा आएगा जब वह जगह उसके लिए अनमोल हो जाएगी, ठीक इसलिए क्योंकि उसमें वे

सारी यादें बसी हैं। तब तक शायद आपको बस उस पर भरोसा रखना होगा और उसके तैयार होने का इंतजार करना होगा।”

अब मैं बस इतना ही कर सकता हूँ।

उसके बाद, मैं कुछ दिनों में एक बार दुकान पर जाने का समय निकाल लेता था। मैं बस वहाँ हवा आने देता, सफाई करता और यह देखता कि कहीं सामान में फफूंद तो नहीं लगी है। लेकिन इतना काफी था कि वह जब चाहे दुकान खोल सके।

ऐसी ही एक रात को टोमो मेरे साथ थी। सच कहूँ तो, रात में किताबों की दुकान में अकेले रहना मेरे लिए कभी-कभी मुश्किल हो जाता था; मुझे तरह-तरह की बातें याद आ जाती थीं। इसलिए, मुझे खुशी थी कि वह मेरे साथ थी।

साथ मिलकर काम करते हुए हमने आधे घंटे से भी कम समय में सफाई पूरी कर ली। टोमो इतनी उत्साहित थी कि उसने सुझाव दिया कि हम दूसरी मंजिल पर रखी किताबों के संग्रह को भी व्यवस्थित करने की कोशिश करें, लेकिन मैंने यह कहकर उसका विचार खारिज कर दिया कि हम इसे किसी और समय करेंगे, क्योंकि अगर हमने अभी शुरू किया तो हम आखिरी ट्रेन नहीं पकड़ पाएंगे।

तोमो के आने और मोमोको के अंतिम संस्कार में मदद करने के लिए मैं उनका बहुत आभारी था। मैं सचमुच उनका शुक्रगुजार था। मुझे लगा कि यह उन्हें एक बार फिर अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने का अच्छा मौका है।

हमेशा की तरह, वह बहुत ही विनम्र थी। "नहीं, नहीं, कृपया। कुछ नहीं हुआ," उसने कहा।

"लेकिन आपने मेरे लिए वाकई बहुत मेहनत की है," मैंने जोर देकर कहा और उन्हें बताया कि मैं उनका कितना आभारी हूं।

"जब मैं साल के अंत में वापस जाऊंगी, तो मुझे लगता है कि मैं अपनी बहन के पूर्व प्रेमी से फिर मिलूंगी," उसने अचानक कहा।

"क्या सच में?"

“हाँ, मैं उनसे ठीक से माफी माँगने जा रही हूँ। लगता है वो इतने समय से मेरे बारे में चिंतित हैं, फिर भी मैं उनसे बचती रही हूँ। शायद यह अतिशयोक्ति लगे, लेकिन मुझे लगता है कि मुझे सब कुछ ठीक करना होगा। मुझे लगता है कि एक बार ऐसा हो जाने पर, मुझे आगे का रास्ता नज़र आएगा।”

"ओह, मुझे लगता है कि यह बिल्कुल अद्भुत है।"

टोमो की इस उपलब्धि के बारे में सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। मैंने इसका तहे दिल से समर्थन किया।

"आप और ताकानो की बदौलत ही मैं इस मुकाम तक पहुंच पाया हूं।"

“नहीं, नहीं,” मैंने घबराते हुए कहा। “मैंने सच में कुछ नहीं किया।”

वह खिलखिलाकर हंस पड़ी।

“अब तो तुम ये बात कह रहे हो। हम दोनों बिल्कुल एक जैसे हैं। मैं आज यहाँ इसलिए नहीं आया हूँ कि तुम मुझे धन्यवाद दो। और यही बात तुम्हारे लिए भी लागू होती है। हम दोनों बस ऐसे ही हैं।”

फिर दिसंबर की शुरुआत में कुछ ऐसा हुआ, लगभग उसी समय जब मैंने देखा कि क्रिसमस के लिए पूरा पड़ोस जगमगाती रोशनी से सजा हुआ था।

उस रात, मैं अपनी रोज़ की दिनचर्या के अनुसार दुकान में हवा आने देने और साफ़-सफ़ाई करने के लिए फिर से गया। मेरा काम लगभग पूरा हो चुका था और मैंने खुद से कहा था कि अब घर जाने का समय हो गया है, लेकिन मैंने जाने की कोशिश नहीं की। पता नहीं क्यों, मुझे जाना मुश्किल लग रहा था। मैंने सोचा, चलो थोड़ी देर और रुक जाता हूँ। बिना किसी खास वजह के, मैं काउंटर पर अपनी हमेशा वाली जगह पर बैठ गया और दूर कहीं देखने लगा। हालाँकि मैंने हीटर चला दिया था, लेकिन खिड़कियाँ कुछ मिनट पहले तक खुली थीं, इसलिए दुकान के अंदर उतनी ही ठंड थी जितनी बाहर। मैंने अपने हाथों को आपस में रगड़ा और सोचने लगा कि गर्म होने में कितना समय लगेगा।

दीवार पर लगी घड़ी पर मेरी नज़र पड़ी तो लगभग दस बज रहे थे। मैंने सोचा, मुझे जल्दी निकल जाना चाहिए, लेकिन मेरा शरीर टस से मस नहीं हुआ। खिड़की के बाहर, एक चहल-पहल से भरा समूह सड़क पर जा रहा था, शायद वे साल के अंत की पार्टी से घर लौट रहे थे।

संयोगवश, मेरी नज़र काउंटर के नीचे बने कैबिनेट में रखी हिसाब-किताब की किताब पर पड़ी। हालाँकि हम इसे हिसाब-किताब की किताब कहते थे, लेकिन इसमें कुछ खास लिखा नहीं था। इसमें हम बेची गई किताबों और उनकी कीमत लिखते थे। मेरे चाचा जिस चमड़े की जिल्द वाली किताब का इस्तेमाल करते थे, वह सालों के इस्तेमाल से मोटी और घिसी-पिटी हो चुकी थी। यह किताब पतली थी और अपेक्षाकृत

नई थी। आखिर चल क्या रहा है? मैंने सोचा और उस हिसाब-किताब की किताब को बाहर निकाला जिसे किसी ने छिपाने की कोशिश की थी।

जब मैंने इसे खोला, तो मेरे मुंह से अचानक निकल आया, "ओह..." हर पन्ने पर घने अक्षरों में कुछ न कुछ लिखा हुआ था।

ये सब मोमोको की लिखी बातें थीं। ये पूरी तरह से डायरी तो नहीं थी, बस साधारण नोट्स थे, लेकिन उसमें तारीख और मौसम के साथ-साथ किताबों की दुकान में होने वाली घटनाओं का भी ज़िक्र था। ये बातें मोमोको के अचानक घर लौटने और किताबों की दुकान की दूसरी मंज़िल पर रहने के कुछ ही समय बाद से शुरू हुईं।

“सटोरू ने आज फिर किताबें बेचीं, वह अच्छे मूड में था।”

"श्री कुराडा जिस ओगई मोरी पुस्तक को चाहते हैं, उसे एक तरफ रख दें।"

"किताबों की गाड़ियां व्यवस्थित करना न भूलें!"

"बारिश की वजह से दोपहर से पहले कुछ भी नहीं बिक पाया। दिल टूट गया।"

“आज ताकाको की तबीयत कुछ ठीक नहीं लग रही? चिंता हो रही है।”

पहले कुछ पन्ने पढ़ने के बाद मैंने अचानक किताब बंद कर दी। मोमोको के कुछ विचार अभी भी इन पन्नों में मौजूद थे। मेरे चाचा और मेरे साथ बिताए उसके दिन इस किताब में अंकित थे। यह शायद पीढ़ियों तक पढ़ी जाने वाली कोई उत्कृष्ट कृति न हो, या किसी महान लेखक की रचना न हो, लेकिन मेरे चाचा और मेरे लिए यह अनमोल थी।

मुझे अपने चाचा से इसे तुरंत पढ़वाना था। यही सोचकर मैं अपनी कुर्सी से उठा, लेकिन तभी पीछे का दरवाजा ज़ोर से खुला और मैं चौंककर पीछे हट गया। जब मैंने देखा तो मेरे चाचा किसी तरह दरवाजे पर खड़े थे, ज़ोर-ज़ोर से सांस ले रहे थे। उनके चेहरे पर सदमे के भाव थे। लेकिन मुझे देखते ही उनका भाव निराशा में बदल गया।

“ओह, तुम हो, ताकाको,” उसने फीकी मुस्कान के साथ धीरे से कहा। “मैं खुद को वापस इसी मोहल्ले में किताबों की दुकानों के पास से गुजरते हुए पाया। तभी मैंने देखा कि दुकान में बत्तियाँ जल रही थीं...”

मुझे पूछने की ज़रूरत नहीं थी कि आगे क्या हुआ। मैं उनके चेहरे के हाव-भाव देखकर ही समझ गया था। मेरे चाचा ने खुद को यह यकीन दिला दिया था कि मोमोको अंदर है, जबकि ऐसा होने का कोई तार्किक कारण नहीं था। दूसरी ओर, मैं अपने चाचा के अचानक प्रकट होने से इतना स्तब्ध था कि मैं कुछ बोल ही नहीं पाया।

“ताकाको...?” मेरे चाचा हैरानी भरे भाव से मेरी ओर देख रहे थे।

मुझे लगातार यह महसूस हो रहा था कि यहाँ कुछ अजीब हो रहा है, कुछ ऐसा जिसे मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता। ज़रूर कोई दूसरी शक्ति काम कर रही है। समय बहुत ही अजीब था। पहले मुझे हिसाब-किताब की किताब में मोमोको की लिखावट मिली, और ठीक उसी समय जब मैं इसे अपने चाचा को दिखाना चाहता था, वे कमरे में घुस आए...

“तो, उम,” मैंने कहा, अब भी मैं बहुत भावुक महसूस कर रही थी। मैं अपने चाचा के सामने खड़ी हुई और हिसाब-किताब की किताब उन्हें दिखाते हुए बोली, “यह वही हिसाब-किताब की किताब है जिसमें मोमोको ने लिखा था।”

“मोमोको?” एक पल के लिए मेरे चाचा मेरी हाथों में रखी किताब को खाली निगाहों से देखते रहे, फिर उन्होंने धीरे से हाथ बढ़ाकर उसे ले लिया।

"शायद मुझे बैठ जाना चाहिए?"

मेरे चाचा रॉय पर बैठ गए और धीरे-धीरे हिसाब-किताब की किताब के पन्ने पलटने लगे। जैसे-जैसे वे हर हाथ से लिखी हुई पंक्ति को ध्यान से पढ़ते गए, अचानक उनके चेहरे पर मुस्कान आ गई। "उसने ये सब कब से शुरू किया?"

“मुझे पता है, है ना?”

आखिरकार हीटर चालू हो गया और कमरा गर्म होने लगा। मेरे चाचा पन्ने पलटते रहे, मानो मंत्रमुग्ध हों। मुझे कागज़ों की सरसराहट सुनाई दे रही थी। मैंने सोचा कि मैं चाय बना लूँ, लेकिन जैसे ही मैं चायदानी और कप लेने दूसरी मंज़िल पर गई, मैंने अपने चाचा को अचानक चिल्लाते हुए सुना, "आह!"

“क्या है?” मैंने शक भरी निगाहों से उसके कंधे के ऊपर से झाँका, फिर मैंने भी पूछा। किताब के आखिरी पन्ने पर एक लंबा पैराग्राफ था जो “साटोरू के लिए...” से शुरू होता था। उसने तारीख भी नोट कर ली थी: यह उसके बेहोश होने और एम्बुलेंस से अस्पताल ले जाने से दो दिन पहले की बात थी।

“यह...” मैंने कहा, और मेरे चाचा ने किताब से नज़र हटाए बिना चुपचाप सिर हिलाया। उनका हाथ थोड़ा कांप रहा था।

"उह, शायद मुझे थोड़ी देर के लिए बाहर जाना चाहिए?"

नहीं, कोई बात नहीं। यहीं रहो।

मैंने कहा, "समझ गया," और फिर मैं चुप हो गया।

मेरे चाचा ने कुछ देर तक उसकी लिखी हुई बातें पढ़ने के बाद, काफी देर तक छत की ओर देखते रहे। फिर वे सीधे खड़े हो गए और उसे धीरे-धीरे एक बार फिर पढ़ा। उस दौरान मैं बेचैनी से दुकान में इधर-उधर घूमता रहा। तभी अचानक मेरे चाचा ने बिना कुछ कहे मुझे हिसाब-किताब की किताब थमा दी, जिससे मैं चौंक गया।

“कोई बात नहीं। मुझे इसे पढ़ने की जरूरत नहीं है,” मैंने कहा।

“कोई बात नहीं। मैं चाहता हूँ कि तुम इसे लो।” वह सीधे मेरी ओर देख रहा था और किताब को मेरी ओर इस तरह बढ़ा रहा था मानो मुझे जल्दी से इसे लेने के लिए कह रहा हो।

मैं एक पल के लिए हिचकिचाया, लेकिन अंततः मैंने किताब ले ली।

सटोरू को,

इसे ढूंढने में आपको कितना समय लगेगा? अगर आप पहले ही अपने पैरों पर खड़े हो चुके हैं, तो इसे पढ़ने की कोई ज़रूरत नहीं है। ऐसे में, आप चाहें तो इसे कूड़ेदान में फेंक सकते हैं।

मैंने वसीयत लिखने के बारे में सोचा था, लेकिन मुझे यकीन है कि आप उसे तुरंत पढ़ लेते। यह व्यर्थ लगा, इसलिए मैंने आपके लिए यह लिखने का फैसला किया। तो, कृपया इसे वसीयत के विकल्प के रूप में पढ़ें।

दुर्भाग्यवश, मैं आपसे अधिक समय तक जीवित नहीं रह सका। लगता है यही मेरा भाग्य था। मुझे खेद है कि मुझे ही पहले जाना पड़ा।

तुम्हें छोड़कर जाना मेरे लिए बहुत दुखदायी है क्योंकि तुम बहुत भावुक हो जाते हो। यहाँ तक कि जब तुमने मुझे प्रपोज़ किया था, तब भी तुम रोए थे। तुमने कहा था, "तुम मेरे बिना ठीक रह सकती हो, लेकिन मैं तुम्हारे बिना कुछ भी नहीं।" उस समय मैं हँस पड़ी और बोली, "ये लड़का तो बिल्कुल ही भावुक है," लेकिन मैं सच में बहुत खुश थी। दुनिया में कोई और ऐसा नहीं हो सकता जो मुझे इतनी भावुक और अद्भुत बात कह सके। आखिर, मैं भी तुम्हारे बिना कुछ भी नहीं हूँगी।

उसके बाद, सुख-दुख में हमने साथ में कई सुखद पल बिताए। लेकिन मुझे पता है मैंने आपको बहुत तकलीफ दी। फिर भी, जब मैंने आपको छोड़ने का फैसला किया, तब भी आपने मुझे अपने पास रखा। और आपने मुझे वापस आने के लिए भी कहा। आप बेहद दयालु हैं। इतने दयालु कि आपने अंत तक मुझे जाने नहीं दिया। आपने कभी भी मेरा साथ नहीं छोड़ा।

मैंने तय किया है कि आज से लेकर अपनी मृत्यु तक, मैं हर दिन बिना किसी चूक के आपको धन्यवाद कहूंगा। आपने मेरे लिए जो कुछ भी किया है, उसके लिए यह मेरी कृतज्ञता को पूरी तरह व्यक्त करने के लिए पर्याप्त नहीं होगा, लेकिन अगर मैं आपको अपने ऋणी होने का एक छोटा सा हिस्सा भी दिखा सकूं, तो मुझे प्रसन्नता होगी।

उम्म... मेरी लेखन शैली दिन-ब-दिन और भी उलझी हुई होती जा रही है। क्या उलझी हुई लेखन शैली को ऐसे ही लिखते हैं? अगर मैं गलत हूँ, तो कृपया मुझ पर गुस्सा मत करना, ठीक है?

खैर, मेरी आपसे यही गुजारिश है: जिस तरह आपके साथ बिताए पल मेरी प्यारी यादों से भरे हैं, मैं नहीं चाहती कि आप मेरी यादों को दुख से भर दें, मैं चाहती हूं कि आप उन पलों की मस्ती और खुशियों को याद रखें। अगर आप हर दिन उसी पीड़ा में जी रहे हैं जो आपने मेरे अस्पताल में रहने के दौरान महसूस की थी, तो

आपको यह समझना होगा कि मैं ऐसा बिल्कुल नहीं चाहती थी। मैं चाहती हूं कि आप मुस्कुराएं। मुझे आपकी मुस्कान बहुत प्यारी है।

आपके आस-पास बहुत से लोग हैं जो आपका साथ देंगे। यह बात याद रखें और उनका सहारा लें। एक ऐसी शख्सियत है जिस पर मुझे सबसे ज्यादा भरोसा है और जिसे मैं सबसे ज्यादा प्यार करती हूं, और मैं उससे अपने लिए एक छोटा सा काम करने के लिए कहूंगी।

एक और बात।

मोरिसाकी बुकशॉप को मेरा प्रणाम कहना। हमारे साथ बिताए पलों का प्रमाण वहीं मौजूद है। मैं जानती हूँ कि आपको यह दुकान कितनी प्यारी है, और सच कहूँ तो मुझे भी यह बहुत प्यारी है। अगर मुमकिन होता, तो मैं चाहती कि आप वहाँ कुछ और समय तक काम करते। आखिर, दुकान में ही तो आप सबसे ज़्यादा चमकते हैं। बेशक, यह मेरी स्वार्थी इच्छा थी। लेकिन अगर ऐसा है, तो मुझे उम्मीद है कि इसके बाद आप और मोरिसाकी बुकशॉप साथ मिलकर आगे बढ़ेंगे।

कृपया दुकान का ध्यान रखें। यह हमारी साथ बिताई यादों से भरी है, और साथ ही कई अन्य लोगों की यादों से भी।

मोमोको मोरिसाकी

क्या वो कभी ईमानदारी से पेश नहीं आई? अगर उसे ये बात पता थी, तो कम से कम मुझे बता तो सकती थी। क्या उसे पहले से ही अंदाज़ा था कि मेरे चाचा दुकान बंद कर देंगे? या उसने इसे किसी तरह की गारंटी के तौर पर छोड़ा था? मुझे नहीं पता, लेकिन इतना ज़रूर पता था कि इस नोट में मेरे चाचा और मोरिसाकी बुकशॉप के लिए प्यार भरा था। और ये दुकान उसके जीवन के सारे विचारों, उम्मीदों और भावनाओं से भरी हुई थी।

और उसने मुझे उस व्यक्ति के रूप में संदर्भित किया जिस पर वह "सबसे अधिक भरोसा करती थी और प्यार करती थी।"

“वह सचमुच बहुत झगड़ालू थी।” जब मैंने हिसाब-किताब की किताब वापस दी, तो मेरे चाचा ने मुझे कड़वी मुस्कान दी। “ताकाको, उसने तुमसे क्या करने को कहा था? क्या वह काम तुम्हारे लिए बहुत मुश्किल था?”

“अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, चाचा जी,” मैंने कहा और मेरे चाचा ने आश्चर्य से चौड़ी आँखों से मेरी ओर देखा।

“क्या?” उसने कहा और मेरी तरफ देखकर मुस्कुराया।

मोमोको ने मुझसे कहा, 'मैं चाहती हूं कि वह पूरी तरह से शोक मनाए, और फिर आगे बढ़कर जीवन जीना जारी रखे।'

"नहीं, ताकाको, मैं..."

लेकिन मैंने अपने चाचा के जवाब देने के प्रयास को अनसुना करते हुए अपनी बात जारी रखी। “मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता। मैं तुम्हारे साथ रोने के अलावा कुछ नहीं कर सकता। इसलिए, अब तुम्हें अकेले शोक मनाने की ज़रूरत नहीं है।”

मेरे चाचा अपने हाथ में पकड़ी हिसाब-किताब की किताब को ऐसे घूर रहे थे मानो उसे रोकने की कोशिश कर रहे हों। वे काफी देर तक उसे टकटकी लगाकर देखते रहे। और फिर जैसे ही मुझे एहसास हुआ कि उनके होंठ हल्के से कांप रहे हैं, अचानक उन्होंने एक चीख मारी जो किसी जंगली जानवर की पुकार जैसी थी। उन्होंने अपनी आवाज़ इतनी ऊंची की मानो अपने अंदर की सारी हवा बाहर निकालकर उसे एक अनकही चीख में तब्दील करना चाहते हों। मैं उनके पास गया और उनकी पीठ सहलाई जो अब बहुत दुबली-पतली लग रही थी। जब मैंने अपने चाचा को देखा, तो मेरी आँखों में अचानक आंसू भर आए।

“जब मैं अस्पताल में उससे मिलने गया, तो वह हमेशा ‘धन्यवाद’ कहती थी। मैंने उसे ऐसा करने से मना किया क्योंकि यह असहज करने वाला था, लेकिन वह ऐसा करती रही... अंत तक भी...”

अब हम दोनों खुलकर सिसक रहे थे। हम ज़ोर-ज़ोर से रो रहे थे और बेकाबू होकर बिलख रहे थे। मेरे चाचा घुटनों के बल बैठ गए और अपना चेहरा ऐसे ढक लिया जैसे अभी वहीं गिर पड़ेंगे। मैं उनके बगल में बैठी रही और उनकी पीठ सहलाती रही, अपने चेहरे से टपकते आँसुओं को नज़रअंदाज़ करती रही जो ज़मीन पर गिर रहे थे।

देर रात तक किताबों की दुकान में हमारी सिसकियाँ गूँजती रहीं। कमरे में गूंजती हमारी आवाज़ों से हवा काँप उठी। ऐसा लग रहा था मानो दुकान भी हमारे साथ मोमोको की मौत का शोक मना रही हो। मानो वह भी दुखी हो।

हम तब तक रोते रहे जब तक हमें रोने की जरूरत थी।

हम चाहे जितना भी रोते, हमारे आंसू सूखते नहीं थे।

वह आवाज दुकान में हमेशा गूंजती रहेगी।

रात ने धीरे-धीरे हम सबको, मेरे चाचा को, और पूरे मोरिसाकी बुकशॉप को अपनी चपेट में ले लिया।

हैरानी की बात यह थी कि अगली शाम वाडा ने ही मुझे बताया कि मोरिसाकी बुकशॉप फिर से खुल गई है।

“मेरे पास एक अच्छी खबर है,” उन्होंने फोन पर असामान्य रूप से उत्साहित होकर कहा। “आज मेरा काम जल्दी खत्म हो गया, इसलिए मैं जिम्बोचो की किताबों की दुकानों पर गया। और फिर मैंने देखा, यकीन मानिए या नहीं, कि मोरिसाकी बुकशॉप में बत्तियाँ जल रही थीं,” उन्होंने लगभग बिना रुके कहा।

"क्या वह सही है?"

मैं अभी भी काम पर ही था, लेकिन जैसे ही मैं अपने ऑफिस के गलियारे में खड़ा हुआ, मैंने राहत की सांस ली।

“हूँ? तुम इतने खुश नहीं लग रहे? क्या तुमने यह बात अपने चाचा या साबू से सुन ली?”

“नहीं, मुझे बस इतना पता था कि सब ठीक हो जाएगा। आपके प्रयासों के लिए धन्यवाद, मेरे राजकुमार।”

कल रात के बाद मेरे चाचा पूरी तरह बदल गए, और अगले ही दिन उन्होंने दुकान खोल दी—बिल्कुल उनके स्वभाव के अनुसार। वहीं दूसरी ओर, मैं रोने के कारण सूजे हुए चेहरे के साथ काम पर जाकर खुद को शर्मिंदा कर बैठी।

“अरे सच में? खैर, अच्छी खबर है। मुझे इतनी खुशी हुई जैसे ये सब मेरे साथ हो रहा हो। मैं बहुत उत्साहित हो गई। और उससे भी अच्छी बात ये है कि जब मैं अंदर गई, तो तुम्हारे चाचा चाय लेकर आए और कुछ इस तरह कहा, ‘अंत्येष्टि में आने के लिए धन्यवाद।’”

"क्या सच में?"

“और फिर मैंने उन्हें बताया कि मैं एक उपन्यास लिख रही हूँ जिसकी कहानी किताबों की दुकान पर आधारित है, और उन्होंने मुझसे कहा कि जब यह पूरा हो जाए तो उन्हें पढ़ने को दे देना। उन्होंने कहा, ‘अगर यह खराब हुआ तो मैं इसकी धज्जियां उड़ा दूंगा।’”

“ज़रा रुकिए। यह तो हद से ज़्यादा हो रहा है,” मैंने हैरानी से कहा।

“नहीं, मैं खुश थी। मैं सचमुच बहुत खुश थी। चाहे कुछ भी हो, यह वाकई बहुत अच्छी खबर है, ताकाको।”

"यह है।"

उस रात जो कुछ हुआ, वह सपने जैसा लग रहा था। कैसे मैंने अचानक हिसाब-किताब की किताब देखी, और कैसे मेरे चाचा ठीक उसी समय प्रकट हुए...

शायद ये सब मोमोको की वजह से हुआ था। वो मेरे चाचा के शोक में डूबे होने को लेकर चिंतित थी... ये ख्याल मेरे मन में आया, फिर मैंने इसके बारे में न सोचने का फैसला किया। चाहे मैं कितना भी सोच लूँ, मुझे कभी पता नहीं चलेगा। ज़रूरी ये था कि हम दोनों आगे बढ़ रहे थे और ज़िंदगी जी रहे थे। बस इतना ही।

"मेरे राजकुमार, क्या आपको लगता है कि मुझे काम के बाद वहाँ जाना चाहिए?"

"हाँ, लेकिन तब तक आपके चाचा इस दुनिया से जा चुके होंगे।"

"हां, लेकिन फिर भी।"

"अच्छा, सेवूर के बारे में क्या ख्याल है?"

"ज़रूर।"

"समझ गया।"

खिड़की के बाहर, आकाश पूरी तरह से काला हो चुका था। लगभग पूर्ण चंद्रमा, जिसमें बस एक हल्का सा हिस्सा गायब था, चकाचौंध भरी रोशनी बिखेर रहा था।

16

आज मेरी छुट्टी है और मैं उसी जानी-पहचानी सड़क पर चल रही हूँ। धूप तो है, लेकिन फरवरी की ठंडी दोपहर है। आसमान हल्का नीला है और उस पर हल्के बादल तैर रहे हैं, मानो उन्हें जलरंग से चित्रित किया गया हो। मोमोको द्वारा दिए गए दस्तानों में मुझे गर्माहट महसूस हो रही है।

आज जिम्बोचो में किताबों की दुकानों वाले इलाके में घूमते हुए मुझे फिर से शांति का एहसास हो रहा है। सड़क पर चलते हुए लोग इत्मीनान से चल रहे हैं। मैं छोटी-छोटी इमारतों से घिरी एक गली से गुज़रता हूँ और एक छोटी सी गली में मुड़ जाता हूँ। और फिर, जैसा कि मुझे उम्मीद थी, किसी ने ज़ोर से मेरा नाम पुकारा।

“ताकाको!”

शर्मिंदगी के मारे मैंने अपनी चाल तेज़ कर दी, और जैसे ही मैं आवाज़ के स्रोत के पास पहुँचा, मैंने विरोध करना शुरू कर दिया। "मैंने तुम्हें पहले ही बताया था—कृपया सड़क के बीचोंबीच मेरा नाम मत पुकारो!"

"हालांकि यही कारण?"

"क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया कि यह शर्मनाक है?"

लेकिन चाहे मैं कितनी भी बार कहूँ, मेरे चाचा हमेशा ऐसी ही शरारत करते रहेंगे। फिर भी, उनकी आवाज़ सुनकर, मुझे कहीं न कहीं सुरक्षा का एहसास भी होता है। यह वो जगह है जहाँ मैं रहता हूँ। एक ऐसी जगह जहाँ मेरा स्वागत होता है। बस यही एहसास है।

“आप कैसे हैं?” मेरे चाचा ने अपने चेहरे पर बड़ी सी मुस्कान के साथ पूछा।

"मैं अच्छा हूँ।"

“ठीक है, फिर। ठंड लग गई ना? चलो, मैं हम सबके लिए गर्म चाय बनाता हूँ।”

"ठीक है।"

मेरे चाचा के दुकान पर दोबारा आने के बाद से मोरिसाकी बुकशॉप अपने तय समय पर खुली हुई है। यह दुकान पहले की तरह ही हर दिन सुबह से शाम तक खुली रहती है।

जब मेरे चाचा ने दुकान दोबारा खोली, तो उन्होंने लगभग रोते हुए मेरी तरफ देखा और कहा, “मैं क्या करूँ? एक महीने से ज़्यादा समय से दुकान बंद है, इसलिए कोई आमदनी नहीं हुई।” लेकिन उनकी शिकायत के बावजूद, दुकान खुलने के बाद कुछ समय तक वहाँ थोड़ी रौनक रही। अफवाहें सुनकर, नियमित ग्राहक—जिनमें साबू सबसे आगे थे—हर दिन एक के बाद एक आने लगे। इसी वजह से, दुकान खुलने के बाद मेरे चाचा का पहला ज़रूरी काम था हर ग्राहक से झुककर दुकान बंद करने के लिए माफ़ी माँगना। वे साफ़ तौर पर खुश थे, और उनमें से कोई भी नाराज़ नहीं था। मेरे चाचा अपने कई नियमित ग्राहकों द्वारा गर्मजोशी से स्वागत किए जाने से खुश लग रहे थे। उनके चेहरे के भाव देखकर मुझे समझ आ गया कि अब उनके बारे में चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है। बेशक, वह मोमोको की मौत के गम से कभी उबर नहीं पाएँगे। वह कभी पूरी तरह से ठीक नहीं हो पाएँगे। फिर भी मेरे चाचा ने आगे देखने का फैसला किया है। उन्होंने इस दुख को भी बाकी सब चीज़ों के साथ सहने और आगे बढ़ते रहने का फैसला किया है।

मेरी तरफ भी थोड़ा बदलाव आया है। वाडा और मेरी जल्द ही शादी होने वाली है। हम दोनों एक-दूसरे को अपने माता-पिता से मिलवा चुके हैं और अब नया घर ढूंढ रहे हैं। दरअसल, आज दुकान पर आने का एक कारण यही खुशखबरी देना भी था। हालांकि, मेरे चाचा अभी भी वाडा के प्रति कुछ खास सकारात्मक रवैया नहीं रखते और जब मैंने गलती से उनका नाम लिया, तो वे अचानक गंभीर भाषण देने लगे।

“इलेक्ट्रॉनिक शब्दकोशों के बढ़ते चलन और प्रकाशन उद्योग में आई मंदी के चलते पुरानी किताबों के कारोबार का क्या होगा?”

हे भगवान! ये आदमी तो इन सब बातों से आपको इतना बोर कर देगा कि आपकी जान ही निकल जाएगी। अगर मोमोको यहाँ होती, तो मुझे पूरा यकीन है कि वो भी यही कहती। ऐसा लग रहा है जैसे मोमोको यहीं हमारे साथ चाय पी रही हो।

“अच्छा, मेरे चाचा तो ऐसे ही हैं, है ना?” जैसे ही मैं मोमोको की तरफ मुड़ी और उसे एक व्यंग्यात्मक मुस्कान दी, मेरे चाचा ने मुंह खुला रखकर मेरी तरफ देखा और कहा, “हं? क्या?”

“कुछ नहीं,” मैं झूठ बोलकर मुस्कुराता हूँ। “अरे, याद है जब हम साथ में समर फेस्टिवल गए थे?”

“ग्रीष्मकालीन उत्सव?”

“हां, जब मैं बच्चा था। क्या हम दोनों एक साथ किसी कार्यक्रम में नहीं गए थे?”

"ओह, हाँ, मुझे लगता है कि यह सही है। हम संगीत सुन सकते थे, और आपको बस इसे देखने जाना था।"

“बिल्कुल सही। और हमने एक सुविधा स्टोर से आइसक्रीम खाई और घर चले गए।”

“आप सही कह रहे हैं। बस यही बात है। वह एक दुखद रात थी।” जो कुछ हुआ उसे याद करके वह थोड़ा हंसता है। “लेकिन आपको अचानक अब इसके बारे में क्यों याद आ रहा है?”

"जब मोमोको और मैं अस्पताल में बात कर रहे थे और उसने मुझसे उसके लिए कुछ करने को कहा, तो हमने उस रात के बारे में बात की।"

"सच में?"

उसने कहा कि काश वह भी हमारे साथ वहां होती।

"ओह।"

मैं उस दिन के बारे में बहुत सोचता हूं।

"आप कर?"

“हाँ, मैं करता हूँ। बस इतना ही कहना चाहता था।”

हम दोनों एक साथ चाय की चुस्की लेते हैं। मुझे उस पल मोमोको के चेहरे के भाव याद आते हैं। मेरे चाचा भी कुछ याद कर रहे होते हैं। उनके होंठों पर हल्की सी

मुस्कान आ जाती है।

हम दोनों कुछ पल शांति से उसके बारे में सोचते हुए बिता रहे थे, तभी दरवाज़ा धीरे से खुला। जब मैंने मुड़कर देखा, तो अनजाने में मेरे मुँह से "हम्म?" निकल गया। स्लाइडिंग दरवाज़े के खुलने से जो चेहरा दिखाई दिया, वह हमारे उस रहस्यमय नियमित ग्राहक का था: कागज़ की थैली लिए बूढ़ा आदमी। उसे आए हुए बहुत समय हो गया था।

बूढ़ा आदमी किताबों से भरा एक कागज़ का थैला लिए हुए है; अंदर आते समय उसके चेहरे पर वही भाव है, लेकिन मैं उसे ऐसे घूर रही हूँ जैसे उसे अपनी आँखों से ही खा जाना चाहती हूँ। ऐसा इसलिए क्योंकि उसने जो स्वेटर पहना है, वह उसका हमेशा वाला पुराना स्वेटर नहीं है। उसका रंग भले ही वही राख जैसा हो, लेकिन उसने जो स्वेटर पहना है, वह एक भड़कीला नकली स्वेटर है जिस पर एक बड़ा सा हिरण का सिर सिला हुआ है। और तो और, यह नया है और इसमें एक भी फटा हुआ छेद नहीं है।

इससे भी ज्यादा हैरानी की बात यह है कि जब बूढ़ा आदमी अलमारियों में से कुछ किताबें निकालकर रजिस्टर में ले आता है, तो वह मेरे चाचा की ओर मुड़कर उनसे बात करने लगता है। "यह क्या है? आपने सब कुछ फिर से व्यवस्थित कर दिया है, है ना?"

इस पूरे समय में इस व्यक्ति ने एक बार भी बोलने के लिए अपना मुंह नहीं खोला है, चाहे कुछ भी हो जाए।

मेरे चाचा भी थोड़े हैरान दिख रहे हैं।

“बहुत-बहुत धन्यवाद। हम कुछ समय के लिए बंद थे,” वह माफी मांगते हुए कहता है और अपने सिर के पीछे खुजली करता है।

“मुझे लगा कि आपकी दुकान बंद हो गई है,” बूढ़ा आदमी बेचैनी से करवटें बदलते हुए धीमी आवाज़ में बोला। मेरे चाचा के जवाब का इंतज़ार किए बिना, उसने अपनी किताबें उठाईं, उन्हें अपने फूले हुए कागज़ के थैले में ठूसा और अचानक दुकान से निकल गया।

मेरे चाचा और मैं भी दुकान से बाहर निकल जाते हैं, मानो उस बूढ़े आदमी के बहकावे में आकर, और उसके बगल में खड़े होकर उसे लड़खड़ाते कदमों से दूर जाते हुए देखते हैं।

अप्रत्याशित ग्राहक को देखकर मैं बहुत खुश हुआ और मैंने अपने चाचा से कहा, "वह तो स्वस्थ दिख रहे थे, है ना?"

बूढ़ा आदमी धीरे-धीरे दूर चला जाता है, अंततः आँखों से ओझल हो जाता है। बाहर ठंड है और ठंडी हवा चल रही है, लेकिन दोपहर की रोशनी में छोटी सी गली जगमगा रही है।

"वाह, यह अच्छा था।"

"जब आपकी दुकान बंद थी, तब वह आया होगा।"

"हां, मुझे इस बात का बुरा लग रहा है।"

“लेकिन नया स्वेटर है, है ना?”

“यह नया था।”

"लेकिन वो भड़कीला तो था, है ना?"

"यह भड़कीला था।"

"क्या आपको लगता है कि वह पुराना वाला पहन नहीं सकता था, इसलिए उसने अपने लिए एक नया खरीद लिया?"

“ताकाको?”

"माफ़ कीजिए, मुझे पता है। ज़्यादा पूछताछ मत कीजिए, ठीक है?"

“ठीक है।” मेरे चाचा ने ज़ोर से सिर हिलाया। वे ऐसे बोलने लगे मानो खुद को ही समझा रहे हों। “यह किताबों की दुकान है। हम किताबें बेचते हैं।” उनके चेहरे पर खुशी और थोड़ा गर्व झलक रहा था।

मेरे पसंदीदा लेखक ने अपनी एक किताब में कुछ इस तरह का वाक्य लिखा था: “लोग बहुत सी बातें भूल जाते हैं। वे भूलकर ही जीते हैं। फिर भी हमारे विचार वैसे ही बने रहते हैं, जैसे लहरें रेत पर निशान छोड़ जाती हैं।” दिल ही दिल में, मैं उम्मीद करता हूँ कि यह सच हो। इससे मुझे बहुत उम्मीद मिलती है।

दूर आसमान में एक विमान गुजरता है, और अपने पीछे एक ताजा बादल छोड़ जाता है।

“अरे चाचा जी, विमान के पीछे वो बादल दिख रहा है क्या?” मैंने आकाश की ओर इशारा किया, और मेरे चाचा जी ने ऊपर देखा और उसे ध्यान से देखा।

बादल लगातार लंबा होता गया, और उसने हल्के नीले आकाश में एक चमकदार सफेद रेखा खींच दी।

टोक्यो के पुराने किताबों की दुकानों वाले इलाके में हमारी यह छोटी सी किताबों की दुकान है। यह छोटी-छोटी कहानियों से भरी हुई है। और इसकी दीवारों में अनगिनत लोगों के विचार, आशाएं और भावनाएं समाहित हैं।

***** समाप्त *****

sjeet

अनुवादक का नोट

सातोशी यागिसावा के पिछले उपन्यास, 'मोरिसाकी बुकशॉप के दिन' में, ताकाको को अपनी ज़िंदगी बदलने वाली किताब बस आँखें बंद करके और अपने फ़्यूटन के पास रखी किताबों के ढेर में से बेतरतीब ढंग से एक किताब उठाकर मिल जाती है। इस सीक्वल की एक खासियत यह है कि यह किताबों की खोज के आनंद के बारे में एक उपन्यास है। सच तो यह है कि हमें हमेशा पता नहीं होता कि हम किसी खास किताब की तलाश क्यों कर रहे हैं। कभी-कभी, साबू की तरह, हम किसी ऐसे लेखक की ओर लौट रहे होते हैं जिन्हें हम बहुत पसंद करते हैं। कभी-कभी हम किसी दूसरी किताब में, जैसे इस किताब में, किसी शीर्षक का ज़िक्र देखते हैं और वह हमें एक अप्रत्यक्ष सुझाव की तरह आकर्षित करता है। हम किसी पुरानी किताबों की दुकान की अलमारियों में उस कविता संग्रह को खोजते हैं जिसे ताकाको सोने से पहले पढ़ने के लिए आदर्श मानती हैं: कोतारो ताकामूरा की 'द चिएको पोएम्स' (जिसके कई अनुवाद उपलब्ध हैं, लेकिन मैं जॉन जी. पीटर्स द्वारा अनुवादित 'ग्रीन इंटीजर' संस्करण और सोइची फुरुता द्वारा 1978 में प्रकाशित कोडान्शा संस्करण की अनुशंसा करूँगा, जिसमें चिएको की स्वयं की कलाकृतियों की प्रतिकृतियाँ शामिल हैं)। कभी-कभी एक किताब की तलाश में हमें दूसरी किताब मिल जाती है। हयाकेन उचिदा की 'ट्रेन ऑफ फूल्स' का अभी तक अनुवाद नहीं हुआ है, लेकिन पाठक उनकी कुछ गंभीर, स्वप्निल लघु कथाएँ राहेल डिनीटो के अनुवाद 'रियल्म ऑफ द डेड' में या उनके हल्के-फुल्के निबंध स्टीवन डी. कार्टर द्वारा संपादित और अनुवादित 'द कोलंबिया एंथोलॉजी ऑफ जापानी एसेज' में पा सकते हैं। या फिर, कई लोगों की तरह, वे अकीरा कुरोसावा की अंतिम फिल्म 'मदादायो' में उनके जीवन को दी गई भावपूर्ण श्रद्धांजलि के माध्यम से उन तक पहुँच सकते हैं।

चाहे हम हवाई अड्डे पर किताबों की दुकान पर किताबें देख रहे हों या किसी दुर्लभ प्रथम संस्करण की खोज कर रहे हों, हमारी प्रेरणा अक्सर रहस्यमय ही रहती है। किताबें हमारे सामने होती हैं; ऐसा लगता है जैसे वे ऐसी बातें जानती हैं जो हम नहीं जानते। एक पुराने मित्र ने मुझे बताया था कि कॉलेज में जुन'इचिरो तानिज़ाकी की 'इन प्रेज़ ऑफ़ शैडोज़' से रूबरू होने के बाद उनके जीवन की दिशा कैसे बदल गई। सटोरू वह किताब ताकाको के हाथों में देता है और उसे तुरंत पढ़ने के लिए कहता है। ताकाको के लिए, पढ़ना दुनिया के प्रति खुद को खोलने का एक तरीका बन जाता है, लेकिन उसकी सहेली तोमोको के लिए, साहित्य एक सांत्वना है, और कभी-कभी दुनिया से एकांतवास भी। शायद यही एक कारण है कि इस उपन्यास में उल्लिखित कई लेखक पतनशील साहित्य और बुराई-हा (बाउडेलेयर से लेकर दाज़ाई, साकागुची और ओडा तक) से जुड़े हुए हैं। तोमोको की अलमारियों पर फंतासी और विज्ञान कथा की किताबों के पास, ताकाको को बेल्जियम के लेखक जॉर्जेस रोडनबैक की किताबें मिलती हैं, जिनके उपन्यास ब्रुग्स-ला-मोर्ते का अनुवाद माइक मिशेल और विल स्टोन दोनों ने किया है और शहर के दृश्यों को नए रूप में प्रस्तुत किया है। इसमें उन्नीसवीं सदी के नादिया या वर्टिगो (सेबाल्ड और हिचकॉक दोनों की) जैसी मृत्यु-ग्रस्त वातावरण है।

उपन्यास के आगे के भाग में, ताकाको और ताकानो एक ऐसी किताब की तलाश में निकल पड़ते हैं जो असल में मौजूद ही नहीं है। 'द गोल्डन ड्रीम' एक ऐसी किताब है जो इस उपन्यास के भीतर ही मौजूद है और ऐसा लगता है मानो इसे इसी उपन्यास के लिए गढ़ा गया हो, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हमें इसकी तलाश नहीं करनी चाहिए। कौन जाने हमें और क्या मिल जाए!

हम अक्सर पढ़ने को एकांत क्रिया मानते हैं, लेकिन जिस किताब को आप पढ़ रहे हैं, वह अनेकों के परिश्रम और लगन के कारण ही आप तक पहुँची है। मैं सतोशी यागिसावा और अपनी संपादक सारा नेल्सन का आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे ये मनमोहक उपन्यास सौंपे, और सेत्सुको और साइमन विनचेस्टर का भी, जिन्होंने मुझे सारा से मिलवाया। मैं अपनी बहन मेलिसा ओज़ावा और ब्रूनो नवास्की का उनके धैर्यपूर्ण और अमूल्य सुझावों के लिए ऋणी हूँ, और अपने पिता युइची ओज़ावा और मित्र हिरोको ताबुची का भी, जिन्होंने हर कदम पर मेरी सहायता की। इस पुस्तक को कई महत्वपूर्ण क्षणों में मेरी एजेंट एंड्रिया ब्लाट (डब्ल्यूएमई) से भी सहयोग मिला, और हर चरण में

मेरी पत्नी निकोल का भी, जिन्होंने हर शब्द पढ़ा और जिन्हें हमेशा पता होता है कि मेरे पास कौन सी किताबें नहीं हैं। यह अनुवाद मेरे बेटों एमिल और इलियास को समर्पित है, जो अभी-अभी पढ़ने के आनंद का अनुभव कर रहे हैं।

सातोशी यागिसावा द्वारा भी।

मोरिसाकी बुकशॉप में बिताए दिन

Sign up for Bookperk and get e-book bargains, sneak peeks, special offers, and more—delivered straight to your inbox.

SIGN UP NOW

DON'T MISS
SATOSHI YAGISAWA'S
INTERNATIONALLY BESTSELLING DEBUT

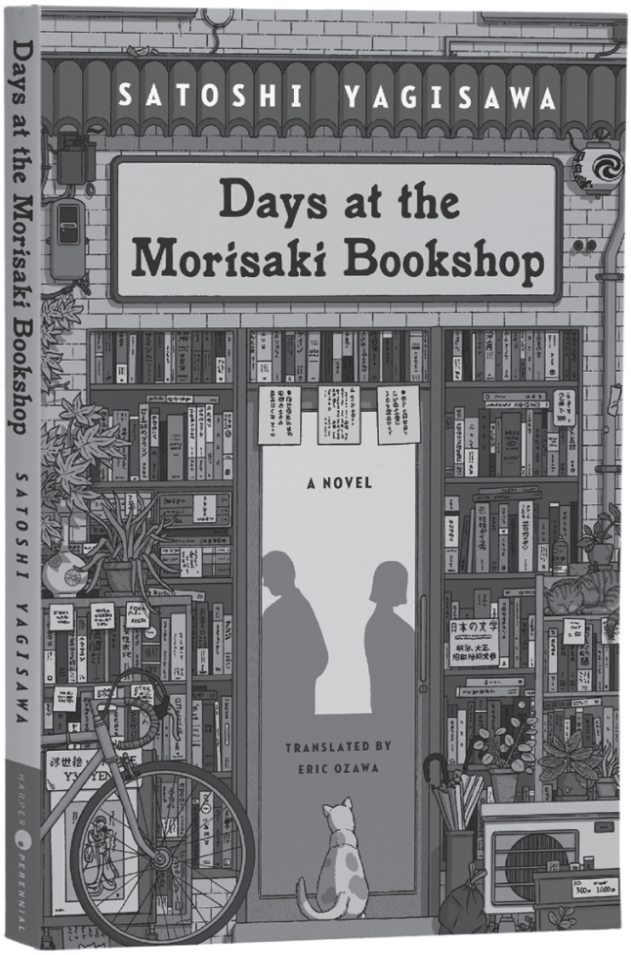

"A familiar romance about books and bookstores, told with heart and humor."

—Kirkus Reviews

HARPER PERENNIAL

DISCOVER GREAT AUTHORS, EXCLUSIVE OFFERS, AND MORE AT HC.COM.

कॉपीराइट

यह एक काल्पनिक रचना है। नाम, पात्र, स्थान और घटनाएँ लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से प्रयुक्त की गई हैं और इन्हें वास्तविक नहीं माना जाना चाहिए। किसी भी वास्तविक घटना, स्थान, संगठन या व्यक्ति (जीवित या मृत) से कोई भी समानता पूरी तरह से संयोगवश है।
मोरिसाकी बुकशॉप में और दिन। कॉपीराइट © 2011 सतोशी यागिसावा द्वारा। अंग्रेजी अनुवाद कॉपीराइट © 2024 एरिक ओजावा द्वारा। अंतर्राष्ट्रीय और पैन-अमेरिकन कॉपीराइट कन्वेंशनों के तहत सर्वाधिकार सुरक्षित। आवश्यक शुल्क के भुगतान पर, आपको इस ई-पुस्तक के पाठ को स्क्रीन पर देखने और पढ़ने का गैर-अनन्य, गैर-हस्तांतरणीय अधिकार प्रदान किया गया है। हार्परकॉलिन्स ई-बुक्स की स्पष्ट लिखित अनुमति के बिना, इस पाठ का कोई भी भाग पुनरुत्पादित, प्रसारित, डाउनलोड, डीकंपाइल, रिवर्स-इंजीनियर या किसी भी सूचना भंडारण और पुनर्प्राप्ति प्रणाली में, किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, चाहे इलेक्ट्रॉनिक हो या यांत्रिक, वर्तमान में ज्ञात हो या भविष्य में आविष्कार किया गया हो, संग्रहीत या उसमें डाला नहीं जा सकता है।
मूल रूप से शोगाकुकन इंक द्वारा 2011 में जापान में 続・森崎書店の日々 के रूप में प्रकाशित किया गया।
पहला अमेरिकी संस्करण
कवर आर्ट इल्या मिलस्टीन द्वारा बनाया गया है।
कवर डिजाइन मिलान बोज़िक द्वारा किया गया है।
डिजिटल संस्करण, जुलाई 2024, ISBN: 978-0-06-327872-1
संस्करण 05062024
प्रिंट ISBN: 978-0-06-327871-4

प्रकाशक के बारे में

ऑस्ट्रेलिया
हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स ऑस्ट्रेलिया प्राइवेट लिमिटेड
लेवल 13, 201 एलिजाबेथ स्ट्रीट
सिडनी, न्यू साउथ वेल्स 2000, ऑस्ट्रेलिया
www.harpercollins.com.au
कनाडा
हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स लिमिटेड
बे एडिलेड सेंटर, ईस्ट टॉवर
22 एडिलेड स्ट्रीट वेस्ट, 41वीं मंजिल
टोरंटो, ओंटारियो, M5H 4E3
www.harpercollins.ca
भारत

हार्परकॉलिन्स इंडिया
ए 75, सेक्टर 57
नोएडा
उत्तर प्रदेश 201 301
www.harpercollins.co.in
न्यूज़ीलैंड
हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स न्यूजीलैंड
यूनिट डी1, 63 अपोलो ड्राइव
रोजडेल 0632
ऑकलैंड, न्यूजीलैंड
www.harpercollins.co.nz
यूनाइटेड किंगडम
हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स लिमिटेड।
1 लंदन ब्रिज स्ट्रीट
लंदन SE1 9GF, यूके
www.harpercollins.co.uk
संयुक्त राज्य अमेरिका
हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स इंक.
195 ब्रॉडवे
न्यूयॉर्क, एनवाई 10007
www.harpercollins.com